CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवकविः अष्टयाम

तथा

जसराज सवाई का पन्द्रह-तिथि-विरह वर्णन

डा० रमानाथ त्रिपाठी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

- एक दुर्लभ पुरानी प्रति के आधार पर 'अष्टयाम' का सम्पादन
- देव के जीवनकाल पर नया प्रकाश
- एक और पोथी के आधार पर पन्द्रहतिथि-विरह-वर्णन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवकवि : अष्टयाम

तथा

जसराज सवाई का पन्द्रहतिथि-विरह-वर्णन

डॉ० रमानाथ त्रिपाठी
हिन्दी-विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

कुमार प्रकाशन
नई दिल्ली-१५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5310

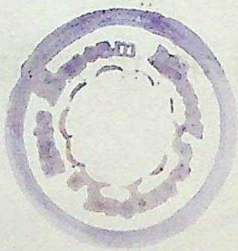

© लेखकाधीन

प्रकाशक : कुमार प्रकाशन
२०/३०, मोती नगर, नई दिल्ली-१५
दूरभाष : ५८२२८९
संस्करण : प्रथम, १९७८
मूल्य : पन्द्रह रुपये
मुद्रक : सतीश कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा
शशि प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-३२

DEV KAVI : ASHT YAM
& Jasraj Savai ka Pandrah-Tithi-Virah-Varnan
By Dr. RAMANATH TRIPATHI

Rs. 15.00

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परम श्रद्धेय

पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी

के

कर-कमलों में

सभक्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

डॉ० रमानाथ त्रिपाठी ने शुद्ध अध्ययन और अवगाहन के व्यसन के अधीन गाँव-गाँव घूमकर सैकड़ों हस्तलिखित पोथियाँ एकत्र कीं। इनमें एक देवकवि का अष्टयाम थी। इस पोथी की दो विशेषताएँ हैं—(१) अष्टयाम के रचनाकाल का उल्लेख १७१७ वि० होना और (२) इसके पाठ का अपेक्षाकृत शुद्ध होना। अभी तक विद्वान् यह मानते आये थे कि देवकवि का जन्म १७३० वि० में हुआ और १७४६ वि० में 'भावविलास' जैसा प्रौढ़ ग्रन्थ उन्होंने लिख डाला। डॉ० त्रिपाठी ने अपनी इस पोथी के आधार पर प्रवल तर्क द्वारा इस धारणा का खण्डन किया है। इस नयी तिथि के आविष्कार से अब विद्वानों को देवकृत ग्रन्थों के आनुमानिक रचनाकाल पर पुनः विचार करना होगा।

डॉ० त्रिपाठी ने यह भी प्रमाणित किया है कि इस पोथी का पाठ अन्य प्रकाशित अथवा अप्रकाशित पोथियों की तुलना में अधिक प्रामाणिक एवं शुद्ध है। डॉ० त्रिपाठी कई भाषाएँ जानते हैं, वे कई बोलियों से भी सुपरिचित हैं। अतः वे देव द्वारा प्रयुक्त शब्दों के सही अर्थ पकड़ने में अधिक समर्थ हैं, जबकि अन्य विद्वानों द्वारा किंचित् असंगत पाठ स्वीकार कर लिया जाना भी संभव है। उदाहरणतः—

'या जी की बहाऊ बानि देव कहा पाई री' (६-१४)

इस पंक्ति का 'कहा' शब्द अन्य प्रतियों में 'कहाँ' रूप में मुद्रित मिलता है। डॉ० त्रिपाठी ने 'कहा' का अर्थ क्या स्थिर किया है और उस अर्थ में वह प्रयोग उस अंचल में आज भी आम प्रचलित है। मूल का आशय है—यह तुमने क्या अवांछित आदत पायी है।

दान समै मनिमानिक फूलन कंचन चारु लता मनौ फूली। (२-४)

अन्यान्य मुद्रित प्रतियों में कंचन के स्थान पर चंपक कर दिया गया है। डॉ० त्रिपाठी के अनुसार अर्थ बनता है कि नायिका रूपी कंचनलता मणिमाणिक्य के फूलों से युक्त हुई। चंपकलता में मणि-माणिक्य के फूल कहाँ?

त्रिपाठी जी ने वर्षों के परिश्रम से केवल पोथी का शुद्ध पाठ ही प्रस्तुत नहीं किया है, अपितु उन्होंने देव की जीवनी-विषयक कुछ नूतन सामग्री भी उपलब्ध की है। वे देव के जिले (इटावा) के रहने वाले हैं, अतः वे कुछ अभिनव सूचना संकलित करने में समर्थ हो सके हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुस्तिका की एक और विशेषता यह है कि इसमें जसराज सवाई के पन्द्रह-तिथि विरह-वर्णन का समावेश है। डॉ० त्रिपाठी को इस लघु पुस्तिका की १७३२ वि० की प्रति प्राप्त हुई है। हिन्दी-जगत् में आशा है यह भी एक नयी खोज सिद्ध होगी।

शोध-क्षेत्र में प्रस्तुत पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण योगदान तो मानी ही जाएगी, नव-विवाहित रसिक दंपति के लिए यह अष्टयाम अतीव रोचकचर्या का विषय भी सिद्ध हो सकती है। **'डीठि बचाइ लचाइ कै लोचन भौंहें नचाइ कह्यो हंसि** हां हां—इस प्रकार केलि की स्वीकृति देने वाली शरमीली-रसीली नायिका किस युवा के चित्त को चुरा नहीं ले जा सकती ?

श्री त्रिपाठी की यह निरन्तर शोध-तत्परता निश्चय ही विद्वानों के निकट सराहनीय होगी।

दरियागंज, दिल्ली

—जैनेन्द्र कुमार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दो शब्द

बचपन से ही मेरे शौक निराले रहे हैं। मैंने स्वप्रयास से ही नौकायन, फोटोग्राफी, संगीत, धनुर्विद्या और अनेक कलाओं का ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा की। स्वयं ही अनेक भाषाएँ सीख लीं।

साहित्य के क्षेत्र में भी सभी विधाओं पर हाथ आजमाये, सर्जनात्मक और आलोचनात्मक दोनों ही क्षेत्रों में।

शौक चर्राया हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह का। बहुत दौड़-धूप और टंट-घंट के पश्चात् ज्योतिष, तंत्र, गणित, साहित्य आदि विषयों पर लगभग २५० पोथियों का संग्रह किया।

टंट-घंट करना मेरे स्वभाव में नहीं है, किन्तु पोथी-संग्रह के लिए करना पड़ा। मेरा गाँव (क्योंटरा, इटावा, उ० प्र०) संस्कृतज्ञ ब्राह्मणों का गाँव है। अधिकांश किसान शास्त्री-परीक्षा पास हैं। दिन में घास छीलते, हल चलाते हैं और सायंकाल रामलीला, धनुषयज्ञ आदि के अवसरों पर हिन्दी के साथ-साथ जोश आ जाने पर संस्कृत में संवाद बोलने लग जाते हैं; अथवा यों ही बैठे-बैठे संस्कृत में वाद-विवाद किया करते हैं।

इन पंडितों की गृहणियाँ पुराने बस्ते खोल-खोल पोथियों को पानी में गलाकर भले ही टोकरियाँ बनाती हुई ज्ञान-भण्डार के लोप का पराक्रम दिखाती रहें, किन्तु ये पोथियाँ देने को प्रस्तुत नहीं होते। माँगने पर ये चौकन्ने हो जाते हैं कि कहीं यह पोथियाँ पाकर धन-कुबेर न हो जाए। तब मैंने एक पेम्पलेट छपाकर बँटवाया कि पुरानी पोथियों के आस-पास उनके लेखकों की आत्माएं मँडराती हैं, जो इन्हें टोकरी बनाकर अथवा नदी में सिराकर नष्ट कर रहे हैं, उन्हें कोढ़ हो जाएगा। कुछ ने कोढ़ से डरकर और कुछ ने मेरे प्रति सद्भाव रखकर कुछ पोथियाँ दे दीं। आह, यह सद्बुद्धि मुझे पहले क्यों नहीं आयी। अब तो मैं टोकरियों को पोथी में परिणत नहीं कर सकता।

मेरे ही गाँव की एक विधवा बुढ़िया के घर पोथियों से भरे सात सन्दूक और मुहरों से भरे अनेक घड़े बताये गये। ग्राम-साथियों ने रात के समय छापा मारकर पोथियाँ चुराने का दुःसाहसी सुझाव दिया। मैंने उन्हें रोका कि हम पोथियाँ चुराकर उनका उद्धार करेंगे, किन्तु वह चोरी लगा देगी कि मेरी मुहरें उठा ले गये। अब वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बुढ़िया मर चुकी है, मुहरों वाली बात अफवाह थी, कोई सज्जन खोजने का प्रयास न करें। हाँ, पोथियों से भरे अनेक सन्दूक आज भी बुढ़िया के वंशधरों के पास हैं।

अभी भी बहुत-बहुत पोथियाँ जीर्ण-शीर्ण कपड़ों में बँधी-ठुसी सड़ रही हैं। अब मुझमें इनके संग्रह की शक्ति नहीं रह गयी है।

इन पोथियों का लाभ उठाने के लिए निश्चय किया कि पहले देवकवि के 'अष्टयाम' का सम्पादन किया जाए। पाठालोचन की वैज्ञानिक पद्धति आती नहीं थी। तो क्या हुआ ? अपने आप सीख लूँगा। अपने आप मैंने बहुत कुछ सीखा है।

बार-बार प्रति पढ़ी और प्रति की अशुद्धियाँ समझ में आने लगीं। बाद में ज्ञात हुआ कि इन्हें पाठ-विकृति, पाटलोप, पाठवृद्धि आदि कहते हैं। यह भी जाना कि पुष्पिका क्या होती है और इसका क्या महत्त्व होता है।

अष्टयाम की पोथी की पुष्पिका ने ही मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। पुष्पिका इस प्रकार है—

'इति श्री कवि देवदत्त विरचित अष्ठजामे सकल रात्रि रहस्य बरनने अष्टमो जामः समाप्तः। संवत् १७१७ मिती पौष सुदि-७ शुक्रे कौ पोथी बनी। लि० पांड इन्द्रमनि ने सं० १८४० कवित्त ६५ दोह ६७'

मुझे आश्चर्य हुआ कि अभी तक देवकवि की जन्मतिथि १७३० वि० बतायी जाती रही है और इसमें लिखा है कि पोथी १७१७ में बनी। पुष्पिका से मैं दो निष्कर्षों पर पहुँचा—

१. देवकवि का अब तक घोषित जन्म-संवत् सही नहीं है।

२. पोथी की यह प्रति संभवतः आदर्श पोथी को देखकर लिखी गयी। मूल-लेखक और लिपिकार दोनों के इटावा-वासी होने के कारण इसका पाठ भी अन्य उप-लब्ध प्रतियों की तुलना में शुद्ध है। इस प्रति के संवत् की जाँच-पड़ताल देव की जीवनी प्रस्तुत करते समय की जाएगी।

मेरे पास अष्टयाम की अन्य पोथियाँ नहीं थीं। भारत-जीवन-प्रेस से प्रकाशित प्रति के दर्शन हुए, मिलाकर देखा, यह छपी प्रति बहुत ही भ्रष्ट थी। १८९८ में प्रकाशित 'सुख-सागर-तरंग' में अष्टयाम के २६ छन्द संकलित हैं, इनके साथ भी मिलान किया। इससे भी विशेष सहायता नहीं मिली। मेरी पोथी का पाठ पर्याप्त शुद्ध था। कुछ स्थानों पर अवश्य ही अस्पष्टता थी। मैंने बन्धु डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित (पूना विश्व०) से सम्पर्क किया। उन्होंने अनुग्रहपूर्वक वहाँ की एक प्रति के आधार पर कुछ पाठभेद भेजे, जिनसे कुछ ही सहायता मिली।

कुछ मास के पश्चात् मुझे हि० सा० सम्मेलन की १८७४ वि० की प्रति की प्रतिलिपि प्राप्त हो गयी, जिससे भी थोड़ी ही सहायता मिली।

पं० विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र ने पत्र द्वारा सूचना दी कि 'अष्टयाम' की प्रतियाँ कब-कब की और कहाँ-कहाँ मिल सकती हैं। सबको पत्र लिखे, एक-दो को छोड़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
किसी ने उत्तर नहीं दिये। जिन्होंने उत्तर दिये, वे पोथी भेजने को तैयार नहीं थे। तारीफ़ की बात यह है कि लोग अथवा संस्था-संचालक मुझसे यह अपेक्षा करते थे कि मैं अपनी पोथियाँ उन्हें दे डालूँ अथवा उनके पास पठनार्थ बिना शर्त भेज दूँ, किन्तु वे अपनी प्रति भेजने के लिए या तो उलझन से भरी कड़ी शर्तें लगाते थे अथवा वहीं जाकर पढ़ने का नियम बताते थे।

फिर काम रुक गया। इस बीच डॉ० पुष्पारानी जायसवाल का ग्रन्थ 'देव-ग्रन्थावली' प्रकाशित हो गया। मैंने इसके अन्तर्गत 'अष्टयाम' का सम्पादित पाठ पढ़ा। पुष्पाजी के सम्पादित और मेरी पोथी के असम्पादित पाठ में पर्याप्त साम्य देखकर मुझे सुखद आश्चर्य हुआ। मेरी अनेक कठिनाइयाँ पुष्पाजी की पुस्तक से दूर हो गयीं। उन्होंने पद-टिप्पणियों में अनेक पोथियों के जो पाठभेद दिये हैं, उनसे मुझे अपनी पोथी की पाठ-पुष्टि अथवा पाठ-निर्धारण में सहायता मिली। यहाँ तक पहुँच जाने पर भी मेरी यह धारणा अखण्डित रही कि मेरी पोथी का पाठ अधिक शुद्ध है।

राजस्थान-प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान्, उदयपुर में सं० १८१६ की प्रति बतायी गयी। मैंने डॉ० जावलिया से अनुरोध कर इसकी भी प्रतिलिपि मँगा ली। यह प्रति अब तक की प्राप्त प्रतियों में सबसे पुरानी है, किन्तु इसका पाठ अशुद्ध है, यह हि० साहित्य-सम्मेलन वाली प्रति के वंश की जान पड़ती हैं। इसमें वर्तनी की भूलें, पाठ-लोप, पंक्ति-विपर्यय और पंक्तिलोप के दोष हैं। प्रतिलिपिकार बहुत प्रबुद्ध नहीं जान पड़ा। इसी संस्थान की एक और उक० प्रति के कुछ अंश डॉ० जावलिया से प्राप्त हुए।

मैंने सम्पादन के समय अपनी पोथी का पाठ ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करने की चेष्टा की है, मुझे जहाँ त्रुटियाँ जान पड़ीं, वहाँ अन्य प्रतियों की सहायता ली है।

इस पुस्तक पर जब मैंने कार्य आरम्भ किया था, तब मेरे इकलौते बेटे चि० **अजयरंजन** का जन्म भी नहीं हुआ था और आज वह इक्कीस वर्ष का है और एम० ए० हिन्दी द्वितीय-वर्ष का छात्र है। वह मुझे अष्टयाम की पोथी से जूझता देखकर प्रायः कुढ़ता रहा है और कभी-कभी यह जानने के लिए उत्सुक भी रहा है कि अन्ततः यह पोथी है क्या वस्तु ?

उसकी बढ़ती हुई उत्सुकता देखकर कुछ संकेत देकर देव-विषयक तथ्य-संग्रह करने में इसे जुटा दिया। इससे मेरा कार्य हल्का हुआ। 'अष्टयाम' के मूलपाठ-भाग को छोड़कर शेष में उसका विशेष सहयोग है। देवकवि से सम्बन्धित स्थान एवं व्यक्तियों की खोज में अत्यधिक दौड़-धूप करने तथा सर्दी लग जाने से वह बीमार पड़ गया था।

मेरा मुख्य कार्य रहा है विभिन्न भारतीय भाषाओं के रामकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन। मैं ही जानता हूँ कि विभिन्न भाषाएँ स्वप्रयास से सीखकर उनके मूल साहित्य का अध्ययन करते हुए पी० एच० डी० और डी० लिट्० के शोध-प्रबन्ध लिखने में मुझे कितना परिश्रम करना पड़ा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोग कहा करते हैं कि मैं साधना किया करता हूँ और मुझे भी अपने बारे में गलतफहमी हो गयी थी। एक अवसर पर यह गलतफहमी तोड़ दी गयी, जबकि महन्तों ने मुझसे पूछा—'हिन्दी-साहित्य को आपकी देन क्या है ? भारतीय भाषाओं के रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन तो कोई देन नहीं है।' सुनकर मैं आसमान से धरती पर आ गिरा। १५ वर्ष तक तन-मन की सुधि भुलाकर दांपत्य सम्बन्धों की उपेक्षा कर जो कमर-तोड़ परिश्रम करता रहा, भाषा और साहित्य के माध्यम से देश की भावात्मक एकता में योगदान करता रहा, वह कोई देन नहीं ? तो देन क्या होती है ? महन्तो ! तुम्हारी देन क्या है ?

१९५० ई० से पोस्टग्रेजुएट संस्थाओं में अध्यापन करते हुए वहीं का वहीं बना रहा, जहाँ ताजा एम० ए० पास छोकरा आरम्भ करता है। इतने साल का अध्यापन-अनुभव, दर्जन भाषाओं का ज्ञान और दर्जन से ऊपर ग्रन्थों का प्रकाशन जब कोई देन नहीं तो देन क्या है ? चाटुकारिता, दुम हिलाना, अश्रद्धेयों के तलुवे चाटना, जी-हुजूरी करना, लिखना-पढ़ना छोड़कर हुजूरों के दरबार में हाजिरी बजाना ?

इस गम को भुलाने के लिए भी अष्टयाम से मूँड़ मारता रहा। चारों ओर से मार खाकर मैं पुस्तकों के जगत् में लौट आता हूँ। पुस्तकों का खोल ओढ़कर घोंघा बन जाता हूँ, सबसे कटा हुआ, किन्तु आत्म-परितुष्ट।

कहा जा सकता है कि यह सब लिखने की क्या आवश्यकता थी ? मैं ही जानता हूँ किस यंत्रणा और छटपटाहट में मेरे दिन, मास और वर्ष पर वर्ष बीते हैं। क्या मैं थोड़ी-सी भी कड़वाहट उगल कर कुछ हल्का न हो लूँ ?

पोथियों के संग्रह में मुझे इन लोगों से सहायता मिली। सर्वश्री इच्छाराम पाण्डेय, बालमुकुन्द शुक्ल, रामसागर पाण्डेय, बालकृष्ण त्रिपाठी, पं० विश्वनाथ और रमाकान्त त्रिपाठी।

जिला इटावा के इन सज्जनों ने देव की जीवनी के विषय में महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दीं—सर्वश्री वकील श्यामप्रताप पाण्डेय, सुदामालाल, कृष्णमाधव चौधरी, कृपानारायण त्रिपाठी (ब्रजभाषा-कवि) और डा० चतुर्भुज द्विवेदी।

डॉ० आनन्द प्रकाश दीक्षित, डॉ० महेन्द्र कुमार, डॉ० ब्रजमोहन जावलिया और डॉ० बाबूलाल गोस्वामी ने मुझे विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की हैं। प्रकाशक चि० बलदेव ने भी काफी दौड़-धूप की है।

इन सबके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

पुस्तक की प्रस्तुति में मेरे कई मास और कई वर्ष तो बीते ही हैं, पर्याप्त धन भी लगा है। रायल्टी से प्राप्त धन इस सब की तुलना में नगण्य ही होगा। यदि यह पुस्तक देवकवि के ग्रन्थों के सही सम्पादन तथा उनके काल-निर्धारण में सहायक हो जाए तो भी मुझे लगेगा कि श्रम की कुछ तो सार्थकता है।

—रमानाथ त्रिपाठी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

		पृष्ठ-संख्या
१. प्रति-संकेत	...	१३
२. देवकवि का परिचय— जन्म-संवत्, १७१७ वि० में पोथी बनी, मृत्यु-संवत्, जन्मस्थल, वेशभूषा-व्यक्तित्व, देवकवि की वंशावली, देव के स्मृति-चिह्न ।	...	१७
३. अष्टयाम-परम्परा, अष्टयाम (देव)-विवरण	...	२८
४. देव के अष्टयाम की नायिका	...	३८
५. देव के अष्टयाम की उपेक्षा	...	४१
६. अष्टयाम-मूलपाठ	...	४६
७. सम्पादन-विधि	...	८०
८. छन्द-अनुक्रमणिका	...	८८
९. शब्दार्थ-कोश	...	९०
१०. सहायक ग्रन्थ-सूची	...	९३
११. परिशिष्ट—जसराज सवाई का पन्द्रहतिथि-विरह-वर्णन	...	९५
चित्र—अष्टयाम की पोथी का अन्तिम पृष्ठ	...	१५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रति-संकेत

क्यों— आकार २३.५ × १३.८ से० मी०, छह पत्र (ग्यारह पृष्ठ), पंक्ति प्रति पत्र १७ से २० तक (अन्तिम पृष्ठ पर १६)
अन्तिम पुष्पिका — इति श्री कवि देवदत्त विरचित अष्ठ जामे सकल-रात्रि रहस्य वरनने अष्ठमो जामः समाप्तः संवत् १७१७ मिती पौष सुदि ७ शुक्रे कौ पोथी बनी लि० पाँडे इन्द्रमनि ने संवत १८४० ।
(क्योंटरा ग्राम (इटावा) से प्राप्त)

उ०— राजस्थान प्राच्यविद्या-प्रतिष्ठान, शा० का० उदयपुर, ग्रन्थांक—६०/१८८०—पत्रांक ५-२० । आकार २६.५ × १५.५ से० मी० । पंक्ति प्रति पत्र ११ । प्रथम ५ पत्रों में विविध कवियों द्वारा रचित नेत्र-वर्णन विषयक कवित्त । अन्तिम पुष्पिका—इति श्री कवि देव कृत ।। अष्ट जांम संपूर्णम् ।। संवत् १८१६ वृषें ज्येष्ट सूदि १३ भौमे श्रीरस्तु ।।

उ क०— संस्था उपर्युक्त, ग्रन्थांक २२१/२०४२ । आकार ११·५ वर्ग से० मी० । पंक्ति प्रति पत्र ११, अक्षर प्रति पंक्ति २० । अन्तिम पुष्पिका—इति श्री अष्ट जामे कवि देवदत्त कृते अष्ट जाम मध्ये द्वात्रिंशत् घटिकानां सकल विभेद विलासः समाप्तः भादो वदि ८ भौमे संवत् १८८८ ।

सा०— हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की प्रति । अन्तिम पुष्पिका—ईती श्री कवि देव क्रत अष्ट जांम संपुरण ।। समाप्त ।। मीती फागण वदी १३ संवत १८७४ का साल मध्यै मुकाम अलवर गढ लीषी हीगन षा की लीषायत कवर रामवकस जी वाचै सुणै ।। सोभवंत ।।

पू०— पूना-विश्वविद्यालय की खंडित प्रति ।

सुखप्र०— १८९८ ई० में श्री बालदत्त मिश्र द्वारा सम्पादित, सुखसागर-तरंग की मुद्रित प्रति ।

सुखद्वि०— १९७४ ई० में डॉ० पुष्पारानी जायसवाल द्वारा सम्पादित देव-ग्रन्थावली (१) में संकलित 'सुखसागर-तरंग' ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भामु०— १९४९ संवत् में श्री रामचन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित, भारत जीवन प्रेस की मुद्रित प्रति।

पुमु०— १९७४ में डॉ० पुष्पारानी जायसवाल द्वारा सम्पादित, देव-ग्रन्थावली (१) में संकलित 'अष्टयाम'।

निम्न प्रतियों का विशेष परिचय डॉ० पुष्पा जी के ग्रन्थ में उपलब्ध है।

ना०— १८१८ वि०

का०— १८७६ वि०

काअ०— लगभग १८७६ वि०

कामु०— मुद्रित

गं०— १९४२

हि०— १८७७

नाअ०— १८९९

नाआ०— ...

नाइ०— खडित, पुरानी

नाउ०— १८७७ वि०

म०— १८९२ वि०

गंअ०— १९४२ वि०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[illegible] नीतिमर्जात [illegible] ८ कवित्त बाहनविधाए बाह जघनज
घनाम कहे छारी नाहनाहि गयो चोहे पुरिवे अंगरि उछरि अछरि घुरिघुरि छीनेनार वारगे विषुर देवहारगए नुविके
छतिआदु बावेकरपि बेपिएके अधर सोरसनिरा फनारिसार दु वेउचिके केरिफेरिजेहोकहिनीके नेकरे होकहिवेहि
उरिउरिरंगुर योरविके १० [illegible] नीभषरीमिसिधारकीकरतसरसास्मार उपजावतरा परिहासरसमो चसको रविवार
११ कवित्त ईपति कोलिकरीविपरीतसु आपनी आपनीवानिविभूसे रंगभरीअतिभारीयोभाउतीभाउतीकोरस्वारनिर
से खेजरु लहनाकोसे आरपारं हसेकरिमोरिपहले मोरकीवारवसाएकछुनपिस्यारुसरीयेरीसारुके हसे १२ सेवा
रेरेनिजरुपरीजितातिहातप्रभाव बचनचतुरीकरतप्रियसनिपियुजियपछितात १३ कवित्त केपहकोकुकराबहकुहके
[illegible] कहुकाहुहनीहे [illegible] लिएहो [illegible] कोतिकहेतदिषाधनीहे [illegible] चाकरचोरकिपाहरस्वानादिसही
सिवाकिधोपहुहफलेहे सोरोपेश्रीवनस्यापधीदुनेनेनउपारिरोरिनिघनीहे १४ दोहा आरलउदीतरनीतरनरो
[illegible] कहुकोधकहुईरा कहुकविरआधीन १५ कवित्त वाचकहोभपोवितरीतोचितात
चहुदिसिवाहोनोरी हेगहिनछपाकाकीछविजामिनिजोहनेनो जमजाची वोलतवरीविहंगमरेवसु
सातिनकुपामंपतिमांची लपहुपियोजुवियोपिनुकोसुलियोमुहिपोपुषु लालुविशारिनिप्राची १६ दोहा
आरुपहाचोसाहिपरीवानिकहीकोरेव वहतसुमरमनुभाकेजेपहाधाराकेतव १७ [illegible] जेजेश्रीराधारमतजेजे राम
जयहाधा श्रीवृजचंदअनंतनिधिजेजेनंदकुमार १८ [illegible] कविरेवरसविरचितेअनु [illegible] ६
[illegible] जाम: समाप्त: संवत १७११ मितीपोष सुदि ७ गुरुके कोपोथीनी [illegible] पोंडुरंदुमानिनेसवत १८४०
कवित्त ६५ दोहा ६७ [illegible] ॥१५॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुद्धि-पत्र

(तारक-चिह्नित संख्याएँ फुटनोट की हैं।)

पृष्ठ	पंक्ति	शुद्ध
३९	५	उसकी
	६	रूप
४०	१७	दृगकोर
४२	२९	दंपति
४३	८	(सुखसागर-तरंग)
४५	२१	न किसी
४९	२	ननदै
५१	१२	बोलि
५५	६	सेजतें
	६*	मूरति
५७	१५	जुगनून
५९	२	गोरी
	६*	तिलोछी
६०	१०	मंद
६३	१०	सौहैं
६४	६*	मूँदि
६५	फोल्यो	अष्टयाम
७०	१०*	खेल
७१	१३	दंपती
७२	६*	६-मरत
	१३*	उकासी
७३	२२	फूलि
	७*	झुकि झुकि
७६	२*	ससांम—उ०
	३*	लागै—उ०
७८	६*	खिसाइ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवकवि का जीवन-परिचय

जन्म-संवत्

देव के जीवन-काल को संवत् १७३० और १८२४-२५ के मध्य बाँधने का प्रयास किया गया है। इसकी स्थापना के लिए औरंगजेब के पुत्र आजमशाह और पिलानी के अकबर अली खाँ के ऐतिहासिक काल का अवलम्ब लिया गया है।

देव कवि ने भाव-विलास में लिखा है—

सुभ सत्रह सै छियालिस चढ़त सोरही बर्ष।
कढ़ी हर्ष मुख देवता भावविलास सहर्ष॥
दिल्लीपति अवरंग के आजिमशाहि सपूत।
सुन्यो सराह्यो ग्रंथ यह अष्टयाम संयूत॥

इसका अर्थ लगाया गया कि संवत् १७४६ में जब 'भाव-विलास' की रचना की गयी, तब देवकवि १६ वर्ष के थे, इसमें १६ वर्ष निकाल दें तो उनका जन्म—संवत् १७३० वि० हुआ। १६ वर्ष की अवस्था तक उन्होंने भाव-विलास और अष्टयाम की रचना कर ली थी; इन्होंने ये दोनों ग्रन्थ आजिमशाह[1] को सुनाये और उनसे प्रशंसित हुए।

पहली बात तो यह है कि चढ़त सोलहवीं वर्ष का अर्थ हुआ कि देवकवि पूरे १५ वर्ष के हुए, अर्थात् उनका जन्म—संवत् १७४६—१५=१७३१ वि० था। आश्चर्य है कि एक बालक ने १५ वर्ष की आयु में दो-दो ग्रन्थों की रचना कर डाली। इस किशोर वय में वह अष्टयामी केलि-विलास भी सीख गया। इसके अतिरिक्त वह आजिमशाह से भेंट करने इटावा से दिल्ली अथवा दक्षिण के किसी प्रदेश में पहुँच गया और उन्हें केवल सुनाकर और सराहना लेकर लौट आया।

डॉ० नगेन्द्र भी देव का जन्म-संवत् १७३० वि० ही मानकर एक शंका प्रकट करते हैं—

---

१. यह औरंगजेब का तृतीय पुत्र इस समय प्रायः ३६ वर्ष का बताया गया है। संवत् १७६४ में औरगजेब अपने बड़े पुत्र की ओर कृपालु हुआ। सं० १७६४ में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् बड़े भाई से युद्ध करता हुआ आजमशाह मारा गया, पृ० २४९-५०, देव और बिहारी—श्री कृष्णबिहारी मिश्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"……संवत् १७४६ से लेकर अपनी मृत्यु-पर्यन्त आजमशाह का जीवन अस्थिर ही था। पहले वह पिता का स्नेहभाजन होने के कारण उसकी ओर से लड़ता रहा, फिर उसके सन्देह का शिकार रहा।…आजमशाह केवल आश्रयदाता ही नहीं था, वह उस युग का साहित्य-पारखी भी था।…इसीलिए तो उदीयमान कवि देव उसकी सराहना को एक बड़े प्रमाणपत्र के रूप में उपस्थित करते हैं। गुणी और गुणज्ञ का यह साक्षात्कार दिल्ली में ही हुआ होगा। (श्रीकृष्ण बिहारी मिश्र यह साक्षात्कार दक्षिण में मानते हैं, इसी का खंडन नगेन्द्र जी कर रहे हैं।)[1] यह ठीक है कि आजमशाह इन दिनों दक्षिण में पिता के साथ युद्ध-संचालन में भाग ले रहा था, फिर भी देव का १६ वर्ष की अवस्था में इटावे से दक्षिण पहुँचना बहुत संगत नहीं जँचता। बीच में कुछ समय के लिए जब युवराज दिल्ली आया होगा, तभी देव उसकी सेवा में उपस्थित हुए होंगे।"[2]

डॉ० नगेन्द्र को सन्देह है कि १६ वर्ष का बालक सुदूर दक्षिण कैसे पहुँचा होगा। संगति बिठालने के लिए उन्होंने लिखा है कि जब युवराज कुछ समय के लिए दिल्ली आया होगा, तभी कवि ने भेंट की होगी।

डॉ० नगेन्द्र के इसी सन्देह के आधार पर क्या ऐसा नहीं सोचा जा सकता कि यदि देवकवि की भेंट आजमशाह से हुई थी तो क्या १७४६ वि० के पूर्व नहीं हो सकती, जबकि वे दिल्ली में ही थे और उन्हें दक्षिण की ओर नहीं जाना पड़ा था, तथा वे अस्त-व्यस्त स्थिति में भी नहीं थे। इसी प्रकार क्या कवि की आयु १५ या १६ वर्ष से अधिक की नहीं हो सकती ?

अभी तक उपर्युक्त दोहों की प्रामाणिकता पर किसी को सन्देह नहीं था, इन पर विश्वास कर ही निर्णय लिये जाते रहे थे। डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय ने खोज की कि उपर्युक्त दोहे भाव-विलास की इन तीन प्रतियों में हैं—१. हिन्दुस्तानी एकेडमी की प्रति (सं० १९७७), २. भारत-जीवन-प्रेस संस्करण (संवत् ज्ञात नहीं) और ३. साहित्य-सम्मेलन प्रति (सं० १८७१)। डॉ० मालवीय लिखते हैं—

'परन्तु संवत् १८५७ की का० प्रति (काशिराज सरस्वती भंडार) तथा इतनी ही प्राचीन इंडिया आफिस लाइब्रेरी की इ० प्रति में उपर्युक्त दोहे नहीं मिलते। इन प्रतियों में इन दोहों के स्थान पर निम्नलिखित तीन दोहे हैं—

अपनी बुद्धि समान मैं कह्यो कछू निरधार।
ताते मो पर करि कृपा लैहैं सुमति सुधार॥ ७८

---

१. आजमशाह उस समय अपने पिता के साथ शाही लश्कर में था, और दक्षिण देश में युद्ध-संचालन के काम में पिता का सहायक था, इसलिए अधिक संभावना यही दीख पड़ती है कि साक्षात्कार दक्षिण देश में ही कहीं हुआ होगा। इसी समय शिवाजी के पुत्र शंभाजी का वध हुआ था। पृ० २५०, देव और बिहारी—श्री कृष्ण बिहारी मिश्र।

२. डॉ० नगेन्द्र, देव और उनकी कविता, पृ० २१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

या साहित्य समुद्र को बड़ेन न पायो पार।
हमसे ओछे कविन की तहाँ कहाँ आकार ।। ७९
द्यौसरिया कवि देव को नगर इटाए बास।
जोवन नवल सुभाव वर कीनो भावविलास ।। ८०[1]

इसका अर्थ है कि १७४६ वि० में १६ वर्ष की अवस्था में दोनों ग्रन्थों की रचना बताने वाले दोहे प्रक्षिप्त हैं।

१७१७ वि० में पोथी बनी

मुझे प्राप्त देवकवि के अष्टयाम की भूमिका में लिखा है—

'इति श्री कवि देवदत्त विरचित अष्ठजामे सकल रात्रि रहस्य वरनने अष्टमो जामः समाप्तः। संवत् १७१७ मिती पौष सुदि ७ शुक्रे कौ पोथी बनी। लि० पांडे इन्द्रमनि ने सं० १८४० कवित्त ६५ दोह ६७'।

स्पष्ट है कि देवकवि ने अष्टयाम की रचना सं० १७१७ में की थी और पांडे इन्द्रमनि ने इसकी प्रतिलिपि सं० १८४० में तैयार की। ये पांडे मेरे गाँव क्योंटरा, जि० इटावा के ही प्रतीत होते हैं। पोथी मुझे अपने ही गाँव में मिली है।

संवत् १७१७ में एक गड़बड़ थी। इसकी दहाई का १ इस प्रकार लिखा गया है कि उसे ७ भी पढ़ा जा सकता है। वस्तुतः इकाई के ७ की नोंक दहाई के १ को छूती हुई ऊपर को उठ गयी तथा समय बीतने पर बीच में कुछ मिट गयी। यदि मैं काली स्याही से केश बराबर नोंक बढ़ा देता तो १७१७ के स्पष्ट पढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होती। पुष्पिका वाले पृष्ठ का चित्र विद्वानों के अवलोकनार्थ मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मैंने दोनों तिथियों की सूचना डॉ० माताप्रसाद गुप्त को लिख भेजी, उनका उत्तर इस प्रकार है—

'···गणना इन प्रकार है—
सं० १७१७ पौष सुदि ७ : शुक्रवार
सं० १७७७ पौष सुदि ७ : रविवार
इसलिए **सं० १७१७ ही ठीक तिथि** होनी चाहिए।'

मैंने स्वयं बन्धुवर डॉ० सत्यदेव चौधरी की सहायता से 'ऐतिहासिक तिथि पत्रक'[2] से कुछ तिथियों की जाँच की।

१७१७ वि० पौष सुदि ७ शुक्र
१७३७ वि० पौष सुदि ७ शनिवार
१७७७ वि० पौष सुदि ७ रविवार

---

१. डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय—देव-ग्रन्थावली (१), पृ० ५३, ५४
२. श्री जगदीशसिंह गहलौत—ऐतिसासिक तिथि-पत्रक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैंने उपर्युक्त तीन संवतों की गणना इसलिए की कि दहाई के एक को एक तीन या सात ही पढ़ा जा सकता है। मैंने लिपिकाल के सं० १८४० के साथ इसी तिथि के दिन का पता लगाया तो मंगलवार की उपलब्धि हुई।

मेरा निष्कर्ष है कि देवकवि ने अष्टयाम की रचना सं० १७१७ **पौष शुक्ल सप्तमी शुक्रवार,** तदनुसार २८ **दिसम्बर,** १६६० ई० में की थी। उस समय उनकी आयु कम से कम १७-१८ वर्ष की होनी ही चाहिए। अतः उनका जन्म-संवत् १६९९ अथवा मोटे रूप में १७०० माना जा सकता है।

मृत्यु-संवत्

सं० १७१७ को अष्टयाम का रचनाकाल मान लेने पर एक अन्य कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। अभी तक विद्वान् यह मानते आये हैं कि देव ने अपना अन्तिम ग्रन्थ – 'सुख-सागर-तरंग' (जो कि एक संग्रह-ग्रन्थ है) पिलानी के अली अकबर खाँ को समर्पित किया था। खाँ साहब का आदिम युग सं० १८२४ बताया गया।[1] देवकवि इस समय तक तो जीवित थे ही आगे भी रह सकते हैं। सं० १७३० में उनका जन्म मान लेने पर उनकी पुर्णायु ९४ वर्ष का औचित्य सिद्ध हो जाता है, किन्तु सं० १७१७ लिपिकाल के आधार पर वे लगभग सवा सौ वर्ष की आयु भोगते दिखायी देते हैं, जो कि असम्भव है।

असम्भव हो सकता है यदि यह मानकर चला जाए कि सुख-सागर-तरंग १८२४ वि० में ही भेंट की गयी। देवकवि कुशलसिंह, भोगीलाल, उद्योतसिंह, सुजान-मणि आदि कई छोटे-छोटे राजाओं और जमींदारों से भेंट करते रहे और ग्रन्थ अर्पित करते रहे। यह क्यों न माना जाए कि वे खाँ साहब के सत्तारूढ़ (१८२४ वि०) होने के पहले ही मिले थे। खाँ साहब के जीवनकाल की जाँच मैं नहीं कर सका हूँ।

यहाँ यह भी विचारणीय है कि मिश्र-बन्धुओं ने देव का मृत्यु-संवत् १८०२ माना है। देव के वंशज स्व० मातादीन दुबे और रत्नाकर जी भी यही संवत् स्वीकार करते हैं।

जन्म-स्थल

देव का सम्बन्ध इटावा और कुसमरा (मैनपुरी) दोनों स्थानों से रहा; दोनों ही स्थानों में इनके वंशज रहते हैं और अपने-अपने स्थानों को देवकवि की जन्मभूमि मानते हैं।

श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर ने कुसमरा-स्थित (स्व०) मातादीन दुबे से भेंट कर देव के विषय में लिखा था—

'देवजू दुबे इटावा के दिउसरिया कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता बिहारी लाल जी इटावा से कुसमरा जिला मैनपुरी में आकर रहे। देवजू का जन्म १६७३ ई०

---

१. मिश्रबन्धु—देवसुधा, पृ० ५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१७३० वि०) में कुसमरा में हुआ था और सन् १७४५ ई० (१८०२ वि०) में स्वर्गवास होना अनुमान सिद्ध है।'[1]

मिश्र-बन्धुओं ने इन्हें स्पष्ट ही पंसारीटोला—बलालपुरा शहर इटावा का निवासी बताया है।[2] इनके अतिरिक्त सर्वश्री रामचन्द्र शुक्ल, रसाल, सूर्यकान्त शास्त्री, श्यामसुन्दर दास, बालदत्त मिश्र, कृष्णबिहारी मिश्र, लक्ष्मीनिधि चतुर्वेदी, गोकुलचन्द्र दीक्षित, नगेन्द्र और भोलानाथ तिवारी इन्हें इटावा निवासी ही मानते हैं।

पं० कृष्णबिहारी मिश्र ने दोनों मतों में समन्वय करने की भी चेष्टा की है—'कुछ समय तक मैनपुरी और इटावा जिले एक में सम्मिलित रहे हैं। सम्भव है, जब देव जी का जन्म हुआ हो, उस समय भी ये दोनों जिले एक में हों। ऐसी दशा में मैनपुरी जिले को देवकवि का जन्म-स्थान बतलाने वाले भी भ्रान्त नहीं कहे जा सकते।[3]

किन्तु भाव-विलास की समाप्ति पर देवकवि ने स्पष्ट लिखा है—

द्योसरिया कवि देव को नगर इटाए वास।
जोवन नवल सुभाव वर कीनों भावविलास ॥८०॥[4]

इटावा जिला नहीं, अपितु इटावा नगर में उनका वास बताया गया है। पं० गोकुलचन्द्र दीक्षित कवि को लालपुरा के निकट अस्तल मुहल्ले का निवासी मानते हैं। इटावा वासी वकील श्री श्यामप्रताप पाण्डेय से ज्ञात हुआ कि देव जी राव नरसिंहराव के निवास-स्थान के समीप एक गली में रहते थे।

डॉ० चतुर्भुज द्विवेदी ने कहीं से खोज कर यह सूचना भेजी कि देव के पिता देवसर ग्राम में रहते थे। वहीं से देव की माँ को लेकर इटावा आ बसे थे। यहीं देव का जन्म हुआ था। देवसर की स्थिति कोई नहीं बता सका। पं० श्यामप्रताप पाण्डेय का अनुमान है कि देवसर ग्राम गोरखपुर में कहीं हो सकता है, क्योंकि इटावा के कोठी वाले लालाओं के यहाँ देवकवि के वंशज पौरोहित्य करते रहे हैं। ये लाला लोग गोरखपुर वाले कहलाते हैं। हो सकता है ये लाला लोग अपने साथ अपने पुरोहितों को भी लाये हों। पाण्डेय जी के अनुमान की पुष्टि अन्य किसी प्रमाण से नहीं हो सकी। गोरखपुर की ओर कान्यकुब्ज नहीं, सरयूपारीण ब्राह्मण रहते हैं।

डॉ० नगेन्द्र ने इटावा के स्वर्गीय पं० रामप्रसाद शास्त्री के मतानुसार लिखा—

'कवि ने इटावा क्यों छोड़ा और कुसमरा में जाकर वह क्यों बसा? इस विषय

---

१. श्री जगन्नाथदास रत्नाकर, शिवाष्टक, भूमिका पृ० १
२. मिश्रबन्धु, देवसुधा, प० ५
३. कृष्णबिहारी मिश्र—देव और बिहारी, पृ० २४६
४ लक्ष्मीधर मालवीय—देव ग्रन्थावली (१), पृ० १२८

5310

 CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में उनके वंशजों को कुछ नहीं मालूम।···इससे यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इसका कारण साधारण ही रहा होगा, कोई विशेष घटना नहीं।'[1]

प्रस्तुत लेखक को इटावा के लोगों से ज्ञात हुआ कि देवकवि की ससुराल कुसमरा में थी। कुसमरा इटावा से ३० मील दूर फर्रुखाबाद रोड पर स्थित है। लगता है कि आश्रयदाताओं की खोज में चक्कर लगाने वाले देवकवि अपने परिवार को ससुराल छोड़ आये होंगे और स्वयं भी बीच-बीच में जाकर कुसमरा ही ठहरते होंगे। इस प्रकार वे इटावा छोड़कर कुसमरा के ही निवासी होकर रह गये।

इटावा और मैनपुरी दोनों ही स्थानों के लोग एक मत से स्वीकार करते हैं कि कवि की मृत्यु कुसमरा में ही हुई थी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि देव का जन्म-स्थान इटावा नगर था, उनकी पत्नी कुसमरा की थीं। देव यदि इटावा में अवतरित हुए तो कुसमरा में पंचत्व को प्राप्त हुए, अतः इटावा और कुसमरा दोनों ही स्थानों के लोगों का उन पर अधिकार प्रकट करना सार्थक है।

जाति

'द्योसरिया कवि देव को नगर इटाए वास'—के द्यो को भूलवश 'धौ' पढ़े जाने के कारण पहले देवकवि को सनाढ्य ब्राह्मण घोषित किया गया। धौसरिया सनाढ्य ब्राह्मणों की एक अल्ल है। एक और तर्क दिया गया कि इटावा में सनाढ्यों की संख्या बहुत है। वस्तुतः इटावा में कान्यकुब्जों की संख्या अधिक है। पहले मिश्र बन्धु और श्यामसुन्दरदास भी उन्हें सनाढ्य मानते थे, किन्तु बाद में कान्यकुब्ज मानने लगे। डॉ० नगेन्द्र भी उन्हें कान्यकुब्ज मानते हैं।

देव की चौथी पीढ़ी के श्री भोगीलाल ने अपने 'बखत विलास' में लिखा है—

कास्यप गोत्र द्विवेदिकुल, कान्यकुब्ज कमनीय।
देवदत्त कवि जगत में भये देव रमनीय॥

देवदत्त द्योसरिहा कान्यकुब्ज द्विवेदी ब्राह्मण थे। उनका गोत्र काश्यप[2] था। पं० मातादीन के अनुसार देव जी का गोत्र काश्यप, प्रवर तीन अर्थात् काश्यप, ध्रुव और अत्रि। वेद—साम तथा यजुः थे।[3] ये ११ बिस्वा के ब्राह्मण होते हैं।

---

१. डॉ० नगेन्द्र—देव और उनकी कविता, पृ० २०

२. काश्यप और कश्यप में अन्तर है। प्रस्तुत लेखक का गोत्र कश्यप और पत्नी का काश्यप है।

३. श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर—शिवाष्टक, भूमिका, पृ० २

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेशभूषा—व्यक्तित्व

देव जी के वंशजों[1] में प्रचलित धारणा के अनुसार उनकी वेषभूषा में निम्न वस्तुएं आती हैं—

१—गोखुर के बराबर चोटी
२—बीस हाथ की पगड़ी
३—गाढ़े का अँगरखा
४—लाल किनारी की लम्बी धोती
५—धवल दुपट्टा
६—त्रिपुण्ड
७—हाथ में दण्ड अथवा छड़ी

इनके जामा के विषय में कहा जाता हैं कि वह बहुत विशाल और घेरदार होता था। राजदरबारों में जाते समय कई सेवक उसको भूमि में घिसलने से बचाने के लिए उठाये रहते थे।[2]

देवकवि के विषय में बताया गया है कि वे अत्यन्त सुन्दर थे। वे वेदान्त और संगीत के ज्ञाता थे। उन्हें ज्योतिष का भी ज्ञान था। इटावा स्थित उनके वंशज आज भी ज्योतिषाचार्य हैं।

उनके स्वभाव की युगानुकूल रसिकता उनके काव्य में लक्षित होती है, किन्तु वे चरित्रहीन नहीं थे। उन्होंने स्वकीया के प्रेम को विशेष महत्ता दी है।

देवकवि की वंशावली

मैंने कई प्रकार से देवकवि की वंशावली प्राप्त करने की चेष्टा की है।

कुसमरा वाली वंशावली में लगता है कि एकाध पीढ़ी की भूल रह गयी है।

इधर इटावा वाली पीढ़ी में एक भ्रम की सृष्टि हुई। इटावा के कुछ लोग कहते हैं कि इटावा में जो भी देव-वंशज पाये जाते हैं, वे सब उनके भाई बलभद्र के वंशज हैं। इटावा के श्री कृष्णमाधव चौधरी देव के किसी भाई को स्वीकार नहीं करते। चौधरी साहब ने मुझे देवकवि के वंश-वृक्ष का एक विस्तृत चार्ट दिखाया, जिसे स्व० श्री प्रह्लाद यदुवंशी ने अत्यन्त परिश्रम के साथ प्रस्तुत किया था। स्व० श्री रामप्रसाद शास्त्री ने दि० २२-११-६० को इसकी पुष्टि की थी। इस वृहत् वंश-वृक्ष में भवानी प्रसाद देव के बड़े पुत्र बताये गये हैं। इन्हीं के पुत्र बलभद्र को देव का भाई समझा जाने लगा। सम्पूर्ण वंशवृक्ष बहुत स्थान घेर लेगा। इसका संक्षिप्त रूप कुछ नये परिवर्तनों के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है—

---

१. स्व० रामप्रसाद शास्त्री एवं श्री अवध बिहारी द्विवेदी से प्राप्त विवरण
२. श्री कृष्णबिहारी मिश्र—देव और बिहारी, पृ० २५१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवि देव का वंश-वृक्ष

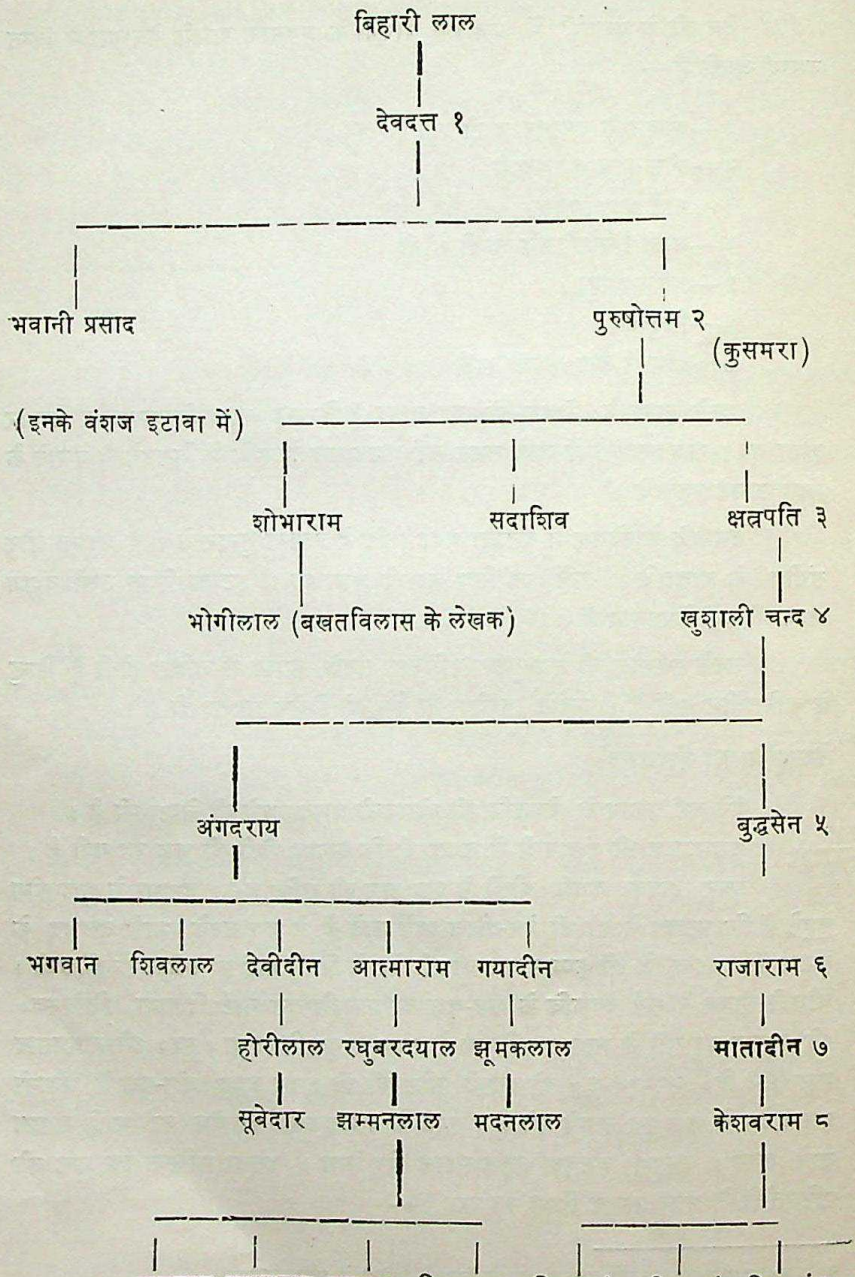

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इटावा-शाखा

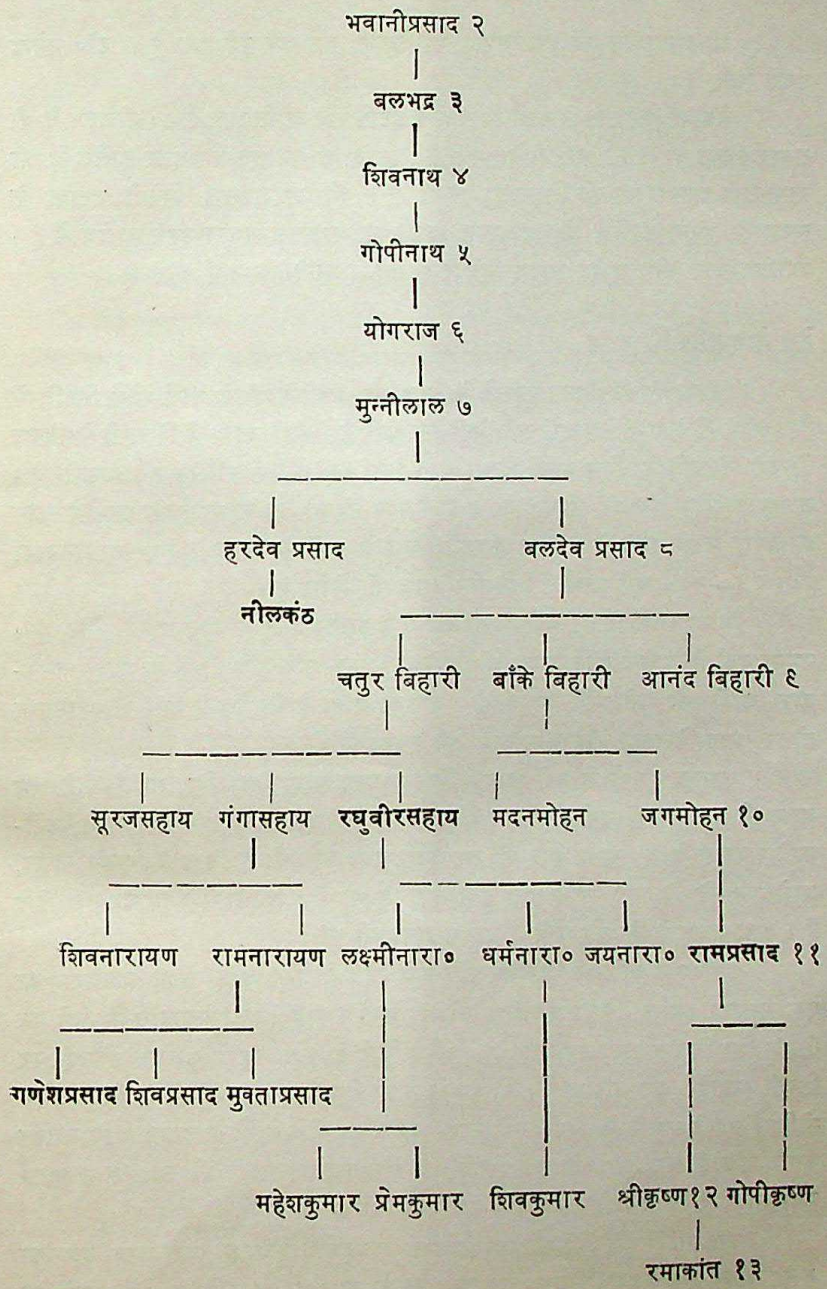

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार कुसमरा में नवीं और इटावा में तेरहवीं पीढ़ी चल रही है, हो सकता है, कहीं कोई गड़बड़ हो।

श्री मातादीन दुबे (कुसमरा) का देहान्त कुछ वर्ष पूर्व हुआ है। डॉ० नगेन्द्र इनसे मिले थे।

देव पर खोज करने वाले विद्वानों ने इटावा के ज्योतिषाचार्य पं० नीलकंठ से भी सम्पर्क किया था, ये भी अब जीवित नहीं हैं। इटावा के सनातन-धर्म इंटर कालेज के श्री रामप्रसाद शास्त्री का भी निधन हो चुका है। श्री गणेशप्रसाद द्विवेदी इटावा के सरकारी इंटर कालेज में अध्यापन करते थे, आजकल मथुरा इंटर कालेज में हैं। ज्योतिषाचार्य श्री रघुबीर सहाय द्विवेदी इटावा में पौरोहित्य-कर्म करते हैं।

देव के स्मृति-चिह्न

इटावा के बरहीपुरा मुहल्ले में आज भी एक शिवलिंग जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है। इसके नीचे बहुत गहराई तक मिट्टी कट गयी है। कहा जाता है कि इसी के निकट बैठकर देवकवि ने 'शिवाष्टक' लिखा था। अब यहाँ अहीर श्रमिकों की बस्ती है। लालपुरा और पंसारी टोला में बसे देव के वंशजों का कहना है कि पहले ये लोग बरहीपुरा में ही रहते थे। बेरून पंसारी टोला में इन्हीं के किसी पूर्वज का बनवाया हुआ १५०-२०० वर्ष प्राचीन शिवालय आज भी स्थित है।

लालपुरा के निकट घटिया मुहल्ला है। इसका दक्षिणी भाग काफी ऊँचा है। यमुना यहाँ से करील और बबूल की झाड़ियों से ढके ऊँचे-ऊँचे टीलों के बीच चमकदार चाँदी की झील-सी लगती है। बताया जाता है कि देव ने यहाँ ही ध्यानमग्न होकर 'भाव-विलास' और 'अष्टयाम' की रचना की थी।

अस्तल मुहल्ले के पूर्वी भाग (शिवनारायण माध्यमिक विद्यालय के पीछे) में आज भी एक पुरानी बगीची स्थित है। किले जैसी इसकी सुदृढ़ दीवार आज टूटी-फूटी अवस्था में है, इसका द्वार भी टूटा हुआ तथा झाड़ियों से घिरा है। इसमें पीपल, अशोक आदि के कई पुराने तथा कुछ नये पेड़ भी हैं। इसके पीछे दूर-दूर तक टीले हैं। कहा जाता है कि यह बगीची देव ने लगवायी थी।

इटावा के दक्षिणी छोर पर ऊँचे-ऊँचे टीले हैं और यहीं राजा जयचन्द्र का एक पुराना ध्वस्त किला जंगली पौधों से घिरा पड़ा है। यहाँ सेवादास के टीले पर बैठकर देव सितार बजाया करते थे। ध्वस्त किले के कुछ पहले पर्याप्त ऊँचाई पर टिक्सी महादेव का मन्दिर है। मन्दिर के ऊपर शिवलिंग तक पहुँचने के लिए अनेक सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। मन्दिर के ऊपर पहुँच कर नीचे देखने से लगता है कि व्यक्ति काफी ऊँचाई पर आ गया है। पहले यहाँ एक पुराना नगाड़ा भी पड़ा रहता था। कहा जाता है कि देव शिव-दर्शन के लिए इस मन्दिर में आया करते थे।

इस मन्दिर की पूर्वी सीढ़ियों के पास एक पक्का कुआ है, जिसे लोग 'देव का कुआ' कहते हैं। देव यहाँ बैठा करते थे। इसका पुष्ट प्रमाण नहीं मिला कि यह देव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के द्वारा बनवाया गया था अथवा देव पहले से ही बने कुए के पास आकर बैठते थे। कुए में पानी है और इसकी हालत ठीक है।

इटावा में प्रत्येक वर्ष प्रदर्शिनी में स्कूली छात्रों की देव-पुरस्कार प्रतियोगिता होती है। विजेता को एक वर्ष के लिए ६४ तोला चाँदी की शील्ड दी जाती है।

देव की ससुराल कुसमरा में एक प्राचीन घर है, जिसे वहाँ वाले देव का जन्म-स्थान बताते हैं। देव द्वारा स्थापित नीम के दो वृक्ष, चबूतरा और शिवलिंग आज भी विद्यमान हैं।

देव के वंशज श्री मातादीन के पास 'बखत-बिलास', 'अलंकार-प्रदीप' और 'देवमाया-प्रपंच' नाटक की प्रतियाँ थीं।

सरसई नावर (जि० इटावा) के श्री कृपानारायण त्रिपाठी ने सूचना दी है कि १९५४ ई० में तत्कालीन राज्यपाल श्री मुंशी ने देव की स्मृति में एक चबूतरे का शिलान्यास किया था। २५,००० रुपये की लागत का महाकवि देव-स्मारक भी बनवाया गया है। उ० प्र० सरकार ने ६०००) की सहायता से पुस्तकालय की व्यवस्था की है। इस समय इस भवन का सदुपयोग नहीं हो रहा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टयाम-परम्परा

वस्तुत' अष्टयाम लीला अथवा अष्टयाम—सेवाविधि का वर्णन सबसे पहले कृष्णकाव्य में आरम्भ हुआ। बिट्ठलनाथ जी ने अपने गुरु वल्लभाचार्य के चार तथा अपने भी चार दीक्षित संगीतशशिष्यों को अपने आशीर्वाद की छाप लगा कर १६१२ वि० में अष्टछाप के कवियों की नियुक्ति की थी। उन्होंने बड़ा महत्त्वपूर्ण प्रयास किया था। उस समय के आठ श्रेष्ठ कवियों की सेवाएँ स्वीकार कर उनकी प्रतिभा को ब्रह्मोन्मुख कर दिया था। इन अष्टछाप के कवियों की स्थापना से ही सम्प्रदाय में अष्टयामी श्रृंगारसेवा और कीर्तनसेवा का विस्तार हुआ। कीर्तनसेवा के सुचारु संचालन के लिए ही अध्यछाप की स्थापना हुई थी। ये सभी आठों कवि पुष्टिमार्गीय दर्शन को भली-भाँति समझते थे। इन्हें अष्टसखा अथवा अष्टसखी भी कहा गया है। श्रीनाथ की बाल-लीलाओं के समय ये सखा हैं और निकुंजलीला में ये सखी हो जाते हैं।[1]

भक्तकवि चिन्तन करते थे कि उनके उपास्य राधा-कृष्ण आठों यामों में क्या-क्या लीलाएँ करते हैं। इन्हीं का गायन वे अपने पदों में करते थे। कृष्ण-लीला के विविध भेदों में उनकी नित्यलीला और उसके अनुरूप दिनचर्या प्रायः सभी उपासक सम्प्रदाय के कवियों द्वारा वर्णित है। यह भावानुसार पृथक्-पृथक् होती है, कहीं बालरूप की और कहीं किशोररूप की। कहीं यह अष्टयाम-लीला के रूप में प्राप्त होती है और कहीं अष्टयाम-सेवा के रूप में।

गौड़ीय आचार्यों के अनुसार राधा-कृष्ण की लीलाएँ नित्य हैं। ये दो प्रकार की होती हैं—प्रकट और अप्रकट। जब ये दिखायी नहीं देतीं तो अप्रकट और जब प्रपंच-गोचर होती हैं तो प्रकट कहलाती हैं।'[2] कहना न होगा कि अष्टयाम में प्रकट लीलाओं का ही समावेश था।

रामभक्ति के रसिक-सम्प्रदाय में भी राम-सीता की अष्टयाम लीलाओं तथा उनके अष्टसखा-सखियों की व्यवस्था है।

वल्लभ-सम्प्रदाय के भक्तों की अष्टयाम-सेवा-विधि इस प्रकार है—

१. मंगला

---

१. डॉ० नगेन्द्र—सम्पादित, हिन्दी-साहित्य का इतिहास, पृ० १९३

२. डॉ० धर्मनारायण ओझा—सूर साहित्य में पुष्टिमार्गीय सेवाभावना, पृ०, ३७४, ७६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. श्रृंगार

३. ग्वाल

४. राज-भोग

५. उत्थापन

६. भोग

७. सन्ध्या-आरती

८. शयन

इन सेवाओं के चार मुख्य अंश हैं—

राग (कीर्तन)

श्रृंगार (स्नान, वस्त्राभूषणधारण)

भोग

आरती

प्रातःकाल जगाने से लेकर रात के समय सुला देने तक ये सेवाएँ चलती थीं। उपर्युक्त अष्टयाम-सेवा के मंगला, श्रृंगार और शयन में रति और काम-दशाओं का भी चित्रण होता था।

सूरदास आदि अष्टयामी कवियों की अधिकांश रचनाएँ अष्टयामी कीर्तन के अनुसार रचित हुई हैं।

धीरे-धीरे कृष्ण-भक्ति-सम्प्रदाय में अष्टयाम-सेवा का और भी विस्तार होता गया और इनमें स्थूल श्रृंगारिकता[1] का समावेश बढ़ता ही गया।

डॉ० विजयेन्द्र स्नातक द्वारा बतायी गयी राधाबल्लभ-सम्प्रदाय की अष्टयाम-सेवाविधि का सारांश इस प्रकार है—

१. **मंगला**—(दो घड़ी रात रहने से दो घड़ी रात चढ़ने तक)

श्री जी का जागरण, मुख-प्रक्षालन, कलेवा (मंगला-भोग), **मंगला-आरती** पदगायन, इसके पश्चात् श्री जी का प्रातः भ्रमण, पुष्प-चयन, कन्दुक-क्रीड़ा आदि।

२. **श्रृंगार**—(दो घड़ी दिन चढ़ने से १२ घड़ी दिन चढ़ने तक)

स्नान-कुंज में ले जाकर उबटन, स्नान, श्रृंगार, तिलक, धूप-आरती, दही-मिष्ठान्न आदि का भोग, **श्रृंगार-आरती**, तत्पश्चात् अनेक प्रकार के कौतुक।

३. **राज-भोग**—(···छह घड़ी और आगे तक)

दोपहर का भोजन—राजभोग, कच्ची रसोई, भोजन, ताम्बूल। चौपड़ आदि मनोरंजन, तत्पश्चात् विश्राम। विश्राम से पहले **राजभोग-आरती**।

४. **उत्थापन**—(···सायंकाल तक)

विश्राम-शयन से उठना। मुख-प्रक्षालन, मेवा-फल आदि का स्वल्प भोजन, धूप-आरती। वन-विहार, पुष्प-चयन, कन्दुक-क्रीड़ा, नौका विहार आदि, **आरती**।

---

१. परिरभन चुम्बन मिलि गावत सुर मन्दर कलघोर—हित चौरासी, पदसंख्या १३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. **सन्ध्या**

वन-विहार से लौटने पर सन्ध्या समय का भोग। **सन्ध्या-आरती** और रास-लीला।

६. **शयन**—(सन्ध्या से छह घड़ी रात गये तक तथा शयन-समय दो घड़ी तक)

रात्रिकालीन पक्का भोजन, **शयन-आरती**। शय्या पर जाने के पश्चात् केलि-क्रीड़ा, मध्य रात्रि तक।

७. **शय्या**—(आठ घड़ी के बाद बीस घड़ी शय्या का समय)

हास-परिहास-परिश्रान्त युगल **अनीसीथी भोग** ग्रहण कर सो जाते हैं, प्रातः काल तक।[1]

शय्या के समय ही अष्टयाम मान लिया गया प्रतीत होता है। यह समय शयन में बीतता है और इस समय सेवा की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

राम-भक्ति में भी कृष्ण-भक्ति जैसी मधुरोपासना का समावेश हुआ था। इस सम्प्रदाय में भी अष्टयाम लिखे गये। अग्रदास, नाभादास, रामचरणदास आदि के अष्टयाम उपलब्ध हैं। इनमें रामसीता की अष्टयाम लीलाओं का चिन्तन किया जाता है। दिन-रात आराध्य की लीलाओं के चिन्तन से मन सांसारिक विषयों में लिप्त नहीं होने पाता।

डॉ० भगवती प्रसाद सिंह ने रामचरण दास की अष्टयाम पूजाविधि के अनुसार जो विवरण दिया है, उसका सारांश प्रस्तुत किया जा रहा है—

ब्राह्म मुहूर्त के समय साधक ध्यान करता है कि सखियों का जागरण-गान सुनकर दंपति जागते हैं। सखियाँ उनका मुख-प्रक्षालन कर श्रृंगार करती हैं। जलपान और बीड़ा देने के पश्चात् **मंगल-आरती** की जाती है।

सरयू में स्नान के पश्चात् राम को पीली धोती और सीता को नीली साड़ी पहनायी जाती है। सुगन्धित पदार्थों का लेप, सीता के चरणों में महावर लगाना, सिंहासन पर दोनों को बिठाकर **मंगल-आरती**।

सोने के कटोरे में बालभोग खिलाकर और मुँह पोंछ कर **कलेऊ-कुंज की आरती**।

उनके सिंहासन पर विराजमान होने पर सखियाँ नृत्यगान कर उन्हें भोजन करातीं। **भोजन-कुंज की आरती**।

राम-सीता का अपने-अपने सखा-सखी जनों के साथ अलग-अलग नौका-विहार। स्नान के पश्चात् **आरती**।

श्रीराम विचित्रवन प्रमोदवन आदि में विहार और जल-क्रीड़ा करते हैं। स्नान के पश्चात् सखियाँ **आरती** करतीं।

---

१. विजयेन्द्र स्नातक—राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और अध्ययन, पृ० २४२-४६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युगल सरकार महल लौटकर सखा-सखी जनों के साथ दिव्य भोजन करते हैं। सखियाँ पान खिलाकर **भोजन-कुंज की आरती** करती हैं।

इसके पश्चात् दंपति शयन-कुंज में विश्राम करते हैं। कुछ सखियाँ अपने-अपने कुंजों को लौट जाती हैं, कुछ सेवा करती रहती हैं। जब दंपति सो जाते हैं तो ये सखियाँ भी लौट जाती हैं।[1]

राम-भक्तों का यह अष्टयामी विवरण राधावल्लभ-सम्प्रदाय के अष्टयाम से पर्याप्त साम्य रखता है। दोनों में प्रत्येक याम की लीला की समाप्ति के पश्चात् भोग और आरती की व्यवस्था है।

रसिक-सम्प्रदाय में सख्यलीला का एक और भी प्रकार का अष्टयाम बताया गया है। इसमें राम के बाह्य कार्यक्रमों पर अधिक जोर दिया गया है—।[2]

(१) उत्थापन
(२) शृंगार
(३) भोजन (दिन का)
(४) शयन (दिन में)
(५) सभा—राज्यप्रबन्ध
(६) केलि—सखाओं के साथ अनेक प्रकार के कार्य
(७) भोजन (रात का)
(८) शयन (कनकभवन में)

यह दिनचर्या कुछ ढंग की प्रतीत होती है। राधा-वल्लभ-सम्प्रदाय और राम-रसिक-सम्प्रदाय वाले अष्टयामों में आराध्य देवों को बार-बार भोजन कराया जाता है। इन आराध्य देवों का कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। ये तो बिना खाये ही भोज्य-वस्तुएँ स्वीकार कर लेते हैं। सामान्य नायक-नायिका परेशानी में पड़ जाते, निरन्तर वैद्य की आवश्यकता होती और रातकेलि खटाई में पड़ जाती, अतः देवकवि के नायिका-प्रधान अष्टयाम में केवल एक ही बार भोजन करने का उल्लेख है।

गौड़ीय सम्प्रदाय में परकीया-तत्त्व का समावेश था। इस सम्प्रदाय के आचार्यों ने भी अष्टकालीन-लीलाओं का निर्देश किया है। रूप गोस्वामी के स्मरण मंगल-स्तोत्र में वर्णित अष्टकालीन लीलाओं का सारांश इस प्रकार है[3]—

१. निशान्त—(छह घड़ी रात रहने से प्रातःकाल तक)

एक शय्या पर शायित राधा-कृष्ण का भक्त द्वारा ध्यान। सखियाँ गाकर जगाती हैं। वे राधा की सास जटिला के आने की सूचना देती हैं और राधा-कृष्ण अपने-अपने घर चले जाते हैं।

---

१. डॉ० भगवती प्रसाद सिंह—रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय—पृ० २४०-४२
२. डॉ० भगवती प्रसाद सिंह—रामभक्ति में रसिक सम्प्रदाय, पृ० २८४
३. डॉ० रूप नारायण—ब्रजभाषा के कृष्णकाव्य में माधुर्यभक्ति, पृ० २७३-२७६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. प्रातःकाल की लीला--(प्रातःकाल से पूर्वाह्न तक)

राधा अपने घर में स्नान-प्रसाधन करतीं। सखियाँ उन्हें कृष्ण के यहाँ ले जातीं, वे कृष्ण के लिए भोजन तैयार करतीं। कृष्ण स्नान-भोजन कर गायें चराने चले जाते।

३. पूर्वाह्नकालीन लीला—(बारह घड़ी दिन चढ़ने तक)

कृष्ण सखिओं के साथ राधाकुंड पर जाते। राधा भी जटिला के साथ सूर्य-पूजन के लिए आतीं।

४. मध्याह्नकालीन लीला—(बारह से अठारह घड़ी तक)

राधाकृष्ण विविध लीलाएँ करते—दोला, जलक्रीड़ा, वंशीहरण, सुधापान, सूर्य-पूजा। सखियाँ सहयोग देती हैं।

५. अपराह्नकालीन लीला—(छह घड़ी दिन रहने तक)

राधा घर में कृष्ण के लिए विविध प्रकार के भोजन बनातीं। कृष्ण साथियों के साथ घर लौटते।

६. सायंकालीन लीला--(सूर्यास्त तक की लीला)

राधा द्वारा प्रेषित भोज्य-सामग्री कृष्ण द्वारा ग्रहण और तृप्ति का अनुभव करना। माता का स्नेह प्राप्त कर शयनग्रह में गमन। सखियों द्वारा लायी गयी जूठन से राधा की तृप्ति।

७. प्रदोषकालीन लीला—(छह घड़ी रात बीतने तक)

राधा अभिसारिका बनकर दूती वृन्दा के साथ यमुनातट-स्थित निकुंज में जातीं।

८. निशीथकालीन लीला—(पहर गये रात से लेकर पहर रहे रात तक)

राधा-कृष्ण रास, मान, हास-परिहास आदि लीलाएँ करते सखियाँ सेवा करतीं—ताम्बूल देना, हवा करना, पैर दबाना। दोनों के रति-रस में लीन हो जाने तक लीला चलती रहती।

वल्लभ-सम्प्रदाय की अष्टयाम-लीला में दंपति की रति-क्रीड़ा एवं सुरतान्त जैसी स्थितियों का वर्णन था। आगे कृष्ण-भक्ति सम्प्रदाय और राम के रसिक सम्प्रदाय में स्थूल शृंगार के वर्णन की बहुलता होती गयी। इन भक्ति-सम्प्रदाओं में आज भी अष्टयाम लिखे जा रहे हैं।

रीतिकालीन कवि संसारी लोग थे। उनके लिए राधा-कृष्ण का सामान्य नायिका-नायक बन जाना स्वाभाविक था। उनके तथा भक्तों के अष्टयामों में बाह्यतः यही तो अन्तर है कि रीतिकालीन कवियों ने आरती-भोग का वर्णन नहीं किया है। दृष्टिकोण तथा अष्टयाम के उपयोग में अवश्य ही विशेष अन्तर था। भक्त अष्टयाम-लीलाओं का चिन्तन करता था, सांसारिकता से उठने के लिए उसके काम-भाव का समुन्नयन हो जाता था, जबकि रीतिकालीन कवि शृंगारिकता में डूबने के लिए ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टयाम लिखते थे। दोनों ही दंपति के श्रृंगार-प्रसाधन और रति-केलि का खुलकर वर्णन करते थे।

रीतिकालीन कवियों ने असंख्य अष्टयाम लिखे हैं, ये अधिकांशतः अप्रकाशित पड़े हैं। रीतिकालीन श्रृंगारिक अष्टयामों में देककवि का अष्टयाम विशेष ख्याति पा सका है।

यहाँ उनके अष्टयाम की सामान्य रूपरेखा प्रस्तुत की जा रही है। मैंने घंटा-मिनट में समय भी दे दिया है, इसे ऋतु के अनुसार आधा, पौन घंटा आगे पीछे भी किया जा सकता है।

अष्टयाम (देव) विवरण

प्रथम याम (६ से ९ बजे प्रातः तक)

पहली घड़ी	६-०० से ६-२२ प्रातः	सूर्योदय, संकोच के साथ दंपति उठते हैं।
दूसरी घड़ी	६-२२ से ६-४५ प्रातः	दोनों आलिंगन करते हैं, एक-दूसरे को छोड़ने की इच्छा नहीं होती।
तीसरी घड़ी	६-४५ से ७-७ प्रातः	नायिका सुरति-लक्षण मिटाती है।
चौथी घड़ी	७-७ से ७-३० प्रातः	नायिका नहाकर नूतन वस्त्र धारण करती है।
पाँचवी घड़ी	७-३० से ७-५२ प्रातः	गुरुमन्दिर में आकर सास को प्रणाम करती है। सौत उसे देख जल उठती है।
छठी घड़ी	७-५२ से ८-१५ प्रातः	सास,ननद, जिठानी और दासियों से सद्-व्यवहार करती है, किन्तु सौत को देख सतराती है।
सातवीं घड़ी	८-१५ से ८-३७ प्रातः	सखियों के मध्य नायक उपस्थित होता है, नायिका की पीक नायक के गाल में लगी देखकर सखियों का परिहास।
आठवीं घड़ी	८-३७ से ९ प्रातः	सखियों द्वारा रति परिलक्षित कर लिए जाने का उल्लेख।

द्वितीय याम (९ से १२ बजे प्रातः तक)

पहली घड़ी	९-०० से ९-२२ प्रातः	नाइन द्वारा नायिका का उबटन।
दूसरी घड़ी	९-२२ से ९-४५ प्रातः	नायिका द्वारा स्नान के पश्चात् पूजा और दान।
तीसरी घड़ी	९-४५ से १०-७ प्रातः	भोजन।
चौथी घड़ी	१०-७ से १०-३० प्रातः	पान खाकर दर्पण-महल
पाँचवी घड़ी	१०-३० से १०-५२ प्रातः	श्वेत वस्त्र, आभूषण प्रसाधन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठी घड़ी	१०-५२ से ११-१५ प्रातः	श्रृंगार-सज्जिता नायिका का अंग-सौन्दर्य ।
सातवीं घड़ी	११-१५ से ११-३७ प्रातः	कुंज-भवन में पति-पत्नी का मिलन और परस्पर को फूलों के गहने पहनाना ।
आठवीं घड़ी	११-३७ से १२ प्रातः	रागभवन में दोनों का संगीत सुनना ।

तृतीय याम (१२ से ३ बजे सन्ध्या तक)

पहली घड़ी	१२-०० से १२-२२ सन्ध्या	दोनों का शीतलधाम में आना और परस्पर आलिंगन करना ।
दूसरी घड़ी	१२-२२ से १२-४५ सन्ध्या	पासा खेलना ।
तीसरी घड़ी	१२-४५ से १-७ सन्ध्या	चित्र-मन्दिर में जाना, पति द्वारा पत्नी को विपरीत-रति का चित्र दिखाना, पत्नी का लज्जित होना ।
चौथी घड़ी	१-७ से १-३० सन्ध्या	पक्षी-भवन में जाकर विभिन्न पक्षी देखना ।
पाँचवी घड़ी	१-३० से १-५२ सन्ध्या	एक-दूसरे की वेशभूषा की सराहना करना ।
छठी घड़ी	१-५२ से २-१५ सन्ध्या	प्रेमाधिक्य के कारण एक-दूसरे के रंग के कपड़े धारण करना ।
सातवी घड़ी	२-१५ से २-३७ सन्ध्या	सखियों द्वारा नायिका के सौन्दर्य और सुहाग की प्रशंसा ।
आठवीं घड़ी	२-३७ से ३-०० सन्ध्या	रूपगर्विता नायिका का कथन कि स्वामी केवल उसी में अनुरक्त ।

चतुर्थ याम (३ से ६ बजे सन्ध्या तक)

पहली घड़ी	३-०० से ३-२२ सन्ध्या	गुरुजनों के मध्य बैठी बहू व्याकुल होकर दिन की समाप्ति की प्रतीक्षा कर रही ।
दूसरी घड़ी	३-२२ से ३-४५ सन्ध्या	श्रृंगार-मन्दिर में आकर साज-सज्जा करना ।
तीसरी घड़ी	३-४५ से ४-७ सन्ध्या	उबटन लगाकर पीले वस्त्र धारण करना ।
चौथी घड़ी	४-७ से ४-३० सन्ध्या	श्रृंगार-प्रसाधन ।
पाँचवी घड़ी	४-३० से ४-५२ सन्ध्या	महावर, बिछुवा आदि अलंकार, बिंदी, काजल आदि का श्रृंगार ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठी घड़ी	४-५२ से ५-१५ सन्ध्या	दर्पण में सौन्दर्य देखना।
सातवीं घड़ी	५-१५ से ५-३७ सन्ध्या	अभिसार के लिए तैयार होकर बैठना।
आठवीं घड़ी	५-३७ से ६-०० सन्ध्या	सजी-धजी, महँकती नायिका का रंग-भवन की ओर जाना।

पंचम याम (६ से ९ बजे सन्ध्या तक)

पहली घड़ी	६-०० से ६-२२ सन्ध्या	नायिका दासी-सखी-जनों के साथ रंग-भवन में आकर शय्या पर पति के साथ बैठती है। मिलन के लिए दोनों का अकुलाना।
दूसरी घड़ी	६-२२ से ६-४५ सन्ध्या	पति कामातुर होकर चेष्टा करता है तो पत्नी सखियों की ओर देखती है।
तीसरी घड़ी	६-४५ से ७-७ सन्ध्या	सखियाँ मुस्कराकर चली जाती हैं।
चौथी घड़ी	७-७ से ७-३० सन्ध्या	नायिका अपनी चेष्टाओं से नायक को ललचाती है।
पाँचवी घड़ी	७-३० से ७-५२ सन्ध्या	दोनों लज्जा त्याग कर प्रीति-प्रकाश करते हैं।
छठी घड़ी	७-५२ से ८-१५ सन्ध्या	नायक नायिका को विवस्त्र करने की चेष्टा करता है।
सातवीं घड़ी	८-१५ से ८-३७ सन्ध्या	कंचुकी तोड़कर फेंकना, प्रगाढ़ आलिंगन-चुम्बन।
आठवीं घड़ी	८-३७ से ९-०० सन्ध्या	सुरति।

षष्ठ याम (९ से १२ बजे रात तक)

पहली घड़ी	९-०० से ९-२२ रात	नायिका को वस्त्र पहनते देख नायक का फिर ललचाना।
दूसरी घड़ी	९-२२ से ९-४५ रात	नायक रति-सुख को सबसे बड़ा सुख कहता है और नायिका भी आँखें झुकाकर स्वीकार कर लेती है।
तीसरी घड़ी	९-४५ से १०-७ रात	दोनों साथ लेटकर एक-दूसरे के प्रति जीवन अर्पित करने की बात करते हैं।
चौथी घड़ी	१०-७ से १०-३० रात	नायक परिहास करता है और नायिका सौतिया डाह से पीड़ित होती है।
पाँचवीं घड़ी	१०-३० से १०-५२ रात	वह मान कर करवट बदल कर लेट जाती है किन्तु पति वचन-पटुता द्वारा उसे मना लेता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठी घड़ी	१०-५२ से ११-१५ रात	वियोग-व्यथा न सह सकने के कारण सिसक कर पति के गले से लग जाती है।
सातवीं घड़ी	११-१५ से ११-३७ रात	वह अपने मन को मान करने के लिए धिक्कारती है।
आठवीं घड़ी	११-३७ से १२-०० रात	दोनों एक-दूसरे की भुजाओं में खो जाते हैं।

सप्तम याम (१२ से ३ बजे प्रातः तक)

पहली घड़ी	१२-०० से १२-२२ रात	मुख से मुख जोड़कर प्रगाढ़ चुम्बन।
दूसरी घड़ी	१२-२२ से १२-४५ रात	काम-विह्वल होकर दोनों कहानी कहते हैं।
तीसरी घड़ी	१२-४५ से १-७ प्रातः	अंक में भरे होने पर भी दोनों हवस से भरे हुए हैं।
चौथी घड़ी	१-७ से १-३० प्रातः	बलात् चेष्टा करने पर भी नींद नहीं आती और दोनों हँसी नहीं रोक पाते,
पाँचवीं घड़ी	१-३० से १-५२ प्रातः	पुनः आलिंगन-चुम्बन।
छठी घड़ी	१-५२ से २-१५ प्रातः	दोनों मद से छककर झूमते हैं।
सातवीं घड़ी	२-१५ से २-३७ प्रातः	आलस-वश तथा ठंडी हवा लगने के कारण दोनों सो जाते हैं।
आठवीं घड़ी	२-३७ से ३-०० प्रातः	स्वप्न में पति से वियोग जानकर वह सिसक उठती है।

अष्टम याम (३ से ६ बजे तक)

पहली घड़ी	३-०० से ३-२२ प्रातः	वह पति को बताती है कि पति ने स्वप्न में विदेश जाने की बात कही है।
दूसरी घड़ी	३-२२ से ३-४५ प्रातः	पति उसे छाती से लगा लेता है। भोर होने के लक्षण प्रकट होने लगते हैं।
तीसरी घड़ी	३-४५ से ४-७ प्रात	पति की चेष्टाएँ और पत्नी द्वारा सहयोग न कर ललचाने का भाव प्रकट करना।
चौथी घड़ी	४-७ से ४-३० प्रातः	दोनों रतिरंग का दाँव बदकर पहेली पूछ लेते हैं, पति जानबूझ कर हार जाता है।
पाँचवीं घड़ी	४-३० से ४-५२ प्रातः	इस हार के स्वरूप विपरीत-रति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठी घड़ी	४-५२ से ५-१५ प्रातः	परस्पर हास-परिहास करते हैं, नायिका रूठ जाती है।
सातवीं घड़ी	५-१५ से ५-३७ प्रातः	प्रभात होने के लक्षण जानकर पत्नी वचनचातुरी द्वारा अभी रात बताकर पति को सोने के लिए कहती है।
आठवीं घड़ी	५-३७ से ६-०० प्रातः	प्रभात के समय प्राची की लालिमा पत्नी को ऐसी लगती है, मानो उसने किसी वियोगिनी का खून पी लिया हो।

(आधा मिनट हटाकर संख्या दी गयी है, जैसे ७।। के स्थान पर ७)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देव के अष्टयाम की नायिका

अष्टयाम में जिस नायिका का वर्णन है, वह अवश्य ही सम्पन्न घर की है, अथवा उसे सम्पन्न घर की बनाकर प्रस्तुत किया गया है, अन्यथा चौंसठ घड़ियों में उसके विविध रूपों का चित्रण करना कठिन हो जाता।

उसके विशाल आवास-भवन में कई भवन हैं। वह प्रातः उठकर स्नान-प्रसाधन कर **गुरु-मन्दिर** में जाकर गुरुजनों को प्रणाम करती है। भोजन के बाद पान चबाकर वह **दर्पण-भवन** जाती है। **कुंज-भवन** में वह फूलों के गहने पहनती है। **राग-भवन** में संगीत सुनती है। गरम दुपहरी बिताने के लिए वह **शीतल-भवन** चली जाती है। शीतल-भवन चन्दन-पंक से लिपा है, इसमें शीतल-जल से युक्त कुंड हैं, जल-यंत्र (फव्वारे) शीतल जल-धारा छोड़ते रहते हैं। नायिका नायक के साथ शीतल शय्या पर बैठती है। यहीं नीचे बिछे फेन जैसे श्वेत बिछौने पर बैठकर वह पति के साथ पासा खेलती है। वह **चित्र-भवन** में चित्र देखती और **पक्षी-भवन** में पक्षियों के साथ मनोरंजन करती है। **शृंगार-भवन** में शृंगार कर वह **रंग-भवन** में आकर काम-क्रीड़ाओं का आनन्द लेती है।

वह दिन में कई बार वस्त्र-परिवर्तन करती है। नींद खुलते ही वह शयन वाले वस्त्र उतार देती है। पति की छेड़-छाड़ से मोतियों वाले जो गहने टूट गये थे, उनके स्थान पर अन्य गहने धारण करती है। नाइन सुगन्धित पदार्थों से उसका उबटन करके स्नान कराती है, तब भी उसने नये कपड़े पहने होंगे। भोजन के पश्चात् पान से मुखशुद्धि कर वह श्वेत रेशमी सुगन्धित वस्त्र और मणि-भूषण धारण करती है। कंचन के कटोरों में चोवा, इत्र और गुलाब भर-भर कर उसका प्रसाधन किया जाता है। वह अपराह्न में पति के रंग के अर्थात् श्यामरंग के वस्त्र पहनती है। सन्ध्या आते-आते वह पुनः केसर का उबटन लगवाकर गुलाब-जल से स्नान कर पीतवस्त्र धारण कर चन्द्रमा-सी प्यारी लगती है।

प्रातःकाल के समय उबटन और स्नान के पश्चात् गौरी और शंकर का पूजन कर वह इतना दान देती है कि दान-ग्रहणकर्त्ता ब्राह्मण भी चकित रह जाता है।

यह स्वकीया नायिका सास, जिठानी, ननद और सखियों का आदर-समादर करती है। दासियों के प्रति भी उसका आदर मृदु है, किन्तु वह सौतों को नहीं सह पाती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्त्रियाँ चतुर होती ही हैं। नायिका प्रातः उठते ही रति-चिह्न वो डालती है, किन्तु उसके प्रियतम सोते-सोते उठकर उसके पास ज. धमकते हैं, वह भी इस स्थिति में—**'प्यारी की पीक कपोल में पी के'** सखियाँ हँस पड़ती हैं और सुन्दरी लाज से ऐसी गड़ने लगती है कि उसकि पलकें ही नहीं उठतीं।

उसे अपने रुप का ज्ञान है। उबटन लगाने आयी नाइन जब उसके कंचुकी-विमुक्त ईगुर जैसे अंगों को नख से शिख तक देखती है और ठगी रह जाती है तो वह रूप-गर्विता ठकुराइन ठोढ़ी पर हाथ रखकर मुस्करा उठती है। ऐसा है उसे रूप का अभिमान कि उसने घोषणा कर रखी है—**और तिया सौं ततौ बतिया कहै मो छतिया सौं छिनौ जब छूटै**—३.१६

चम्पा की डार सी यह नायिका बड़ी नाजुक है। जिस प्रकार भौंरा फूल की गन्ध से ही तृप्त हो जाता है, उसी प्रकार यह सुधानिधिमुखी अधरों से जरा-सा छूकर मानो भोजन में ही अमृत बसा देती है।

प्रणय-मान प्रेम की वृद्धि ही करता है। वह प्रियतम की बाँहों से एक क्षण को भी मुक्त नहीं होना चाहती, किन्तु उसके ऐसे-वैसे परिहास से कुपित होकर वह करवट बदल कर पाटी पकड़ लेती है। उसका मान देर तक नहीं चलता, प्रियतम के पटु वचन सुनकर वह झट उलटे पट के समान पलट कर उसके गले लग जाती है।

इस विलास-भरी दिनचर्या में उसे विरह-दुःख की भी अनुभूति हो जाती है। गुरुजनों की उपस्थिति में वह प्रिय से मिलने के लिए छटपटाती रहती है। कामना करती है कि दिन की लम्बाई घट जाए। इतना असीम प्यार है उसे अपने पति से कि सपने में प्रिय के विदेश-गमन का समाचार सुनकर वह सिसकी भर-भर कर रो उठती है।

वह कला-प्रवीणा है। संगीत और चित्रकला में उसकी अभिरुचि है। वह पासा खेलना और कहानी कहना जानती है। एक हिन्दू ललना की भाँति वह दांपत्य जीवन के आदर्श गौरी-शिव की आराधिका भी है।

नायिका का सौन्दर्य

यह नायिका अत्यधिक सुन्दर है। उसका शरीर सुन्दर है तो चेष्टाएँ भी मनोहारी हैं।

उसके घने केश इतने लम्बे हैं कि उनके भार से ही उसकी पतली कमर लचक-लचक जाती है—**लंक मैं लचनि परै कचन के भार के**—४-४। उसके शरीर से स्वाभाविक सुगन्ध निकलती रहती है। **सौगुनी सुगंध तें सरीर की सहज बासु**—४-१२।

कुलवधू-सुलभ सहज लज्जा-बोध के कारण वह और भी अधिक मधुर हो उठती है। प्रातःकाल शय्या त्यागते समय पति के प्रीति-प्रकाश करने पर वह लज्जा से झुककर तिरछी खड़ी हो जाती है—**नई तिरछाय गई गड़ि लाज**—१-६। पति उसे चित्र-घर में ले जाकर दुष्टतापूर्वक विपरीत-रति का चित्र दिखाता है तो वह झेंपती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है, पलक झुकाती है और सकुचाकर सतरा भी जाती है। कपट क्रोध से सतराना लज्जाशीला युवती के लिए सुहाग-गर्व का द्योतक ही है।[1] अत्यधिक कामावेश की अवस्था में भी वह लज्जा का परित्याग नहीं करती।[2] सुरतान्त के समय ओट देकर अँगिया पहनने की चेष्टा भी जहाँ मुग्धा की सहज लज्जा का बोध देती है, वहीं वह नायक को पुनः कामातुर कर देती है।[3] नायिका के नारी स्वभाव को डॉ० पुष्पारानी जायसवाल एक स्थल पर समझ नहीं पायी हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक के पृष्ठ १३० पर छन्द संख्या ८-१० का अर्थ दिया है—'नायिका-नायक से सम्बन्ध मुक्त कर देने का अनुरोध करती है, अन्यथा उसके कोमल अंगों में मोच आ जाने का भय है।' सच में स्थिति कुछ दूसरी है। नाहिं गयो चाहे मुचिकै का अर्थ है कि वह मुक्त होकर जाना नहीं चाहती, मुख से भले ही छोड़ देने के लिए कह रही हो। मन-मन भावै मुड़ी हिलावै जैसी स्थिति है।

नायिका के नेत्रों की विभिन्न स्थितियों के चित्रण में भी देव की विशेष रुचि है। सखियों की उपस्थिति में प्रिय उसकी ओर ललचा कर देखता है, तो वह सकुचा कर सखियों की ओर देखने लगती है।[4] उसे पैनी चितवन से अपने पति का चित्त चूर-चूर करना भी आता है।[5] सुरतान्त के समय अलसाते हुए आरसी देखते समय भी वह द्रगकोर से पति की ओर देखती हुई उसे प्रलुब्ध कर बैठती है।[6] प्रियतम रति-विषयक कोई स्वीकृति लेना चाहता है तो वह सहज ही स्वीकृति नहीं देती। उसकी चेष्टाएँ देखिए—

डीठि बचाइ लचाइ कै लोचन भौंहैं नचाइ कह्यो हसि हाँ हाँ। ६-१०

नेत्रों से कोमल भाव ही नहीं सतराने के भाव भी वह प्रकट करती है। सौतों के प्रति तो वह सतरा कर देखती ही है, पति के परिहास करने पर भी उसके नेत्र क्रोध-विस्फुरित होते हैं।[7]

---

१. लाज के भार लची तरुनी बकुची बरुनी सकुची सतरानी। ३-६
२. कीन्हो सुख संगु रसरंगु मन भायो कोई अंगु न दिखायो पिय डीठिहि डहकि कै। ५-१६
३. ओट ददै पहरी अंगिया। ६-४
४. लालु ज्यौं ज्यौं चितवै तिय त्यौं तिय त्यौं त्यौं चितौति सखीन की ओरी। ५-४
५. पैनी चितौनि सौं चूरि कै कै चितु दूरि भए ललचावति लालहि। ५-८
६. निहारति आरसी आरस सौं द्रग कोर चितै पति ओर निसंक। १-६
७. ६-१०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देव के अष्टयाम की उपेक्षा

निश्चय ही 'अष्टयाम' देव का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ नहीं है, किन्तु विद्वानों ने कहीं-कहीं अष्टयाम के प्रति पूर्ण न्याय नहीं किया है ।

डॉ० नगेन्द्र का कथन है—

'काव्य की दृष्टि से देव के ग्रन्थों में 'अष्टयाम' का महत्त्व 'शिवाष्टक' को छोड़ और सबसे कम है—उसमें उत्कृष्ट छन्द नहीं यह बात नहीं, यों तो देव के कतिपय प्रथम श्रेणी के छन्द उसमें मिलते हैं, किन्तु उनकी संख्या अपेक्षाकृत बहुत थोड़ी है। अष्टयाम के बहुत थोड़े छन्दों की ही देव ने अन्य ग्रंथों में पुनरावृत्ति की है। वर्णन कहीं-कहीं सर्वथा इतिवृत्तात्मक हो गये हैं। शैली में अभी वह प्रौढ़ि, तथा भाषा में वह गम्भीर झंकार नहीं आयी।'[1]

डॉ० भोलानाथ तिवारी ने भी एक प्रकार से डॉ० नगेन्द्र का ही अनुमोदन करते हुए लिखा है—

'देव का यह अभ्यास रहा है कि वे पुराने ग्रन्थों के छन्दों को लेकर प्रायः कुछ नये छन्द जोड़कर नवीन ग्रन्थ बनाते रहे हैं, पर अष्टयाम की अनुत्कृष्टता के कारण ही हम देखते हैं कि उसके छन्द बाद के ग्रन्थों में नहीं के बराबर लिये गये हैं।[2]

इन दोनों विद्वानों से कई वर्ष पूर्व श्री हरदयालु सिंह ने भी लिखा था—

'इससे (ग्रन्थ से) मालूम होता है कि उस समय के राजाओं के पास विलास को छोड़कर और कोई काम ही नहीं था। इसमें न कोई पढ़ने-लिखने की चर्चा है, न देवाराधन की और न किसी राज्य-प्रबन्ध की। समझ में नहीं आता कि देव जैसे उच्च-कोटि के कवि ने राजाओं के लिए ऐसा विलास-प्रधान टाइमटेबुल क्यों तैयार किया। इसके छन्द सुन्दर हैं।[3]

हरदयालु जी के कथन की प्रतिध्वनि डॉ० नरेन्द्र में इस प्रकार मिलती है—

'कहने की आवश्यकता नहीं कि लगभग यह सम्पूर्ण कार्यक्रम शृंगारमय ही है, बस भोजन का एक बार वर्णन है। यह वास्तव में तत्कालीन धनपतियों के अकर्मण्य

---

१. डॉ० नगेन्द्र—देव और उनकी कविता (तृ० सं०), पृ० ४४, ४५

२, श्री भोलानाथ तिवारी—महाकवि देव, पृ० ३९

३. श्री हरदयालु सिंह—देवदर्शन, पृ० १९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विलासी जीवन का चित्र है जो वर्नियर आदि के वर्णनों से ज्यों-का-त्यों मिल जाता है।[1]

इन विद्वानों ने जो कुछ कहना चाहा है, उसका सार यह है—

(१) यह ग्रन्थ विलास-प्रधान टाइमटेबुल है, इसमें न देवाराधन की चर्चा है न किसी राज्य-प्रबन्ध की। बस भोजन का एक बार वर्णन है।

(२) देव ने अपने अन्य ग्रन्थों के छन्द लेकर नये ग्रन्थ में जोड़े हैं, किन्तु अष्टयाम इतना निकृष्ट ग्रन्थ है कि देव ने इसके बहुत थोड़े छन्द अपने अन्य ग्रन्थों में समाहित किये हैं।

(१) कैसे कहा गया कि इसमें देवाराधन की चर्चा नहीं है—'अंबर के धरि अंबर पूजी बरम्बर देवि दिगंबर सूली'—पंक्ति का अर्थ क्या है? देवाराधन के पश्चात् नायिका ब्राह्मण को दान-दक्षिणा भी देती है।

हाँ, वह भोजन एक ही बार करती है, किन्तु वह पक्षीभवन तो भी जाती है। पति के साथ वह चित्रशाला और संगीत-भवन का भी आनन्द लेती है।

यह लघु ग्रंथ नायिका-प्रधान है, नायक को प्रधान मानकर यदि यह लिखा जाता तो नायक के देवाराधन एवं राज्य-प्रबन्ध का वर्णन होता। इसके अतिरिक्त शृंगाररस के अन्तर्गत आने वाले अष्टयाम में यदि शृंगार की ही अधिक से अधिक स्थितियों का वर्णन न होता तो और क्या होता। केवल ६४ कवित्तों में राज्य-प्रबन्ध आदि भी समाविष्ट हो जाते तो शृंगार की विभिन्न स्थितियाँ—मान, मानभंग, विरह, रति आदि के वर्णन के लिए स्थान न रह जाता।

लगता है कि नायिका नवविवाहिता वधू है। नयी-नयी दुलहिन का यही कार्यक्रम होना चाहिए। विवाह के आरंभिक दिनों में वह अत्यधिक विलासरत होगी ही। वैसे वह गुरु-मन्दिर में जाकर गुरुजनों को प्रणाम करती है, सखियों-दासियों से हास-परिहास करती तथा कुछ अन्य कार्य भी करती है।

नायक अवश्य ही नया दुलहा नहीं है। उसके अन्य पत्नियाँ भी हैं। वह आठों याम नायिका के पास नहीं दिखाया गया है। जिस समय नहीं दिखाया गया है, उस समय वह स्नान-प्रसाधन करता और राजकाज अथवा जमींदारी का दायित्व देखता होगा।

दांपत्य जीवन तक सीमित यह रीतिकालीन ग्रन्थ नव-दंपत्ति के लिए उपयोगी और रोचक हो सकता है। इसमें किसी उच्च जीवन-दर्शन की उपलब्धि नहीं होगी, ऐसा दिखाना रीतिकालीन कवियों को अभीष्ट भी न था।

(२) अष्टयाम के छन्द अन्य ग्रंथों में संकलित कैसे नहीं हुए? इसमें कुल १३२ छन्द हैं—६७ दोहे और ६५ कवित्त (सवैया, घनाक्षरी और मनहरण)। एक दोहा और एक कवित्त मंगलाचरण का है, दो दोहे समाप्ति के हैं। अब चौंसठ घड़ियों से

---

१. डॉ० नगेन्द्र—देव और उनकी कविता (तृ० सं०), पृ० ४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्धित ६४ दोहे और ६४ कवित्त रह गये। दोहों को भी हटा देना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक याम की प्रत्येक घड़ी के क्रियाकलाप की सूचना के लिए इनका प्रयोग हुआ है। सच में रह जाते हैं ६४ कवित्त। अब देखना है कि इनमें कितने छन्द देवकवि के द्वारा अन्य ग्रन्थों में समाहित किये गये हैं।

'सुखसागर तरंग' सम्भवतः देव का अन्तिम संग्रह ग्रन्थ था, अतः इस संग्रह का विशेष महत्त्व है। स्वयं श्री हरदयालु सिंह स्वीकार करते हैं—'सब मिलाकर इसमें सुखसागर-तरंग में) लगभग ८०० छन्द हैं और इतनी विस्तृत रचना में भी कोई शिथिल छन्द देखने में नहीं आया। हिन्दी-साहित्य में बहुत कम ग्रन्थ इसकी टक्कर के मिलेंगे।'[1]

तो ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में अष्टयाम के २९ छन्द अर्थात् लगभग आधे छन्द समाहित हैं, तीन छन्द तो दो-दो बार आये हैं। भवानी-विलास, सुजान-विनोद, प्रेम-चन्द्रिका और रस-विलास में भी अष्टयाम के एक-दो छन्द लिये गये हैं।[2]

डॉ० नगेन्द्र ने कविदेव के काव्य-सौन्दर्य का वर्णन करते हुए अष्टयाम के दर्जन छन्द उद्धृत किये हैं। निम्न पूरे छन्द निम्न पृष्ठों पर प्रस्तुत किये गये हैं—

१. पान दये हंसि—पृष्ठ १८४ और १०५
२. माँग गुही मोतिन—पृष्ठ १८७
३. वा चकई को—पृष्ठ २७८
४. संग सोवत ही—पृष्ठ २८५

खंडित छन्द—

५. बिमल बिलास—पृष्ठ १९३
६. पटु दै पलटी—पृष्ठ १९७
७. आपुस में रस—पृष्ठ २४१
८. देव लला गये—पृष्ठ २८५
९. नैन लागे बैन लागे—पृष्ठ १०४
१०. फेरि-फेरि जैहो - पृष्ठ १०४
११. देव निसाकर ज्योति—पृष्ठ २३८

भाषा—

निस्सन्देह देव ने अन्य ब्रजभाषा-कवियों के समान ही शब्दों की पर्याप्त तोड़-मरोड़ की है, जिसके कारण कई बार उनके कई शब्द एवं पंक्तियाँ समझ में नहीं आतीं, किन्तु कहीं-कहीं विद्वानों का शब्दार्थ-विषयक अपना अज्ञान भी देव को समझने में बाधक हुआ है, विशेषतः उन विद्वानों का जो कि ब्रजभाषी नहीं हैं।

---

१. श्री हरदयालु सिंह—देव दर्शन, पृ० २८
२. श्री हरदयालु सिंह ने देव-दर्शन नामक छोटे से काव्य-संग्रह में अष्टयाम के अन्तर्गत पूरे अष्टयाम से २० छन्द चुन कर दिये हैं। इसके अतिरिक्त और भी तीन-चार छन्द लिये हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'देवसुधा' में मिश्र-बन्धुओं ने देव के कुछ शब्दों का अशुद्ध अर्थ दिया हैं। इसी आधार पर भोलानाथजी तिवारी ने लिखा —

'दूसरे वर्ग में वे तोड़े-मरोड़े शब्द हैं जो जल्द पहचाने नहीं जाते।'[१]

तिवारीजी ने 'देवसुधा' से ग्रहण कर कुछ शब्द भी दिये हैं, जैसे कि—

अभै = अभी

तची = तपी

इटावा के आस-पास के जनपदों में आज भी बोला जाता है—'अभै घर सें बाहर नाई जइयो, धरती तच रही है।'

तिवारीजी ने अप्रचलित और अगम्य शब्द बन्दन भी लिया है—

'बन्दन — प्रचलित अर्थ बन्दना, देव द्वारा गृहीत अर्थ ईंगुर।'

बन्दन ईंगुर नहीं है। इटावा, कानपुर, जालौन आदि जिलों में बन्दन आज भी चलता है। यह ईंगुर की अपेक्षा कुछ पीला होता है, यह सौभाग्य चिह्न है। विवाह के समय कन्या की माँग इसी से भरी जाती है। विशेष व्रत-पर्वों पर आज भी स्त्रियाँ इसका प्रयोग करती हैं। घी में मिलाकर इसे हनुमान् की मूर्ति पर लगाते हैं।

सूरदास की यशोदा ने छोटी-सी राधा का शृंगार करते समय माथे पर बन्दन की ही बिन्दी लगायी, ईंगुर की नहीं—

माँग पारि बेनी जु सँवारति, गूँथी सुन्दर भाँति।
गोरैं भाल बिन्दु बन्दन, मनु, इन्दु प्रात-रवि काँति ॥-१३२२

तिवारीजी ने 'देवसुधा' में ही 'काहल' शब्द का अर्थ पढ़ा—अप्सरा[२] और उन्होंने लिखा—'देव में कुछ ऐसे शब्द हैं, जिनका अर्थ अस्पष्ट है।'[३]

कृत्तिवासी-बंगला-रामायण में असंख्य वाद्यों का उल्लेख है, जिनमें एक काहाल (काहल) भी है।[४] श्री वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार यह एक नगाड़ा था, जिसका नीचे का भाग फूल का बनाया जाता था। इसकी जोड़ी नौबत-खाने में बजायी जाती थी। अग्रवालजी ने काहली नामक एक और वाद्य भी बताया है, जो लगभग दो फुट लम्बा सुनार की फुकनी की तरह होता है। इसके निचले हिस्से में कुप्पीनुमा फूल होता है। कभी-कभी दो काहलियाँ एक साथ फूँकी जाती हैं। इसमें कूकने जैसी आवाज होती है।[५]

तिवारीजी जब देव के काव्य की गहराई में उतरते हैं, तब वे कम से कम शब्दों में देव का सही मूल्यांकन कर जाते हैं—

---

१. श्री भोलानाथ तिवारी—महाकवि देव, पृ० १९५

२. गंजत ढोल कदंबक पुंज कुलाहल 'काहल' नादति तामें।
काहला = अप्सरा। देवसुधा, पृ० ३२

३. श्री भोलानाथ तिवारी—महाकवि देव, पृ० १९६

४. डॉ० रमानाथ त्रिपाठी—कृत्तिवासी-बंगला रामायण और मानस, पृ० १२०

५. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल—हर्षचरित—एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ० ६७ और १४०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'बिहारी देव की तुलना में अधिक सफल शिल्पी और शैलीकार हैं, पर दूसरी ओर रसवादिता (जो काव्य की आत्मा है), भाव-भूमि की विस्तीर्णता, झंकृति और संगीत, छन्द-बहुलता एवं ग्रन्थाधिक्य की दृष्टि से देव बिहारी से बहुत आगे हैं।'[1]

☐ देव की भाषा झंकारमयी है। वे अनुप्रास और यमक के प्रयोग में बड़े पटु हैं। चतुर्थयाम के सोलहवें छन्द में उन्होंने एक साथ ऐसे शब्द प्रयुक्त किये हैं—भुजंगम, उतग, मतंग, अंगना, अनंग, सुरग, तुरग, तरगनि, वरंगनि, अगनि, अरंग तरंग, रंग, कुरंग, रंगमई, रंगभौन।

निम्न प्रकार की सानुप्रासिक पंक्तियाँ तो लगभग प्रत्येक छन्द में मिल जाएँगी—

सुचि सौं सुचिर रुचि रुचिर रसोई रची—(२-६)

देव कभी-कभी पंक्ति-पंक्ति में अनुप्रास के साथ-साथ यमक गूँथते चलते हैं। उनके यमकों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

ताके करता के—२-६
सुकपोत सुक-पोत—३-८
जु न्हाई जुन्हाई सी – २-४
अम्बर के धरि अम्बर—२-४
कहानी की कहनि कहा नीकी – ७-४
सुनै नहि बैन सु नैन नचावै—४-२
अरसौहीं रसौहीं—१-१८

उपमाओं के चमत्कार द्वारा कवि ने फुलवारी से सम्बन्धित ऐसे फूल-फलों का वर्णन किया है जो नायिका के किसी न कि किसी अंग के उपमान हैं। इसप्रकार फुलवारी का भी वर्णन हो गया और नायिका के नख-शिख का भी। वह फुलवारी के मध्य स्वयं ही फुलवारी बना दी गयी।

केलि के महल फूलि रही फुलवारी देव
ताही मैं उज्यारी प्यारी फूली फुलवारी-सी ।। २-१२

शब्दालंकारों से छन्द में झंकार और चमत्कृति भर जाती है, किन्तु भावों की सफल व्यंजना तो अर्थालंकारों के गाम्भीर्य से ही होती है। पति-पत्नी अत्यन्त कामाकुल होकर किस प्रकार अधर-पान करते हैं, इसके लिए यह उत्प्रेक्षा कितनी सार्थक है—

जोरे मुख सौं मुख निचोरे मनौ ऊख रस
अमृत मयूष तें पियूष से पियत हैं ।। ७-२

छरहरी युवती के लिए 'लगलगी' की उपमा भी बहुत ही उपयुक्त है। एक लम्बे बाँस में हँसिया बाँधकर उससे वृक्षों के फल या पत्ते काटकर गिराये जाते हैं। यह बाँस लपलपाता रहता है। इसी प्रकार छरहरी युवती पतली कटि एवं पुष्ट वक्ष और नितम्बों के कारण लगलगी (इटावा की बोली में लगगी) सी लहराया करती है—

छतिया सौं लागी लगलगी सी लहकि कै—५-१६

---

१. श्री भोलानाथ तिवारी—महाकवि देव, पृ० २३२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टयाम
(मूलपाठ)

॥ अथ अष्ठजाम लिख्यते ॥

कवित्त

सराहैं सुरासुर सिद्ध समाज जिन्हैं लखि लाज मरैं[1] रति-मार।
महामुद मंगल संग लसैं विलसैं भयभारनि-बार-निवार ॥[2]
बिराजैं त्रिलोक लुनाई के ओक[3] सुदेव[4] मनोहर रूप अपार।
सदा दुलही व्रषभान-सुता दिन दूलह श्री व्रजराजकुमार ॥

दोहा

दंपतीनि के[5] देव कवि, बरनत बिबिध बिलास।
आठ पहर चौंसठि घरी, पूरन प्रेम प्रकास ॥

दोहा

प्रथम जाम पहिली घरी, पहिले सूर उदोत।
सकुचि सेज दंपति तजहि[6] बोलत हंस कपोत ॥३॥

कवित्त

रंगिराति[7] उठी[8] अंगरात प्रभात उठै अंग आलस की लहरैं।
तिय पै पिय पासु तज्यौ न परै बिछुरें[9] हिय दोउन के हहरैं ॥

---

१. लाजत हैं—भा मु०
२. पाठ-भेद के लिए देखिए सम्पादन वाला अध्याय।
३. निकाई की ओप—भामु०। लुलाईन की ओक—सा०। लुनाई की ओक—पुमु०। नुनाइ कै ओक—उ०
४. सुदेव—सा० का० काम्र० म० गं०। मुनीस—भा मु० पुमु० उ०
५. दंपति नीके—भामु०। दंपतिन के—सा०। दंपतीन के—पुमु०
६. तजे—प्रमु०
७. रंगरात—पुमु०
८. उठे—भामु०
९. बिछुरै—पुमु० उ०। बिछुरे—भामु० सुख प्र०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बिथुरे इक बारही बार बड़े छुटि हारन तें मुकुता थहरैं।
झलकैं छतिया पर ह्वै छलकैं सु बिछौनन[1] पै छिति पै छहरैं ॥४॥

दोहा

उठत सेज तें दंपती, सुरत रंग रस पागि।
निरखत सोभा परसपर, हरखत पुनि हिय[2] लागि ॥५॥

कवित्त

अज्यौं लगि होतु न ज्यौ चलिबे कौ[3] भज्यौ तमु देखि[4] तज्यौ परजंक।
निहारति आरसी[5] आरस सौं द्रग कोर चितै पति[6] ओर निसंक॥
छुटी अलकैं अखियाँ ललकैं झलकै पलकैं पगि पीक की[7] पंक।
नई तिरछाइ[8] गई गड़ि लाज लई मुख चूमि ललां[9] भरि अंक ॥६॥

दोहा

सरस परसपर के[10] परस, बरसत रस अरसात[11]।
सुरति[12] खोज खोवत बिमुख धोवत द्रग मुख गात ॥७॥

कवित्त

पगी पिय प्रेम जगी चहुँ[13] जाम रंगी रति रैनि[14] भयो परभातु।
कियो न बियोगु लियो भरि भोगु पियो रस ओघु[15] हियो न अघातु॥
गुलाबु[16] लैलै बहु भावनि[17] सौं छिरकै छतिया तनु त्यौं अरसातु।
तजै संगु[18] नारंगु केसरि कौ अंगु[19] धोवति त्यौं रंगु बाढ़तु जातु ॥८॥

---

१. बिछौननि—पुमु० भा० उ०। बिछौनन—सुख प्र०
२ हिय पुनि—उ०
३. होत तज्यौ तजिबे को—भामु०
४. ताकि—उ०
५. आरति—भामु०
६. पिय—भामु०
७. प्रेम के—भामु०
८. नई रति छाइ—भामु० उ०। नई तिरछाइ—पुमु०
९. लला—पुमु० भामु०
१०. परस पलिके—सा०। परस परसपर—उ०
११. रँग सरसात—भामु०। रस अरसात—सा० पुमु०
१२. क्यों० प्रति में सुरत था, किन्तु अन्यत्र सुरति आया है, अतः सुरति किया गया। पुमु० में भी सुरति।
१३. चहू—क्यों०। चहुँ—पुमु० भामु०
१४. रंग—सा० उ० भामु०। रैन—पुमु०
१५. बोध—भामु०। बोग—सा०। ओघ—पुमु०
१६. कुंकुम—सा०
१७. भातिन—सा०। भाँतिन—पुमु० उ०। भावनि—नाग्र० नाग्रा० नाइ०
१८. रंग—भामु०। संग—पुमु०। संगु—सा०
१९. अति—उ०+उ० में क्रम इस प्रकार ४, १, २, ३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

अंग धोइ भूषन[1] पहिरि नूतन बेप बनाइ ।
ठठुकति[2] अति[3] चाहति चल्यो चितवति चित ललचाइ[4] ।।९।।

कवित्त

सब अंग अंगौंछि[5] उरोजन पोंछिकै अंबरु चारु हरे पहिरे ।
गहिने गहि[6] नूतन मोतिन के पहिले करि अंगनि तें बहिरे ।।
कवि[7] देव कह्यो[8] दिन सौं तिय दीन ह्वै दीरघ ह्वै न हहा रहुरे ।
सकुची जब पूछन कंत लगे इन ओठन दंत लगे गहिरे ।।१०।।

दोहा

रंगमहल ते कामिनी, आई गुरुजन गेह ।
आइ[9] मिली दासी सखी, जिय उपजाइ सनेह ।।११।।

कवित्त

सुख सेज के मंदिर, तें गुरुमंदिर सुन्दरि आइ गई सुघरी ।
गुरु लोगन के पग लागति प्यार[10] सौं प्यारी बहू लखि सौति जरी ।।
सब[11] देव असीसत ईस करौ तुम कोटि[12] बरीस लौं सीस धरी ।
पिय के हिय मैं बसियौ नितही[13] बड़भागनि भाग सुहाग भरी ।।१२।।

दोहा

गुरु मन्दिर मैं[14] सुन्दरी सब सौं करि परनामु ।
आइसु पाइ सु सबनि[15] को आसन बैठति[16] बामु ।।३।।

---

१. गहनौ—सा० । भूषण—भा मु०
२. ढढ़कति—भामु०
३. अलि—सा०
४. सजि सिंगार बैठी बधू, गुर लोगनि में आय—उ०
५. अगौछि—क्यों० । अगोछि—पृ मु०
६. गुहि—उ०
७. भामु० में कवि शब्द छूट गया, का अ० में भी
८. कहै—पुमु० उ०
९. जाइ—भामु० सा० पुमु० उ०
१०. पियार —क्यों०
११. कवि—सा० हि० कामु० म० उ० । सब—क्यों० पुमु०
१२. कोरि—पुमु० । कौरि—उ० । कौटि—सुख द्वि०
१३. मांझ सदा बसियौ—उ०
१४. ते—पुमु०
१५. सषिनि—उ०
१६. बैठी—भामु० सा० पुमु० उ० । बैठत—क्यों० । बैठति—का०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त

लखि सासुहि हांसु छिपाइ रहै ननद लखि ज्यौ उपजावतु भीतिहि ।
सौतिनि त्यौं[1] सतराइ[2] चितौति जिठानिनि त्यौं[3] जिय ठानति प्रीतिहि ।।
दासिनि हू सौं उदास न देव बढ़ावति प्यारे[4] सौं प्रेम प्रतीतिहि ।
धाइ सौं बूझति बातैं बिनै की सखीनि सौं सीखै सुहाग की रीतिहि ।।१४।।

दोहा

सहज भौन बैठी बधू[5] बाढ़्यो सहज बिलास ।
तहां आइबो लाल को आलिनु को परिहास ।।१५।।

कवित्त

सोहै सलोनी सुहाग भरी सुकुमारि सखीनि समाज मड़ी सी ।
देव जू सोततें आए लला[6] मुख माहि महा[7] सुषमा घुमड़ी सी ।।
प्यारी की पीक कपोल मैं पीके बिलोकि सखीनु हंसी उमड़ी सी ।
सोचन सौहैं न लोचन होत सकोचन सुंदरि जाति गड़ी सी ।।१६।।

दोहा

बाल छिपावति राति की बातैं पति रति रंग ।
सखी जतावति[8] सहज ही तिय सनमुख सुख संग ।।१७।।

कवित्त

मो सौं छबीली छिपाउ[9] कहा परतिछ ही छाती सौं छैल लगाई हौ ।

---

१. सो—पुमु०
२. सतराति—भामु०
३. सौं—पु०मु० उ०
४. नेम—भाभु०
सा० प्रति में पंक्तियों का क्रम १, २, ४, ३ है ।
५. वहू—भामु० पु०मु० । बधू—सा० । बधु—उ०
६. देव लला गये सोवत ते—भामु०
देव जु सोवत तै आये लला—सा०
देव जू सोत ते आये लला—गं० पुमु०
देव जु सोत तै आये लला—उ०
सोततें पाठ ठीक है। इसके दो अर्थ हो सकते हैं—(१) सो ततें = सो वहाँ । २—सोत तें = सोते से, सोती हुई स्थिति से उठकर । पश्चिमी इटावा की बोली में कहा जाता है—बे सोत हैं = वे सो रहे हैं ।
७. माँझ—उ०
८. जनावत—सा० पुमु० उ०
९. छिपावै—पुमु० । छिपाव—उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देव कहै अरसौहीं रसौहीं[1] सी आई[2] हसौहीं हिये उमगाई हौ ।।
प्यारे पिया परजंक मैं पारि कै प्रेम पिऊष पियाइ पगाइ हौ ।
कामिनि कामकलोलनि[3] आजु की जामिनि चारिहू जाम जगाई हौ ।।१८।।

।। इति श्री कवि देवदत्त बिरचिते अष्ठ जामे प्रथम जामः समाप्तः ।।

।। अथ दुतीय जाम प्रथम घरी ।।

दोहा

प्रथम घरी दूजे पहर बहू छोड़ि सब खेल ।
अंग उबटावति ओट-ग्रह सोंधे सरस फुलेल ।।१।।

कवित्त

आई हुती[4] अन्हवावन नाइनि सोंधो लिये[5] बहु सूधे सुभाइनि ।
कंचुकी छोरी इतै उबटैबे कौ[6] ईंगुर से अंग की सुखदाइनि ।।
देव सुरूप की रासि निहारति पाइ तें सीस लौं सीस तें पाइनि ।
ह्वै रही ठौर ही ठाढ़ी ठगी सी हंसै कर ठोढ़ी धरै ठकुराइनि ।।२।।

दोहा

पहर दूसरे दूसरी घरी करै असनान ।
गौरि पूजि गुन गौरि वह[7] देइ बिप्र कौ दान ।।३।।

कवित्त

चंदन की बर चौकी पै बैठि जु न्हाई जुन्हाई सी जोति समूली ।
अंबर के घरि अंबर पूजी बरंबर देबि[8] दिगंबर सूली ।।

---

१ लसौहीं—सा० पुमु०
२. आइ—पुमु० । इस प्रति की चारों तुकों में भी ह्रस्व इ है ।
३ काम कलोलन कामन—सा० । काम कलोलनि कामिनि—पुमु०
४. आइ हुती—भामु० पुमु० । आई हती – क्यों०
५. लियो— क्यों० । लिये— भामु० सुख प्र० पुमु०
६. कुचीकी छोरी उनै उचढ़ैवे कों—उ०
७. वहु—पुमु० । वह—का० कामु० गं० । सो – म०
८. देव—भामु० पुमु० उ० । देबि—ना० सा० नाग्रा० म०
देबी— क्यों० । दोहे में गौरि, अतः यहाँ देबि आना चाहिए ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दान समैं[1] मनि-मानिक फूलनि[2] कंचन[3] चारु लता मनौ फूली ।
लेत बनै न बिलोकतु नैन सु बापुरे ब्राह्मंन[4] की सुधि[5] भूली ।।४।।

दोहा

घरी तीसरी दूसरे पहर गहर जनि होइ ।
भामिनि भोजन करन कौ आवति[6] सखिनु संजोइ ।।५।।

कवित्त

सुचि सौ सुचिर रुचि[7] रुचिर रसोई रची
ताके करता के कर पर वारौं सुर-रुख ।[8]
सरस परसपर छरस परसि सुघ—
राई सुथराई देखि देवऊ तजै पिऊष ।।
आसन बिमल बेलि बाल तहाँ बैठारी सु
स्वाद लेत गई भरि[9] भौंर की सी लघु भूख।
सुधानिधि-मुखी सब सुधानिधि कीनौ[10] नेक
अधर छुवाइ सुधानिधि से मुख मयूष ।।६।।

दोहा

पहर दूसरे चतुरथी, घरी घरी गति तेज ।
पानु खाति दरपन महल आवति सोंधी सेज ।।७।।

कवित्त

भोजनु कै भामिनि भमन बीच ठाढ़ी भई[11]
चूनी से चरन चारु चौकी रंगामेज[12] पर।

---

१. सने—भामु० । समै— सा० पुमु० । समें—क्यों०
२. मुकता मनि मानिक – उ०
३. चंपक—भामु० सा० पुमु० । कंचन—काग्र० नाइ०
४. वाह्मन – भामु० । बामन – पुमु० । ब्राह्मन – उ०
५. मति – भामु० सा०
६. अँचवत—भामु० । आवत—क्यों० पुमु० उ० । क्यों० प्रति के दोहा संख्या ७ में आवति है ।
७. सुचित चित—भामु०
८. के पर वारों सुरवर रूप—भामु०
ताके करतार वार वार वारौ सुरि रूप—सा०
जाके करतार कर पर वारों सुर रूप—उ०
९. भरि गई—उ०
१०. कीन्ही—भामु० । कीनो—पुमु० । कीने—गं० ना० । कीयो—उ०
११. मांझ ठाढी हुती—उ०
१२. रंगमेज—भामु० सा० उ० । रंगमौज —सुख प्र०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंननु[1] के पानदान पानन की बीरी भरि
नीरी करि दीनी लीनी मन की मजेज पर ।।
फूलन के हार भरे भौंरन के भार देव
आली पहिराए ते सुहाए तनु तेज पर ।
सौ सौ ससि को सौ आसपास तें उदौ सो करि
आइ बैठी सीसा के महल सोंधी सेज पर ।।८।।

दोहा

घरी पांचई दूसरे पहर पहिर पट सेत ।
मनि भूषन पहिरति नए सरस सुगंध समेत ।।९।।

कवित्त

दौरि आई दासी कलाधर की कला सी कमला
सी विमला सी नवला सी नव[2] सरीर ।
कंचन कचोरन[3] मैं चोवा करि एकनि कै
एकै लिए अतर गुलाब देव-नद-नीर ।।
उजरे जराउ जरे डवा भरि भरि ल्याई
मोती मनिमाल हीरालाल लै लै राखे तीर ।
एकै चित चाइ सौं चहूं[4] तें चुनि चुनि ल्याई[5]
चंदन से चाँदनी[6] से चंद से रुचिर चीर ।।१०।।

दोहा

छठी घरी दूजे पहर फुलवारी बिच बाल ।
आवति संग सखीनु लै ज्यौं फूली बनमाल ।।११।।

कवित्त

सूरजमुखी सो चंद्रमुखी को विराजै मुखु
कुंद कली दंत नासा किंसुक सुधारी[7] सी ।

---

१. एकनि—उ०
२. नौतन—नाग्र० पुमु० । नवल—काग्र० । नव—का० कामु० । नाग्रा० नाइ० सा० हि० भामु० । जे नव—उ०
३. कटोरनि—भामु०
४. चहुंधा—भामु० । चहुंतैं—सा० उ० । चहूँते—सा० पुमु०
५. लियाई—क्यों० ।
६. चाँदनी से—क्यों० और का० में पाठलोप
७. क्यंसुक संवारी—उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मधुप से लोइन[1] बधूप[2] दल ऐसे ओठ
स्रीफल से कुच कचबेलि तिमिरारी[3] सी ॥
मोती वेल कैसे फूल मोतिन मै भूषन सु[4]
चीर गुलचाँदनी सो चंपक की डारी सी।
केलि के महल फूलि रही फुलवारी देव,
ताही मैं उज्यारी प्यारी फूली फुलवारी सी[5] ॥१२॥

दोहा

घरी सातई दूसरे जाम[6] सु बाम सकाम।
कुंजभौन पिय कौ मिलति पहिरि फूल की दाम ॥१३॥

कवित्त

कुंज-गली ह्वै अली पठई नहि[7] गूढ़ थली ह्वै लै आई सु नाहैं।
देव जू दोऊ अबैह[8] मिले रस मेह सनेह नदी अवगाहैं ॥
फूलन के गहने दोऊ दोहन[9] अंतर मैं पहिरायो न चाहैं ॥
लालन[10] के गल मेलि सी राखति बाल सु चंपक-बेलि सी बांहै ॥१४॥

दोहा

खरी दुपहरी[11] बाग तें आवति मोहन-भौन।
राग सुनत अनुराग सौं दंपति सरस सलौन ॥१६॥

कवित्त

दोउ अनुराग भरे आए रागभौन भागु
मघवा सची कौ[12] लखि लागतु सहलु है।

---

१. नैन बर—भामु०
२. बंधु—भामु। बीधुप—सा०। विधुप—उ०। बंधूप—पुमु०
३. तिमरारी – सा० उ० क्यों० काअ०। तिमिरारी – गं० नाइ० पुमु०
४. के आभूषन – उ०
५. उ० में अंतिम पंक्ति नहीं+
६. पहर—भामु०
७. बन – पुमु० भामु०। वन – उ० सा०। नव – काअ० पू०। वह – ना०
८. मिले जबहीं – भामु०। अबेह – क्यों०। अबैही – सा० पुमु० उबैही – उ०
९. दुहून – भामु०। दोऊन – पुमु०। देहनि – उ०
१०. बालम – उ०
११. पहर दूसरे – भामु०। खरी दुपहरी – सा०
१२ को – भा० पुमु० क्यों०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैठे एक आसन पै[1] एकै संग एकै रंग
चल्यो न परतु अंगु कोमलु कहलु है ॥[2]
एकनि[3] लै अतरु लगायो देव दोउन कौं
छिरक्यो गुलाबु कीन्हो बीजनु बहलु है ।
लै कै कर बीनै परबीनै[4] आली अलापी सु
मंजु सुरपुंजनि सौं गुंजतु महलु है ॥१६॥

॥ इति श्री कवि देवदत्त बिरचिते अष्ठजामे दुतियो जामः ॥

॥ अथ तृतीय जामः ॥

दोहा

पहर तृतीय[5] घरी प्रथम दंपति सुभग सकाम ।
जोबन-मद आरस भरे आवत सीतल धाम ॥१॥

कवित्त

सीतल महल महासीतल पटीर-पंक
सीतल कै लीप्यो भिती छिती[6] छाती दहरै ।
सीतल सलिल भरे सीतल बिमल कुंड
सीतल अमल जलजंत्र धारा[7] छहरै ॥
सीतल बिछौनन पै सीतल बिछाई सेज
सीतल दुकूल पैन्हि[8] पौढ़े हैं दुपहरै ।
देव दोऊ सीतल आलिंगनन देत लेत[9]
सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरै ॥२॥

---

१. पर – क्यों० । पै – भामु० सुख प्र० पुमु०
२. उ० में यह पंक्ति नहीं +
३. एकन – क्यों० । एकनि – उ० पुमु० भामु०
४. क्यों० प्रति में करबीनै दो बार आया, जबकि लगभग अन्य सभी प्रतियों में दूसरो बार परबीनै या परबीन है ।
५. त्रितीय – पुमु०
तृतीय पहर पहली घरी – उ०
६. भीति छिति – पुमु० भामु०
७. जंत्र धाराधर – भामु० । जलजत्र धार – सा०
८. औढ़ि – उ०
९. लेत देत – भामु० सा० उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

पहर तीसरे दूसरी घरी भरी अनुराग।
भामिनी अरु मनभामतो[1] खेलन[2] चौपर लाग ॥३॥

कवित्त

सेज ते उतरि बैठि फेन से बिछौनन पै
मैन उमगाये नैन चैनन ढरत हैं।
रंग भरे अंग अरसौहैं सरसौहैं सोहैं
सौहैं करि भौहैं[3] रसभावनि भरत हैं॥
कहूं चित कहूं हित कहूं चित हित बंधे
दाइ न[4] सम्हारै चित चाइन लरत हैं।
संपति कै सागर वे दंपति सुहाग रंगे
खेलै सारि पासे पै तमासे से करत हैं ॥४॥

दोहा

घरी तीसरी तीसरे पहर चित्रघर[5] आनि।
देखत मूरति[6] आपनी[7] लिखी बिचित्र कलानि ॥५॥

कवित्त

चित्र बिचित्र बिलोकन कौ प्रिय चित्र के मंदिर सुंदरि आनी
आपनी औ हरि मित्र की मूरति चारु चरित्र चितै सुख सानी॥
त्यौं हसि लालन बाल कौ केलि दिखाई बिषै बिपरीति समानी।
लाज के भार लची तरुनी[8] बकुची बरुनी[9] सकुची सतरानी ॥६॥

दोहा

पहर अढ़ाई[10] दंपती हिये बढ़ाई प्रीति।
पच्छि[11] भौन आए हसत सुनत सबद रसरीति ॥७॥

---

१. भावतो – पु०मु०। क्यों० प्रति की प्रकृति के अनुसार भाउते होना चाहिए था, संभवतः भामिनि के साथ भामतो शब्द ही कवि द्वारा अधिक उचित माना गया।
२. खेलन – पुमु० उ०
३. मोहै – क्यों०। भौंहे – पुमु० उक०। भोहे – उ०
४. हारन – कुसु०। कहौ न – सा०
५ घन – क्यों०। घर – भ'मु०, पुमु०
६ क्यों० में मूरत था, किन्तु नीचे मूरति होने के कारण यहाँ भी मरति किया गया।
७. साँवरी – भामु०। आन – सा०। मित्र की – उ०
८. क्यों० प्रति में तरुणी, भामु० और पुमु० में तरुनी।
९. क्यों० प्रति में बरुणी, भामु० और पुमु० में बरुनी।
१० आठई – भामु०
११. पैठि – क्यों०। पच्छि – भामु० पुमु०। पंछीन – सा०। पक्षि – उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त

हंसत हंसत चले चित्र तें विचित्र दूनौ
जिन पर वारी देव-देवी नर-नारिका।
मोरन के सोर पछिपाली[1] ओर आए धाए
लावक चकोर दौरी हंसन की दारिका ॥
सारस सरस तूती तीतुर परसपर
पिंजरन[2] बीच बोली मंजु रव[3] सारिका।
नाचै सु कपोत सुक-पोत[4] पढ़ि पढ़ि उठै
लोकन के मोहिबे कौ कोकन की कारिका ॥८॥

दोहा

पाँच घरी तीजे पहर, दंपति उमगि सनेह।
करत बड़ाई परसपर, बरनत गुन दुति देह ॥९॥

कवित्त

आपुस मैं रस मैं रहसैं विहसैं बन[5] राधिका कुंज-विहारी।
स्यामा सराहति स्याम की पागहि स्यामु सराहतु स्यामा की सारी
एकहि[6] दर्पन देखि कहै तिय नीके लगौ पिय प्यौ कहै प्यारी।
देव सुबालम बाल को बादु बिलोकि भई[7] बलि हौं बलिहारी ॥१०॥

दोहा

छठी घरी तीजे पहर, दंपति हिलिमिलि एक।
होत परसपर रंग पट, पलटत प्रेम विवेक ॥११॥

कवित्त

नैननि की जोरी सी विराजै देव दंपति[8]
सु एकै ततिमति[9] एकै गति गहिरत[10] हैं।

---

१ पच्छिपाल – भामु०। पंछी पिलै – सा०। पक्षपाली – उ०
२. पंजरन – क्यों०। पींजरनि – भामु०। पिंजुरीन – सा०। पीजरनि – पुमु०। पिंजरनि—उ०
३. मंजुल वै – भामु०। मंजु सुर – सा० उ०
४. सुपोत – क्यों०
५. बनि ·· पुमु०। बन – उ० का० उक०
६. एक ही – क्यों० उ०। एकहि – भामु०, पुमु०
७. के साथ त्रिलोक मई – भामु०
८. संपति—पुमु०
९. अति – भामु०, पुमु०। तति—सा०, नाई०। हित—उ०
१०. बिहरति – सा०। बिहरत – पू० उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दखिवे कौ द्वै तन पै एकै मन एकै जन
एकै काज एकै लाज छिनु नहि हरत[1] हैं ।।
प्यारी इत प्यारे कौ उतहि प्यारो प्यारी कौ
निरंतर वे अंतर रतैई बिहरत[2] हैं ।
ताते स्याम-अंग-रंग स्यामा पैन्है स्याम सारी
स्यामा रंग स्यामु पटपीतु पहिरत हैं ।।१२।।

दोहा

घरी सातई तीसरे, जाम जात गुरु गेह ।
बिछुरत तब[3] सौतिन निदरि सखी सराहति नेह ।।१३।।

कवित्त

प्यारे तिहारे के मोहिवे कौ सब सौति सिंगार करै[4] बहुतेरो ।
पै अपनो पनु[5] हारि करै मनुहारि निहारि सखी मुख तेरो ।।
तेरे सुहाग के ऊपर वारियै[6] औरन को रंगुरागु घनेरो ।
देव निसाकर[7] जोति जगै न लगै जुगनूनु को पुंज उजेरो ।।१४।।

दोहा

तीनि पहर पूरन भए पूरन प्रेम उछाह[8] ।
बरनै बहू सखीन सौं[9] मेरोई बस नाह[10] ।।१५।।

कवित्त

आंखिन मैं पुतरी ह्वै रहै हियरा मैं हरा ह्वै सबै[11] सुख लूटै ।
अंगन संग बसै[12] अंगराग ह्वै जीव तें जीवनमूरि न[13] फूटै[14] ।।

---

१. हिरत – पुमु० । रहति – भामु० । हेतति – सा०
२. निरंतर औ अंतर सो तेई बहिरति – भामु०
नीरतर वे अंतर तेई बिहिरति – सा०
निरंतर वे अंतर रतेई बिहिरत – पुमु०
निरंतर वे अंतर रितैइ बिहरत – उ०
क्यों० प्रति में निरंतर के स्थान पर निरंतन
३. सब – उ०
४. सजै – पुमु० । कै – उ०
५. प्रनु० – भामु०
६. वारिये – पुमु० । वारयै – क्यों०
७. क्यों० में निशाकर
८. समाज – भामु०
९. बरनति वधु सनेह सौं – उ०
१०. पिय प्यारी को साज – भामु०
११. सदा – भामु०
१२. रहै – भामु०
१३. ह्वै – भामु०
१४. जूटै – भामु० । हूटै – सा० उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देव जू प्यारे के न्यारे न री गुन मो मन मानिक सौं नहि टूटै ।
और तिया सौं ततौ[1] बतिया कहै मो छतिया सौं छिनौ जब छूटै ॥१६॥

॥ इति श्री कवि देवदत्त बिरचते अष्ठ जामे त्रतीय जामः समाप्तः ॥

॥ अथ चतुर्थ जामः ॥

दोहा

प्रथम घरी चौथे पहर, बैठी गुरुजन ऐन ।
छिनु छिनु पलु परबतु भयो, काटे कठिनु कटै[2] न ॥१॥

कवित्त

बैठी बहू गुरुलोगन मैं पिय के बिछुरें [3]छिनु भौन न भावै ।
पाछिलो जाम भयो[4] जुगु सो अब जामिनि[5] क्यौं करि भामिनि[6] पावै ॥
चौंकि चितै रवि त्यौं[7] कवि देव सुबातन ही दबि द्यौस[8] गमावै ।
धाइ सौं बैन सखीन सौं सैन सुनै नहि बैन सुनैन नचावै ॥२॥

दोहा

दुतिय घरी चौथे पहर आवै[9] महल सिंगार ।
रंगभौन[10] पठवै सखिन,[11] साजन[12] सेज संवार ॥३॥

कवित्त

निपट उताहिल[13] सौं अति उतसाह भरी
पेम मग मनोरथ चढ़ी अभिसार के ।

---

१ न तौ—उ०
२. कटे—क्यों०
३. बिछुरे—पुमु० क्यों० । बिछुरैं—उ०
४. भयो—भामु०
५. कामन—सा० । कामिनि—उ०
६. कामिनि—पुमु० । जामन—सा० । जामिन—उ०
७. तौं—क्यों० । त्यों—पुमु० । सौं—उ०
८. द्यौ—क्यों० में स छूट गया
९. आई—भामु० । आवत—सा०
१०. महल – भामु० सा० पुमु० । मह(ल) – उ०
११. सखी – पुमु० । सखिनि – उ०
१२. साजत – भामु० । साजो – उ०
१३. उलाहित –क्यों० । उताहल—पुमु० । उताहिल—भामु० । उताईल—सा० । उतायल—उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गौरव सौं गौरी गुरुजन की सभा तें उठी
लंक मैं लचनि परै कचन[1] के भार के ।।
चंदन दै अगर कपूर दै पठाई सखी
सुख सेज सदनु समारन सवार के ।
संग लिये दासी देव कहै देवतासी आपु
सुंदरि हसति आई मंदिर सिंगार के ।।४।।

दोहा

घरी तीसरी चतुरथे जाम जु उबटि सरीरु[2] ।
सोंधो लाइ अन्हाइ[3] कै पहिरति[4] पीरो चीरु ।।५।।

कवित्त

चोवा सौं चुपरि केस केसरि सुरंग अंग[5]
केसरि उबटि अन्हवाई है गुलाब सौं ।
अतर तिलौंछी[6] आछे अंबर लै पौंछी ओछी
छतिया अंगौंछी हंसि हंसि रस भाव सौं ।।
कटि मृगराज कैसी मुख है मृगंकु[7] मानौ
तीखे देव द्रग[8] गति सीखी मृग-साव सौं ।
पैन्है[9] पीरो चीरु चारु चौकी पर ठाढ़ी भई
चाँदनी सी प्यारी पै उज्यारी महताब सौं ।।६।।

---

१. लचनि परै कचनि—भामु० । लचन परी कंचन—सा० । लचनि परे कचन—पुमु० ।
चलनि कंचन—क्यों० । लचनि परी कचन—उ०
२. घरी तीन चौथे पहर जौ उबटाइ सरीर—भामु०
चौथे जाम तीजी घरी, उबिटिन सबै करीर—सा०
त्रतिय घरी चौथे पहर, उबटन सबै सरीर – उ०
३. सोंधो ते अन्हवाइ—भामु० । सो लाई अन्हवाय—सा०
४. पहिरो—भामु० पुमु० । पहैर्यो--सा०
५. सौ अंग राग—उ०
६. अंतर तिलोंछि—भामु० । अतर तीलोछ—सा० । अतर तिलछी—पुमु०
७. मयंक—भामु० उ० । मृगांकु—पुमु०
८. तीखी दृग देव—भामु० । तीखी देव दृग—पुमु० । तीखी देव द्रग – उ०
९. पैन्हें – भामु० । पैन्हि – पुमु० । पहरि कै—उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

चौथि[1] घरी चौथे पहर, सोंधे बसन मंगाइ[2]।
निरखै भूषन रतन मनि, पहिरै मन मन भाइ[3] ॥७॥

कवित्त

अंबर अतर चोवा अंबर सौ चुनि[4] चुनि
ल्याई सहचरी सोंधो जाति न्यारी न्यारी कौ।
सुबरन संपुटनि आनी है रतनमनि
पुहुप समूह देव[5] आन्यो बन क्यारी कौ॥
मंद हांसी सुंदरि की भए सब मद द्युति
चंद्र हू ते उदित अमंद मुखु प्यारी कौ।
सून्यो[6] सो नखत जाल लून्यो सो मसालपुंजु
सहज ही दून्यो रूपु पून्यो की उज्यारी कौ[7] ॥८॥

दोहा

पांच घरी चौथे पहर, पहिरति राते बास।
करति अंग रचना विविध भूषन बेष[8] बिलास ॥९॥

कवित्त

पंकज से पाइन झमाइ रंग जावक सु
धारे बर नेवर औ बिछिया सु भाइ के।
पैन्ही अति[9] ऊजरी वे[10] गूजरी रतन जरी
बांधी कटि किंकिनी दमामे रति राइ के॥

---

१. चौथि – भामु० पुमु०। चौथे – सा०। चौथी – क्यों०। चारि – उ०
२. लगाइ – भामु०
३. निरखे भूषन परत नहि तन दुति सोभन पाइ—भामु०
निरषति मुषन रतन मन पहैरत मन मन भाइ—सा०
निरखे भूषन रतन मन पहिरे मन मन भाइ—पुमु०
पहरत भूषन रतन मन पहिरत मन मन भाय—उ०
४. चोली चोवा सौं चुपरि—उ०
५. क्यों० में दै, अन्य में देव
६. पुमु० में सूनो, इसी प्रकार लूनो, दूनो, और पूनो।
७. क्यों० प्रति में उजारी, किन्तु ऊपर की तुकें देखते हुए उज्यारी ठीक।
८. भेष—पुमु० उ०। बेष—ना० नाई० गं०
९. फेरि—भामु० सा० पुमु०
१०. वै – पुमु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बेंदी[1] देखि दर्पन मैं कंचुकी रहसि कसि[2]
बार गुहि पैन्है हार देव चित्त चाइके।
अंजनु दै नैनन अंतर[3] मुखु मंजनु कै
लीन्है[4] उजराइ कर गजरा जराइ के ॥१०॥

दोहा

छठी घरी चौथे पहर, कर गहि दरपन देखि।
रंग रंग भूषनन तें सोहै अंग[5] बिसेषि ॥११॥

कवित्त

सोनो से सुरंग सब वैसे ही[6] लसत अंग
जगमग्यो जोबन जवाहर सो संग[7] तासु।
रूप तरु कुंद काम-कंदुक से सोहैं कुच
चन्द्रमा सो बदनु[8] अमंद दुति मंद हासु॥
सोभा की निकाई देव काइ की निकाई[9] हूतें
नीके भए भूषन भ्रमर भ्रमैं[10] आसपासु।
चौगुनी चटक तन चीर की चटक[11] हूतें
सौगुनी सुगंध तें सरीर की सहज बासु ॥१२॥

दोहा

रह्यौ दिवस जब द्वै घरी, साजि सकल सिंगार।
उद्दित ह्वै अभिसार कौ बैठी परम[12] उदार ॥१३॥

कवित्त

सरस सुजाति अति सुंदर बरन तनु
बोलति मधुर महाकबिनु की बानी सी।

---

१. बैठी—भामु०
२. रहिस कसी—पुमु०। रहसि कसि-सुख द्वि०
३. अतर – भामु सुख प्र० पुमु० उ० अंतर – सा०
४. लीनी – क्यों०। जब ऊपर पैन्है हार है तो लीन्है यहाँ भी होना चाहिए। उ० की प्रथम दो पंक्तियाँ पर्याप्त अशुद्ध
५. रंग भूषनन सौं बनें सोहत रंग – उ०
६. वेसे ही – क्यों०। वैसई – भामु०। वैसै ही – सा०। वैसे ही – पुमु०। वैसे ई – उ०
७. अंग – भामु०। रंग – उ०
८. आनन – भामु० सा० पुमु० उ०
९. निक्याई – क्यों०
१०. भ्रमैं – भामु०। भरे – पुमु० उ०। भ्रमे – कामु०। क्यों० प्रति में लोप
११ क्यों० प्रति में चकट, भामु० सा० उ० पुमु० में चटक
१२. प्रेम – उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तोरन तिलक पै[1] अलिक पौरि चिलकति
धुजा[2] द्रग मीन रतिराज रजधानी सी।
रंभोरु[3] तिलोत्तमा सुकेसी मंजुघोषा संग
सदा उरबसी देव देवपति-रानी सी।
सकल सिंगार करि सोहै आजु सिंघोदरि[4]
सिंघासन बैठी सिंघवाहिनी भवानी सी ॥१४॥

दोहा

पच्छिम[5] पूरब भानु ससि अथवत उदवत वार।
रंगभौन[6] भामिनि चली भली भांति अभिसार ॥१५॥

कवित्त

मांग गुही मोतिन भुजंगम सी बेनी उर
उरज उतंग औ मतंग गति गौन की।
अंगना अनंग की सी पहने सुरंग सारी
तरल तुरंग मृगचालि[7] द्रग दौन[8] की॥
रूपे[9] की तरंगनि वरंगनि के अंगनि तें
सोंध[10] कै अरंग लै तरंग उठै पौन की।
सखी संग रंग सौं कुरंग नैनी आवै तौ लौं
कैयौ रंग-मई भूमि भई रंगभौन की ॥१६॥

(इति श्री कवि देवदत्त बिरचिते अष्ठ जामे दिवस चेष्टा वरननं
चतुर्थ जामः समाप्तः।)

---

१. सो – उ० हिं०। सों – पुम्०। पै – काम्र०
२. ध्वजा – भाम्०। धुजा – सा० पुम्० उ०। धजा – क्यों०।
३. रंभारु – पुम्० उ०। रंभोरु – नाई०
४. सातौ सुख – उ०
५. पछिम – क्यों० उ०। पच्छिम – भाम्० पुम्०
६. महल – भाम्० सा० पुम्०। भवन – काम्र०। भौंन – उ०
७. दृगचाली – भाम्०
८. दोन – क्यों०। दौन – भाम्० सुख प्र० पुम्०। दौंन – उ०
९. रूप – भाम्० सा० पुम्० उ०। रूपे – सुख प्र० रसविलास – ४-३१ में भी
१०. सोध – क्यों०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(अथ पंचम जामः)*

दोहा

सांझ समै पहिली घरी, तिय आवति[1] रति धाम।
दंपति अति गति मति[2] मिलत[3], सकुचत सखिनु सकाम ॥१॥

कवित्त

दासी सखी कमला सी लिये संग आइ[4] गई अबला सुख सानैं।
ताही समै रंगभौन मैं भाउतो आयो उतै अति ही हितु मानैं॥
नैंक ही के बिछुरें जुग से गए सोचत दोऊ सकोच समानैं।
सेज पै सौहें जऊ मिलि बैठे तऊ मिलिबे कौ महा अकुलानैं ॥२॥

दोहा

राति जाति जब द्वै घरी बिरहातुर ह्वै पीय।
मिल्यो चहतु इत सकुचि कै[5] आलिनु निरखति तीय ॥३॥

कवित्त

पान दये हंसि प्यारी कौ प्यारे सु प्यारी बहू हंसि[6] भौंह मरोरी।
बांही[7] गही ललचाइ लला मुरि[8] नाही करी[9] मुस्क्याइ किसोरी॥
तोरी न जाति जिठाई सखीनि की देव ढिठाई[10] करै नहि थोरी।
लालु ज्यौं ज्यौं चितवै तिय त्यौं तिय त्यौं त्यौं चितौति सखीन की ओरी ॥४॥

दोहा

तीनि घरी बीते निसा देखि दंपती भाउ।
चतुर अली मुरि मुरि चलीं[11] सबही के चित चाउ ॥५॥

---

*(जहाँ लिपिकार याम के आरम्भ में सूचना देना भूल गया है, वहाँ मैं ने अपनी ओर से लिख कर कोष्ठक में बन्द कर दिया है। – ले०, सं०)

१. आवै – भाम०
२. मति गति – उ० पुम०। गति मति – गं० काम० काग्र०
३. मिलति – पुम०
४. आइ – भाम० सुख प्र०। आई – क्यों०। आय – उ०
५. अरु – भाम०। सौं – उ०
६. लखि – भाम० पुम० उ०
७. बाँह – पुम० उ०
८. मुख – भाम०
९. कही – भाम०
१०. तोरि न लाज जेठानी सखी जन देव ढिठाइ – भाम०
तोरिनु जाय सषीन की कांन सुदेव ढिठाई – सा०
तोरी न जाइ जेठाइ सखीन की देव ढिठाई – पुम०
तीरो न जाय सखीनि की कांनि सुदेव ढिठांई – उ०
११. चली – पुम० उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त

बितौत[1] बनै नहि रंग की रैनि इतौत चितौत सखीनु कन्हाई[2] ।
चुरैल ह्वै लागी अज्यौं लगि लाज सु कौलगि बाधै[3] हिये मह ल्याई ।।
मनोज कों[4] ओजु सह्यौ न परै कवि देव रह्यौ न[5] परै चुपुच्याई ।
चलीं रस बातैं भली इक बार चलीं मुखु मोरि[6] अली[7] मुसिक्याई ।।६।।

दोहा

अरध जाम जामिनि गए सखिन सकुचि मुसिक्याइ ।
देति बिदा तिय इतहि पिय चितवत चितु ललचाइ ।।७।।

कवित्त

दीन्ही[8] बिदा मुसक्याइ सखीन कौ कीन्हीं कछू भ्रकुटी भरि भालहि ।
चातुरता चित बाढ़ी किसोरी के आतुरता लखि देव गुपालहि ।।
सौहैं चितै अरसौहैं तिया तिरछौहैं हंसौहैं सह्मारति मालहि ।
पैनी[9] चितौनि सौं चूरि कै कै[10] चितु दूरि भए ललचावति लालहि ।।८।।

दोहा

पाँच घरी जामिनि गए लखि उद्दीपन साज[11] ।
पूरन रति पति सरस तिय[12] तजत परसपर लाज[13] ।।९।।

कवित्त

चढ़्यो नभु चंदु बढ़्यो जु अनंदु[14] कढ़्यो मुखु[15] कंदु सो देव द्रगंचलु ।
तप्यो अति अंगु जप्यो रतिरंगु[16] थप्यो पति संगु चप्यो चित चंचलु ।।

---

१. चितौत – भाम्‌०
२. कन्याई – पुम्‌० । कन्हाई – उ०
३. बांधे – भाम्‌० पुम्‌० । बांधै – सा० । बांधो – उ०
४. की – पुम्‌० । कौ – उ०
५. रहो न – भाम्‌० । रह्यो न – पुम्‌० । रह्यो न – स० । रझानु – क्यों०
६. मंदि – उ०
७. सखी – भाम्‌०
८. दीनी – क्यों० उ० सा० सुख प्र० । दीन्हो – भाम्‌० पुम्‌०
९. नीची – उ०
१०. चूरि कै – भाम्‌० । ककै – सुख प्र० पुम्‌० । कै कै – सा०
११. लाल – उ०
१२. गति – भाम्‌०
१३. बाल – उ०
१४. अमंद – सुख प्र०
१५. सुख – सुख प्र० पुम्‌० । मुख – भाम्‌०
१६. जप्यौ रतिरंग तप्यौ अति अंग – भाम्‌०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हियो करि मैं न लियो सर मन दियो मरम न सह्यारिक सचलु।
मदै उनमाद गदैगद नाद बदै रसबाद ददै मुखु अंचलु ॥१०॥

दोहा

जब बीते[1] छ घरी निसा छूटै सबै छिपाइ[2]।
छैल छबीली बाल कौ छाती लेतु लगाइ ॥११॥

कवित्त

लीनी उसास मलीनी भई द्युति[3] दीनी फुंदी फुफुंदी की छिपाइ कै।
लागी सुधारन आंगी बहू लखि देव गुपाल उठे अकुलाइ कै॥
औचक ही उचि ऐंचि लई गहि गोरे खए[4] कर कोरे[5] उचाइ कै।
चंपकमाल-सी बाल भुजान मैं राखी सुजान हिये सौं लगाइ[6] कै ॥१२॥

दोहा

सरस भाउ बस[7] भाउतो घरी गए निसि सात।
बिबिध रीति[8] उपभोग-रस[9] पीवत पै न अघात ॥१३॥

कवित्त

तोरि तनी अपने कर कंचुकी डारी उतारि उतै पिय ही है।
ऐपन पीड़ सी मीड़त ज्यौं तिय त्यौं लट[10] सी लपिटै हिय[11] ही है॥
ज्यौं-ज्यों पियै पिय ओठन को रसु देव जु बाढ़ति प्यास तही है।
चंपक-पात[12] से गातन मैं नख-घातन[13] देत अघात नही है ॥१४॥

---

१. बीती—पुमु० उ०। बीते – कामु० ना० गं० प्र० नाअ० नाआ० भामु०
२. उपाय – उ० कामु सा० हि०
३. तिय – सा०उ०। दुति—पुमु०
४. बहे – भामु०
५. कोर—भामु० सा० उ०
६. लपटाइ – भामु०
७. रस – भामु०
८. रीति – भामु० पुमु०। रीत – उ०। रात – सा०। राति—क्यों०
९. की – उ०
१०. पट – सा० उ०
११ पिय – भामु०
१२. पत्र – भामु०
१३. मैं न नखक्षत – भामु०। में सुनखक्षत – उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

प्रथम पहर बीते[1] निसा करत सुरत सुख संग ।
सुभग सार[2] संसार मैं सरस परसपर रंग[3] ।।१५।।

कवित्त

गूजरीं बजावैं रव रसना सजावैं
कर चुरी झनकावैं[4] गरो गहति गहकि कै ।
मुख मोरि त्यौरी तोरि भौंहैं नासिका मरोरि
देव ईबी सीबी करि बोलति बहकि कै ।।
अंखियां अधर चूमि हा हा छाड़ो कहै झूमि
छतिया सौं लगी लगलगी सी लहकि कै ।
कीन्हौं सुख संगु रसरंगु मन भायो कोई
अंगु न[5] दिखायो पिय डीठिहि डहकि कै ।।१६।।

।। इति श्री कवि देवदत्त बिरचिते अष्ठ जामे पंचमो जामः समाप्तः ।।

(अथ षष्ठ जाम)

दोहा

रैनि दूसरे जाम की प्रथम घरी सुरतंत ।
रस उपजावति चतुर[6] तिय करि करि भाव अनन्त ।।१।।

कवित्त

हौस बुझाइ[7] करी सुख केलि तिया तब ही सब अंग सुधारे ।
तानि लियो पटु घूघट मैं झलकैं द्रग लाज[8] भरे सु झपारे[9] ।।

---

१. बीती – पुमु० ।
२. सुभ सागर – भामु० । सुभग भेग – उ० ।
३. करत मुरत सुख संग – क्यों० प्रति के लेखक ने द्वितीय चरण के भ्रमवश ऐसा लिखा । भामु०, सा०उ० के अनुसार पंक्ति-संशोधन ।
४. छम कावैं – भामु० ।
५. औगुन – भामु० ।
६. सरस – उ० ।
७. हौस गँवाइ – भामु० । होस गमाय (सा०) । हौस गमाय – उ० । हौंस गँवाइ – पुमु० । हौं समुझाइ – सुखप्र० गं० । हौस बुझाई – सुखद्वि० ।
८. लाल – भामु० ।
९. झपकारे – भामु० सुखप्र० पुमु० । कजरारे – सा० उ० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देव सु देखि लगे ललचान लला के कपोल कँपे[1] पुलकारे।
मार मनो सर[2] सार[3] के सान दै[4] एक ही बार हजारक मारे ।।२।।

दोहा

जाम दूसरे दूसरी घरी रैनि[5] जब जाति।
सुरत सराहत दंपती हसत लसत[6] बहु[7] भांति ।।३।।

कवित्त

ओट दै दै[8] पहरी अंगिया सिर चीरु धरयो अँचरा उर चाहाँ।
लाल लई[9] ततकाल हियो भरि देव गुपाल गही गल बांहाँ ।।
और जिते[10] सुख ते बिसराहत पै[11] रतिकेलि सराहत नाँहाँ।
डीठि बचाइ लचाइ[12] कै लोचन भौंहैं नचाइ कह्यो हंसि हाँ हाँ ।।४।।

दोहा

निसा[13] दूसरे पहर की जाति घरी जब तीनि।
प्रकटतु प्रेम[14] दुहूनि की बातनि बिरहु पछीनि[15] ।।५।।

कवित्त

दोऊ अंक भरे परजंक परे सुख नीद दबी तिन[16] मैं तिय[17] पै।
पिय प्यार सौं प्यायो पियो इक आसव देव अनंदु बढ़्यो जिय पै ।।[18]

---

१ कपोलन पै – सा०
२. रस – उ०
३. मार – सा०
४. रोस कै – भामु० सा० । रोस – उ०
५. राति – भामु०
६. लसत हँसत – पुमु०
७. सुभ – उ०
८. ददै – पुमु० उ०
९ गही – भामु०
१०. जिये – भामु०
११. तेऽब सराहत वै – भामु०
१२. नचाइ – क्यों० हि० । रचाइ – ना० । चलाइ – कामु० भामु० सा० । लचाय – पुमु० उ०
१३. रैनि – पुमु० उ० । निसा – का० काम्र० कामु० सा०
१४. प्रीति – पुमु० । प्रेम – का० काम्र० कामु० सा० हि० प्र०
१५. बिरह न छीन – भामु० । चतुर प्रवीन – सा० । पछीन – उ०
१६ तन – भामु०
१७ पिय – उ०
१८. पिय प्यारी सो प्यारो कियो एक आसन देव अनन्त बढ़ो सुख पै – भामु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब प्यारे कह्यो अब[1] आपनी प्यारी को राखो हमेल करे[2] हिय पै।
तब प्यारी कह्यो बलिहारी करौं अपनो तनु हौं अपने पिय पै ॥६॥

दोहा

डेढ़ पहर बीते[3] निसा पूरन प्रेम बिलास।
रस मैं अनरसु सो कछू होतु हासु परिहासु[4] ॥७॥

कवित्त

गुन रूप अनूप है एक[5] तुही तिय तोसी न और मही महियाँ।
कहुँ[6] होइ हमारे कहा कहियै तब तौ हम सौं मघवा नहियाँ ॥
परजंक परे दोऊ अंक भरे सुधरे मुखु[7] दोऊ दुहू बहियाँ।
सुनि यौं भई भावती के मुख की छिन[8] मैं छबि बादर की छहियाँ ॥८॥

दोहा

पाँच घरी निसि पहर पर[9] प्रेम कलहु हुइ जातु।
रूठि रहति तिय मानु करि रस[10] मैं रिसु उतपातु ॥९॥

कवित्त

परिहासु कियो हरि देव सुबाम को बाम सु नैन नच्यो[11] नटु ज्यौं।
कर तीखे कटाछ कृपानु भयो मनु यो रन[12] रोसु भर्‌यो भटु ज्यौं ॥
लपिटाइ गही[13] खटपाटी करौंटु लै मान महोदधि को तटु ज्यौं।
कटु बोल सुने पटुता मुख की पटु दै पलटी[14] उलट्‌यो पटु ज्यौं ॥१०॥[15]

---

१. तब – भाम्‌० । हसि – उ०
२. किये – पुम्‌० उ०
३. बीती – पुम्‌० उ०
४. परसपर – उ०
५. रूप – उ०
६. कहूं – क्यों० । कहुं – पुमु०
७. सिर – पुम्‌० उ०
८. छित – पुम्‌० । छिन – उ०
९. द्वै पहर – पुम्‌० । दूजे पहर – का० । पहर पर – ना० नाम्र० काम्‌० उ०
१०. कै – पुमु० । कै – उ०
११. नचे – भाम्‌०
१२. सु मनो रन – भाम्‌०
१३. लचि लाइ रही – भाम्‌० । लपिटाइ लगी – उ०
१४. लपटी – उ०
१५ उ० हि० सा० में पंक्तियों का क्रम १, ३, २, ४ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

छ घरी निसि दूजे पहर जानि[1] मानिनी बाल ।
प्रीति रीति सौं जीति रिस लेतु अंक भरि लाल ।।११।।

कवित्त

हंसि पीछे तें देव सुजान भुजान मैं लीन्ही लपेटि तियौ भरि कै ।
सतरानी बहू रति रानी सी लै अधरामृतु ऐंचु पियो[2] भरि कै ।।
तब रूसि सकी न भरी[3] सिसकी अंसुवा भरि नैंन जियौ[4] भरि कै ।
अकुलानी[5] बियोग व्यथा भरि[6] बाल लियो भरि लालु हियो भरि कै ।।१२।।

दोहा

सात घरी निसि पहर पर[7] दंपति प्रीति बढ़ाइ ।
नीदत दोऊ मान कौं मन[8] तें कोपु कढ़ाइ ।।१३।।

कवित्त

जाको मुखु देखत ही देखति लहति सुखु
जाहि[9] देखि देखि दिख साध न[10] बुझाई री ।
तासौं करि तीखी डीठि पीठि दीन्हीं[11] भौंहैं तानि
या[12] जी की बहाऊ बानि देव कहा[13] पाई री ।।
का सौं कहौं कहा जानौं कौने हरी मेरी मति
न्यारो[14] कियो[15] प्रानपति[16] प्यारो[17] जो कन्हाई[18] री ।

---

१. जामिनि – क्यों०का० सा० गं० । जानि – नाग्र० नाग्रा० नाई० कामु० पुमु० । कामिनि – उ०
२. अधरारस ऐंचि लियौ – उ०
३. नहिं लै – उ०
४. लियो – पुमु० । जियो – ना० नाग्र० नाग्रा० नाई० । लीये – उ०
५. अकुलाइ – भामु० सा० पुमु० । अकुलाय – उ० । अकुलानी – का०
६. बिदा करि – भामु०
७. द्वै – पुमु० (लगभग सभी प्रतियों में पहर की संख्या नहीं दी गयी, उ० में भी नहीं)
८. उर – उ०
९. क्यों० में जाहि की पुनरावृत्ति
१०. देखे देव नेकु साधन – भामु०
११. दीनी – क्यों० सा० उ० । दीन्हीं – पुमु० । दैकै – भामु०
१२. अति – भामु०
१३. कहाँ – पुमु० । कहां – उ०
१४. न्यारी – भामु०
१५. झीनों – उ०
१६. आनि – भामु०
१७. प्यारी – भामु०
१८. कहाई – भामु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

या को कह्यो मानि मानु कीन्हो मनुभाउते[1] सौं
मैं न जानी[2] मेरो मनु मेरो[3] दुखुदायी री ॥१४॥

दोहा

अरध राति पूरन[4] भए पूर न प्रेम समात[5] ।
पिय प्यारी हिलिमिलि बिमल[6] बिवि एकै ह्वै जात[7] ॥१५॥

कवित्त

फूल की सी माल बाल लाल[8] सौं लपटि लागी
तन मन ओट पट कपट पिलि[9] गए ।
देखि मुख जिये दोऊ दुहूं के अधर पिये
हियो दिये हिये हितु किये यौं हिलि गए ॥
नैन लागे बैन लागे देव चित्त चैन लागे
दुहून के कौंल[10] खरे खेल ही खिलि गए ।
भरिकै सरस रस ढरिकै समाने भुज[11]
जाने न परत जलबूंद ज्यौं मिलि गए ॥१६॥

॥ इति श्री कवि देवदत्त विरचिते अष्ठजामे षष्ठो जामः समाप्तः ॥

(अथ सप्तम जाम)

दोहा

रैनि[12] तीसरे पहर[13] की प्रथम घरी सुखु पाइ ।
दंपति नाना भाइ[14] की प्रीति करत मन भाइ[15] ॥१॥

---

१. मनभावन – पुम्० । मनभावते – काम्० सा० हि० प्र०
२. जानो – भाम्० पुम्० । जानी – सा० । जान्यो – उ०
३. मोको – भाम्०
४. जामिनि गति – उ०
५. समाज – उ०
६. बिमलि – क्यों०
७. जबै बिधि मति एकै भाँति – भाम्०
८. जाल – क्यों० । लाल – उ० सा० पुम्० । बाल – उक०
९. कुपिलि गे – भाम्०
१०. कोल – क्यों० । कौल – सा०पुम्० । कौंल – उ० । खल – भाम्० । कमल – हि०
११. समाने जुग – पुम्० । मनोज जुग – सा०हि० । मनोजु जुग – उ० । समाने भुज – का०
१२. रात – भाम्०
१३. जाम – उ०
१४. भांति – पुम्० । भांति अनेक – उ०
१५. करत सुखु पाइ – क्यों० का० । करै मन भाइ – भाम्० । करत मन भाय – सा०उ० करत मन भाइ – पुम्०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त

रूसने बिसरि गए हिलिमिलि एक भए
चित हित नए नित नए ई नियत[1] हैं।
प्रेम[2] रस मगन उछाह उमगन भरे
मनोरथ मगन ते पगन छियत हैं ॥
गातन मैं गात न सह्यारत भरत अंक
बिरह बिहात नहि बातन जियत हैं।
जोरे मुखु सौं मुखु निचोरे[3] मनौ ऊख रस
अमृत[4] मयूष ते पियूष से पियत हैं ॥२॥

दोहा

पहर तीसरे दूसरी घरी रैनि की[5] होति।
कहत कहानी दंपति कछू जगत[6] कछु सोत ॥३॥

कवित्त

प्रेम के प्रसंग-संग भीजे रस-रंग देव
अंगनि अनंग की तरंग उमगति है।
वरसत सुरस परसपर परखत
हरषत[7] हिये हौस[8] जिय मैं जगति है ॥
स्वेदजल झलकत ललकत मुलकत,
पुलकत[9] बिपुल बिपल[10] द्रग गति है।
हरे हरे हेरि हेरि हंसि हंसि फेरि फेरि
कहानी की कहनि कहा नीकी[11] लगति है ॥४॥

---

१. जिय जानियत – भामु०। नये ई नियतु – सा०। नये ईनियत – पुमु०। नये [इ] जियत हैं—उ०
२. पेम – क्यों०। प्रेम – उ० पुमु०
३. पोखे – भामु०
४. अधिक – भामु०
५. जब – उ०
६. कछु जागत – भामु० सा० पुमु० उ०
७. हरषत परषत – उ०
८. हौंस – पुमु० उ०
९. पलपल ललकत पुलकत – पुमु० उ०
१०. बिपुल – पुमु०। बिपल – नाश्रा० उ०
११. कहा नीकी कहनि कहानी की – पुमु०
कहांनी की कहनि कका नीकी – उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

पहर तीसरे तीसरी घरी रैनि जब जाति ।
रस आरस मद मोद[1] सौं प्रीति रीति सरसाति ।।५।।

कवित्त

कहत कहानी हियं उमहत दोउन[2] के
सौहैं सुख लहत न रहत इतौत हैं ।
दुहूं मुख चंद के चकोर भए[3] दोऊ नैन
कंजन के भौंर[4] दोऊ दोहुन हितौत हैं ।।
अंकन भरत तऊ[5] हौसनि मरत[6] देव
झूमत चिबुक चारु चूमत बितौत हैं ।
गात न सह्यारै रस बातन सुनत[7] अध—
रात न गनत[8] अधरा-तन चितौत है ।।६।।

दोहा

रैनि अढ़ाई पहर गत पौढ़त है परजंक ।
दंपति सोवत[9] जगि परत भरत अंक सौं[10] अंक ।।७।।

कवित्त

पैज करि पौढ़े परजंक मैं मयंक सम
सोवै न निसंक अंक अंकनि घसि[11] उठै ।
पलकैं लगैं न मूंदि बल कै रहत तऊ
लोचन उछल कै[12] पै छलकै ससि उठै ।।
राखी न रहति जऊ हांसी कसि राखी देव
नैसिक उकसि[13] मुख ससि से लसि उठै ।

---

१. नींद – पुमु० उ० । नोद – सा० । मगन – भामु० । मोद – का०
२. उमहत हिय दंपती – पुम० । उमहत हिय दंपति – उ०
३. भए – लुप्त उ०
४. भोरे – भामु०
५. दोऊ – पुमु० भामु० उ० । तऊ – का० काम्र० सा० गं०
म – पुमु० उ० । भरत – कामु० क्यों० । मरन – उक०
७. उचारै – भामु० । ढरत – उ०
८. अधरा रस पियत – भामु० । अधरात न गनत – सा०
९. क्यों० में सोवति, किन्तु इस प्रति में अन्यत्र दंपति के साथ इकारान्त क्रिया का प्रयोग नहीं ।
१०. परसपर – उ०
११. उकसि – भामु० । पसि – सा० । घसी – उ०
१२. लोचनऊ छलकै – पुमु० । लोचन उछल कै – सुखद्वि०
१३ उका – भामु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर न बोलै मन मन ही कलोलै करै
पुलकैं कपोलैं अनबोले ही हसि उठै ॥८॥

दोहा

पाँच घरी तीजे पहर रैनि दंपती जागि।
पीवत आसव परसपर डोलत उर सौं लागि ॥९॥

कवित्त

राजकुल रूपमद जोवन अनूप मद
देव रस भूप मद छाके घने घूमि घूमि।
सुरति बिसारि सारि गल भुज डारि डारि
डोलैं डर डारि डारि भौन भौन भूमि भूमि ॥
चौंकि चितै देत हंसि देत महासुख देत
आंकौ भरि मधु भरि देत दोऊ झमि झूमि।
आपुस मैं आपु समैं[1] रूसै रसु[2] राखै मुंह
सामुहै कै राखै मृदु भाखै आंखैं[3] चूमि चूमि ॥१०॥

दोहा

रैनि तीसरे पहर की छ घरी मद सौं छाकि।
झुकि झुकि झूमत परसपर दंपति अति मति[4] थाकि ॥११॥

कवित्त

जोबन के मद उनमद मदिरा के मद
मदन मदालस लसत बतरस[5] पर।
भूलि भूलि बोलत हंसत मुख फलि फूलि
झूलि झूलि रहत सुबदन दरस पर ॥
देव कहै आपु बूझै और को[6] प्रसंगु आगे
सुधि न सह्यारै बुधि आनंद बरस पर।
झपकि झपकि झकि झकि[7] उठि बैठत है
झूमि झूमि झुकि झुकि परत परसपर ॥१२॥

---

१. रमैं – भामु०
२. रुष – उ०
३. मुख – भामु०
४. मद – भामु० सा०। मति – पुमु० प्र० उ०
५. मदन के मद उमदार बरबस – भामु०
६. आपु औरे बूझत – पुमु०। आप और बूझत – उ०
७. झुकि क – पुमु०। झूकि झूकि – उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

सात घरी तीजे पहर रैनि महारसु भोइ[१] ।
दंपति अति आरस भरे जात गात लगि सोइ ॥१३॥

कवित्त

भारी रस भीजै भाग भाजन[२] भुजनि भरे
भाउत सुभाइ उपभोग भोग भोइ गए ।
खेलत ही खेलत उखेलत ही आंखिनु[३] सु
खिन-खिन खीन ह्वै खरेई खीन खोइ गए[४] ॥
मल्लिका मिलत[५] परिमल मलयाचल के
मुदित अमोद मदिरामद सौं मोइ[६] गए ।
सीतल सुगंध मंद सामुहें समीरन सु—
—खद सुख पाइ सुख सेज परि सोइ गए ॥१४॥

दोहा

तीनि पहर पूरन निसा सपने कंत बियोग ।
होति[७] बाल ब्याकुल महा बिरह बीच संजोग[८] ॥१५॥

कवित्त

संग सोवत ही पिय के सुख सौं मुख सौं मुख सौं[९] न बियोगु सहै ।
सपने महि लाल[१०] बिदेस चले सु बिथा कवि देव कहां लौं कहै ॥
तिय रोइ[११] सकी न सुनी सिसकी हंसि प्रीतमु त्यौं भरि अंक गहै ।
बड़ भागी लला उर लागी जऊ तिय जागी तऊ[१२] हिलकीन रहै ॥१६॥

(इति श्री कवि देवदत्त बिरचिते अष्ठ जामे सप्तमो जामः समाप्तः ।)

---

१. मोइ—भामु० पुमु० । भोइ—प्र० । भोय—सा०
२. भायनि—भामु०
३. अखिनु—क्यों० । आंखिनि—भामु० । आखिन—सा० । आंखिन—पुमु० उ०
४. खो गए—क्यों० में इ छूट गया
५. मुदित—उ०
६. भोइ—क्यों० । मोइ—पू० पुमु० उ०
७. होत—क्यों०
८. संयोग—पुमु० । संजोग—सा० उ०
९. पिय के संग सोवत ही सुष सौं मुष पै मुष पैं—उ०
१०. स्याम—भामु० पुमु० सा० उ० । लाल—सुखप्र० गं० प्र०
११. रोई—पुमु० । रोय—उ०
१२. लागी जऊ—क्यों० । जागी तऊ—भामु० पुमु० । जागी तउ—उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(अथ अष्ठ जाम)

दोहा

रैनि पहर चौथे घरी पहिली होत सचेत ।
नीदत सपनो नीद तजि बातन ही सुख लेत ।।१।।

कवित्त

प्रान पियारे तिहारे गरे लगि वा सुख सौं सनि सोइ गई जब[1] ।
सापनो कै वह सा परतीकु[2] जु देव बिदेस कौ जान कह्यो[3] तव ।।
हाय कहा कहौं भूलतु नाहिन सूल सो सालतु है उर मैं अब ।
बैरिनि वे बतियां बिसु सी बिसरें न अज्यौं बिसु रैनि भई सब ।।२।।

दोहा

घरी दूसरी रैनि की चौथे पहर समोद ।
बिरहु मिटावत दंपती दुति देखत चहुं[4] कोद ।।३।।

कवित्त

उर सौं लगाई बधू बिधुर अधर चूमि
मधुर सुधा तें बातें सुनि बे सुभाव की[5] ।
बोलि उठी[6] कोकिला की काकलीनि कलित
कलापिनु की कूकें कल कोमल बिराव की ।।
आइ[7] गई झूकें मंद मारुत की देव नव —
मल्लिका मिलत मलयद्रुम के दाव की ।
उखिली[8] सुबासुग्रह अखिल खिलन लागी
पलिका के आसुपासु कलिका गुलाब की ।।४।।

---

१. सोइ गई सनि वा सुख मों जव—पुमु०
सोइ गई सुनि वा सुष सौं जव—उ०
२. सो परतच्छ—भामु० । सा परनी कुंज—सा० । सी परनीक जु—उ० । सा परतीक जु—पुमु०
३. कहो—क्यों० । कह्यो—उ० । कह्यो—पुमु०
४. च —क्यों० । चहूं—उ० । चहूँ—पुमु०
५. वैस भाव—भामु० सा० । वे सुभाव—उ० सुखप्र० । वै सभाव—कामु० सुखद्वि० । सुनिए सुभाव—पुमु०
६. कानपरी—भामु० सा० पू० पुमु० । बोलि उठी—सुखप्र० प्र० । कांनि परी—उ०
७. आई—पुमु०
८ डाखली—भामु० कामु० । ऊखली—सुखप्र० दे०सु०, पुमु० । उखली—सा० उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोहा

घरी तीसरी[1] रैनि की चौथे जाम सकाम।
प्यारो लखि प्यारी सकुचि होत उदास ससाम[2] ॥५॥

कवित्त

परे परजंक पर परत न पीके कर
छरहरे छुवत बिछौना पै छुरत है।
चीकनै चलेई जात अंगलागे[3] अंगिरात
गाढ़े गहे ढहरात गूढ़ ह्वै ढुरत है॥
बिमल बिलास ललचावति लला को चितु।
ऐंचत[4] इतै कौ वे उतै ही कौ मुरत[5] है।
पारे ही[6] के मोती किधौं प्यारी के सिथिल गात
ज्यौं ही ज्यौं बटोरियत त्यौं त्यों बिथुरत है ॥६॥

दोहा

चारि[7] घरी चौथे पहर रैनि रमनु[8] परबीनु।
पूछि पहेली दाउ रति हारतु तिय रसु लीनु ॥७॥

कवित्त

आतुर उताल अति चातुर चपल लाल
सकुचीली बाल के उनीदे नैन[9] अरसात।
ताही छिन छैल छलु कीन्हो[10] छबीली सौं देव
दाउ रति रंग बदि बूझत पहेली बात॥
पूछै जो पियारी[11] ताहि जानत अजान होत[12]
आपु पूछि प्यारी कौ जताइ कै जिताइ[13] जात।

---

१. तीसरे—क्यों०। तीसरी—भामु० पुमु० उ०
२. सुबाम—भामु०। ससाम—सा० पुमु०। ससाम—उ०
३. अंगलाये—क्यों०। लगे—भा०। लागी—सा०। लागे—पुमु० सुखप्र० पू०। लागैं—उ०
४. रोचत—भामु०
५. सरत—भामु०
६. पारद—पुमु० उ०। पारध—पू०। प्यार—काम्र०। पारे—मुखद्वि०
७ तीन—सा०
८. रवन—पुमु०। रमन—सा० उ०
९. अंग—पुमु० उ०। नैन—का०
१०. कीन्हो—भामु०। कीनी—सा०। कीनो—पुमु०। कीनो है—काम्र० कामु० का०। की—क्यों०। कीनौं—उ०
११. पियारी—भामु० सा० पुमु०। प्यारी—क्यों० उ०
१२. पिय—भामु० सा० उ० पुमु०। होत—का० काम्र०
१३. जिताइ कै जताइ—क्यों० का०। जताइ कै जिताई—उ०। जताई कै जिताइ—पुमु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीति जुवती को सो समुझि हिय[1] फीकी होत
हारि[2] हरि पी[3] की ते हंसत हरषत गात ॥८॥

दोहा

चारि घरी निसि रहत ही पिय कौ जीति अजीत[4] ।
अहंकार करि प्रेम मैं[5] करति सुरति[6] बिपरीत ॥९॥

कवित्त

बांहन बिधाए[7] बांह जघन जघन मांह
कहै छांड़ौ नाह नाहि गयो चाहै मुचि कै ।
अंचरि[8] उछरि छरि झरि झरि झीने तार
बार गे बिथुर देव हार गए नुचि कै ॥
छतिया छुवावै कर[9] पीवै पिय के अधर
सोर सुनि[10] रसना रिसाई[11] ऊंचै[12] उचिकै ।
फेरि फेरि जैहौ कहि नीके नेक रैहौ[13] कहि
बैठि बैठि उठि उठि रंगु रच्यौ रुचि कै ॥१०॥

दोहा

तीन घरी निसि भोर की करत सरस रसवाद ।
उपजावत परिहास रस सोच सकोच बिबाद[14] ॥११॥

---

१. जिये – पुमु० । मन नीको – उ०
२. हरि – उ० पुमु० गं० । हारि – ना० कामु० प्र० । हार – सा०
३. पी लुप्त उ०
४. चारि घरी चौथे पहर भई जो पिय पै जीति – भामु०
५. सों – पुमु० । सौं – उ०
६. सुरत – क्यों० उ०
७. बिदाये – भामु० । मिलाय – सा० । लगावै – उ०
८. अम्बर – भामु० सा० पुमु० । अंचर – का० काम्र० ना०, गं० उ०
९. छुवाइ कै री – भामु०
१०. रोस करि – उ०
११. रिसाइ – पुमु०
१२. उठै – सा०, सुखप्र० पुमु० । उठि – उ० । ऊँचे – भा० । ऊँचै – काम्र० कामु० नाम्र० नाई०
१३. तें करै हो – भामु० । नींचैं चैंनें करै हो – उ०
१४. विषाद – उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त

दंपति केलि करी बिपरीत सु आपनी आपनी[1] बानि बिभूसै ।[2]
रंग भरी अति भोरियै भाउती भाउते कौ रसवादनि दूसै ।।
देव जू[3] दूलहै नीके हंसे अरु पी के हंसै करि[4] मोरि मसूसै ।
और की बार बसाइ[5] कछू न खिस्याइ खरीयै[6] रिसाइ कै रूसै ।।१२।।

दोहा

रहै रैनि जब द्वै घरी जित तित होत[7] प्रभात ।
बचन चातुरी करति[8] तिय सुनि[9] पिय जिय पछितात ।।१३।।

कवित्त

कै बहको कुकुरा वह कूरु कै बाकी तिया कहुं[10] काहू हनी है ।
बोलि उठो अंधरा अधरातक सौति कहै ताके[11] खेत धनी है ।।
चाकरु चोरु कि पाहरु स्वानु कि सेही सिवा[12] किंधौ फेरु फनी है ।
सोइयै श्री घनस्याम घरीकु न[13] नैन उघारियै रैनि घनी है ।।१४।।

दोहा

अरुन उदै तरुनी तरुन होत करुन रस लीन ।
कछुक[14] क्रोध कछु ईरषा कछुक बिरह[15] आधीन[16] ।।१५।।

---

१. आपनी लुप्त – उ०
२. बिदूसै—भामु० । बिहूसै—उ०
३. सु—पुमु०
४. सँसे अंग—भामु०
५. सिवाइ—भामु०
६. खिवाइ खरीये—पुमु० । पिसाइ परी पै—उ०
७. निरखि—भामु० पुमु० । होत—का०
८. करत—क्यों० पुमु०
९. लखि—भामु० पुमु० उ० । सुनि—का०
१० कहू—क्यों०
११. के हेत कै—भामु० पुमु० । सौतिक हेत—काअ० सा० । सौति तकै है—सा० । सौति कै हेत कि—उ०
१२. सुवां – उ०
१३. न लुप्त उ०
१४. कछु—पुमु०
१५. कछू अधिक—पुमु०
१६ अरुन उदै तरुनी तरुन, बिरह रूप रस लीन ।
ज्यौं ज्यौं होत मलीन निस त्यौं त्यौं होत मलीन ।। उ०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कवित्त

वा चकई[1] को भयो चितचीतो[2] चितौत चहूँ दिसि चाइ सौं नांची।
ह्वै गई छीन छपाकर[3] की छवि जामिनि जोन्ह जनौ जम जाची॥
बोलत बैरी बिहंगम देव सु सौतिन[4] के घर संपति साची।
लोहू पियो जु बियोगिनु को सु लियो मुखु[5] लालु पिसाचिनि प्राची॥१६॥

दोहा

आठ पहर चौंसठि घरी बरनि कही कवि देव।
पठत सुनत अनुभौत जे महाभाग के तेव[6]॥१७॥
जं जै श्री राधा रमन जै जै जगदाधार।
श्री ब्रजचंद अनंद निधि जै जै नंद कुमार[7]॥१८॥

(इति श्री कवि देवदत्त विरचिते अष्ठ जामे सकल रात्रि-रहस्य बरनने अप्टमो जामः समाप्तः।)

संवत १७१७ मिती पौष सुदि ७ शुक्रे कौ पोथी बनी। लि० पाँड़े इंद्रमनि नै संवत १८४०। कवित्त ६३ दोह ६७।

लिखा रहै बरसै सै चार जो न मिटावै कोइ।
लिखन हारा पापु रा सु घुलि घुलि माटी होइ॥

---

१. वाचक दूझो—उ०
२. चाह्यो—भामु० र०
३. कलाधर—भामु०
४. बैरिन—सुखप्र०
५. अहै सामुहै—भामु०। कियौ मुष—उ०
६. कहत सुनत अनभवत जै, बडै भाग के तेव—उ०
जानत जे अनुभवत जे बड़े भाग के तेव—पुमु०
७. अठारहवाँ दोहा क्यों० और का० प्रतियों में है, किन्तु अन्य प्रतियों में नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्पादन-विधि

मैंने पोथी को बार-बार पढ़ा, कई बार विचार किया। किस रूप में इसका प्रकाशन किया जाए, स्थिर नहीं कर पाता था। ज्यों-का-त्यों प्रकाशित करना उपयोगी नहीं था। वर्तनी की विचित्रता के कारण कुछ कठिनाइयाँ मेरे सामने थीं। मैंने निश्चय किया कि शब्दों की वर्तनी को एकरूपता दी जाए।

१. पोथी में **ऐ** और **य** के स्थान पर प्रायः अै और अ का प्रयोग था—

प्रथमयाम—छतिआ—४, अषिआं - ६, छतिआ – ८, बसिऔ—१२

तृतीययाम— बतिआ, छतिआ—१६

चतुर्थयाम— छतिआ—६, बिछिआ—१०, कैऔ—१६

पंचमयाम— अंषिआं, छतिआ—१६

षष्ठयाम— अंगिआ – ४, महिआं—८ (इसकी अन्य तीन तुकों में नहिया, बहियां और छतियां हैं।), औ—८

अष्टयाम— बतिआ २, छतिआ—१०

मैंने इन शब्दों को छतिया, अँखियाँ, बसियौ, बतिया, बिछिया, कैयौ, अंगिया, महियां और यौं कर दिया।

क्या देवकवि इसी प्रकार की वर्तनी अपनाये हुए थे ?

भारत-जीवन-प्रेस से प्रकाशित 'अष्टयाम' में भी कहीं-कहीं यह वर्तनी मिल गयी है—अैसी—४-१६। सा० प्रति में अैचति—८-६ प्रयोग है।

और तो और डॉ० लक्ष्मीधर मालवीय के प्रकाशित ग्रन्थ देव ग्रन्थावली (१) में भी यह वर्तनी विद्यमान है--

मौन धरे रंगभौन में भामतो भोर ही आवत भौंहन अैंठी

(सुमिल-विनोद—६·४१, पृष्ठ २९९)

सबसे बाद में प्राप्त उदयपुर की हस्तलिखित पोथी में भी **अैसे, अैन, अैंचि, अैंचत, अैंपन** जैसे प्रयोग हैं।

२ दूसरी कठिनाई स्त्री-वाचक शब्द को लेकर थी। पोथी में इसका प्रयोग निम्न प्रकार से हुआ—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तिय—१—१०, ५—४, ५—४, ५—१४, ६—१, ६—३, ६—८, ६—९, ७—३, ७—१६, ८—७

तिया—५—८, ५—९

तियौ—६—१२

तीय— ५—३

त्रय— १—१७, ७—१६

त्रया— ३—१६, ८—१४

त्रिय १—१४, ३—१०, ५—१, ८—१३

त्रिया—६—२

मैंने त्र और त्रि का ति कर दिया है। मालवीय जी की ग्रन्थावली में तिय और त्रिय दोनों रूप हैं।

३. तीसरी कठिनाई थी, यथास्थान बिन्दी के प्रयोग न करने की।

(क) ढ़ और ड़ को सर्वत्र ढ और ड लिखा गया, मैंने इन्हें सर्वत्र सबिन्दु कर दिया।

(ख) सबसे अधिक कठिनाई अनुस्वारों के प्रयोग की थी।
मालवीय जी के ग्रन्थ में भी ईंगुर शब्द की तीन वर्तनी हैं—

ईगुर	रसविलास,	७—४३
इंगुर	,,	८—१८
ईंगुर	,,	८—७६

(i) पोथी में ते (से, द्वारा) के ते और तें दोनों रूप उपलब्ध थे, मैंने इन्हें तें किया। सर्वनाम ते को ऐसा ही रहने दिया।

(ii) पोथी में अधिकरण कारक की विभक्ति के भी दो रूप थे—मैं और मैं। मैंने इन्हें सर्वत्र मैं कर दिया।

(iii) इसी प्रकार त्यौ—त्यौं, ज्यौ—ज्यौं, सौंहै—सौहै, भौंहे—भौहै, अरसौहै—अरसौहें आदि की विविधरूपता समाप्त कर त्यौं, ज्यौं, सोहै, भौंहैं, अरसौहें किया गया।
ए—ऐं, औ—औं की विविधरूपता देव के अन्य प्रकाशित ग्रन्थों में भी है।

इस पोथी के प्रतिलिपिकार ने यथास्थान अनुस्वार का प्रयोग कम किया है तो उ० प्रति के प्रतिलिपिकार ने आवश्यकता से अधिक अनुस्वारों का प्रयोग किया है।

४. पोथी में ख के लिए सर्वत्र ष का प्रयोग मिलता है, ऐसा ही उ० प्रति में भी है। मालवीय जी ने अपनी ग्रन्थावली में ष ही रहने दिया है। मैंने उन सभी ष को ख में परिणत कर दिया है, जिनमें मूलतः ख ही है, जैसे कि देषि, आंषिन, षए आदि, किन्तु कठिनाई संस्कृत के उन तत्सम-तद्भव शब्दों के लेकर थी, जिनमें मूलतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ष ही हैं, जैसे कि, पियूष, पिऊष, भूषन, हरषत आदि । यहाँ मैंने ष ही रहने दिया है। इसे आवश्यकतानुसार ख भी पढ़ा जा सकता है, विशेषतः खान्त तुकों के साथ । जैसे कि द्वितीययाम के छठें छन्द की तुकें—रूख, पियूष, भूख, मयूष ।

कुछ दोष

प्रत्येक लिपिकार से कुछ भूलें हो जाना स्वाभाविक है । पाठलोप, पाठवृद्धि और पाठविकृति विषयक कुछ दोष यों ही पकड़ में आ गये, मैंने किसी पोथी की सहायता लेने के पूर्व इन दोषों का निराकरण कर दिया ।

पाठ-लोप

१. **नाचैं सुकपोत सुपोत पढ़ि पढ़ि उठै**—३-८ । इसमें एक वर्ण कम था । सुकपोत के साथ यमक के लिए देव ने सुक-पोत का प्रयोग किया होगा । अतः सुपोत के स्थान पर सुक-पोत कर दिया गया ।

२. **द्यौ**—४-२ में स छूट गया था, द्यौस किया गया ।

३. **नीके भए भूषन भ्रमर आसपास** (४-१२) में भी दो वर्ण कम थे, साथ ही वाक्य अथवा अभिप्राय पूरा नहीं होता था । 'भ्रमर भ्रमैं' करने से पंक्ति ठीक हो गयी ।

४. छन्द ५-४ में तिय त्यौं की सार्थक पुनरावृद्धि थी, लिपिकार ने यह पुनरावृत्ति भ्रम-वश नहीं की थी ।

पाठ-वृद्धि

१. **आपुस मैं रस मैं रहसैं बिहसैं बन राधिका माधौजू कुंजबिहारी**—३-१० इस सवैये में 'माधौजू' बलात् आ बैठे हैं, कुंजबिहारी तो हैं ही ।

२. भ्रमवश पुनरावृत्ति

७-४ में सुरस के साथ रस
७-१० में भरि भरि दो बार
८-८ में हसत हसत दो बार

पाठ-विकृति

१. कुछ दोष लिपिकार के जिला इटावा-वासी होने के कारण हैं । लिपिकार और प्रस्तुत लेखक दोनों ही जिला इटावा के क्योंटरा ग्राम निवासी हैं । हमारी बोली में 'थी' के लिए हती बोला जाता है । लिपिकार २-२ छन्द में आई हुती के स्थान पर आई हती लिख गया ।

हमारी बोली में उतावली को उलाइत कहा जाता है, लिपिकार ने देव के मूल शब्द उताहिल (४-४) को उलाहित कर दिया था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४-१४ में धुजा को धजा लिखा गया है। इटावा के लोकगीतों में देवीमाता को धजा नारियल अथवा धजा-पताका चढ़ायी जाती है—'कैसें चढाएँ मैया धजा नारियल।'

२. प्राचीन नागरी लिपि में न और र की समानता थी। लिपिकार ३-१२ में निरन्तर के स्थान पर निरन्तन और ३-५ में चित्रधर के स्थान पर चित्रधन लिख गया।

क्यों० प्रति का स्वीकृत पाठ

१.१

भयभारनि-बार-निबार

क्यों० प्रति का यह पाठ विवादास्पद है। वस्तुतः प्रति में पाठ था—भय-भारनिबाननिबार। प्रतिलिपिकार इसी प्रति के अन्य दो स्थलों पर र के स्थान पर न कर गया है, अतः मैंने मूल का अनुमान करते हुए न का र कर दिया। देवकवि यमक के शौकीन थे, अतः निबार-निबार का प्रयोग सार्थक है। अतः मेरी दृष्टि से देव का अभीष्ट पाठ उपर्युक्त ठीक है।

अर्थात् भय के भार-समूह (भारनि) को बार-बार (बार) निवारण करने वाले अथवा भार-समूह के प्रहार (बार) का निवारण करने वाले। कामु० का भी यही पाठ है, सन्धि का अन्तर है—

भयभार निवार निवार

भारनि-बार-निबार की संगति न समझने वालों ने 'निवारनहार' जैसा पाठ करने की चेष्टा की है। कई प्रतियों में भय के स्थान पर भव है। केवल ना० नाइ० कामु० प्रतियों में भय है। भारनि-बार-निबार पाठ अधिकांश प्रतियों में है।

भुवभारनिवारनिवार—उ०
भवभारनवारणवार—उक०
भवभार निवार निवार—भामु०
भवभार नवारन हार—काअ०
भुव भारन हारै—सा०
भव भार निवारन हार—पुमु०
भुवभाव—गं० मं०
भयभार—ना० नाइ० कामु०

१-१

सुदेव मनोहर रूप अपार

क्यों० का० काअ० सा० म० गं० प्रतियों में सुदेव है। इस छन्द में कवि ने अपना नाम दिया है। पता नहीं उ० पुमु० और भामु० में **मुनीस** पाठ क्यों ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१-८

गुलाब लै लै बहु **भावनि** सौं छिरकै छतिया

क्यों० नाअ० नाआ० नाई में भावनि है, उ० पुमु० और भामु० में **भाँतिन**। गुलाब को बहुभाँति से कैसे छिड़का गया ?

२-४

अंबर के धरि अंबर पूजी बरंबर **देबि** दिगंबर सूली

कुलवधू ने दांपत्य जीवन के आदर्श देवी और शंकर दोनों की उपासना की होगी। इस छन्द से सम्बन्धित दोहे में संकेत भी है—'गौरिपूजि गुनगौरि वह···।' क्यों० ना० नाआ० सा० म० में देवि है। उ० पुमु० और भामु० का **देव** स्वीकृत नहीं हुआ।

२-४

दान समै मनिमानिक फूलनि **कंचन** चारुलता मनौ फूली

क्यों० उ० काअ० नाइ० का कंचन पाठ अधिक सार्थक है। नायिका रूपी कंचन-लता मणि-माणिक्य के फूलों से युक्त हुई। **चंपक** (भामु० पुमु० सा०) लता में मणि-माणिक्य के फूल कैसे ?

२-१०

दौरि आई दासी कलाधर की कला सी कमला
सी बिमला सी नवला सी **नव** सरीर

इसमें छन्द-दोष है। यति १६, १६ पर न होकर १७, १४ पर है। क्यों० का० कामु० नाआ० नाइ० सा० हि० भामु० प्रतियों में **नव सरीर** ही है, अतः इसे कवि-कृत दोष समझकर ऐसा ही रहने दिया गया। वैसे ३२ वर्णों की संख्या पूरी करने के लिए काअ० प्रति का 'नवल' अथवा नाआ० पुमु० प्रतियों का 'नौतन' शब्द स्वीकार किया जा सकता है। उ० में संख्या पूरी करने के लिए 'नव जे' किया गया।

३-२

सीतल कै लीप्यो **भिती छिती** छाती दहरै

भामु० पुमु० का 'भीति छिति' पाठ भी ठीक था, किन्तु क्यों० प्रति के तीन बार ती के अनुप्रास के कारण यही पाठ स्वीकृत।

५-६

इतौत चितौत सखीनु **कन्हाई**

क्यों० उ० सा० हि० प्रतियों में कन्हाई पाठ है, पता नहीं डा० पुष्पा जी ने इसे **कन्याई** क्यों कर दिया। अष्टयाम के छन्द ५-८ में पति को 'गोपाल' और ६-१४ में 'कन्हाई' कहा गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५-६

कौलगि **बाधै** हिए मह **ल्याई**

क्यों० का यही पाठ सही लगता है। कब तक बाधा को हृदय में धारण किये रहे। नायिका सखियों की उपस्थिति में लज्जा का परित्याग नहीं कर पा रही है, ऊपर की पंक्ति के अनुसार नायक सखियों की ओर देखकर उनके चले जाने की कामना कर रहा है।

पुष्पा जी का निम्न पाठ अस्पष्ट है—

कौ लगि बाँधे हिये मह ह्याई

अन्य प्रतियों में भी बाधै और ल्याई के लिए निरर्थक शब्दों का प्रयोग है।

६-२

हौस बुझाइ करी सुख केलि

हवस बुझाकर सुख-केलि की। भामु० सा० पुमु० में क्रमशः हौस, होस और हौंस गँवा कर केलि करायी गयी। उ० में भी ऐसा ही पाठ है। पुष्पा जी के सुखसागर-तरंग में हौस बुझाई पाठ है। क्यों० का उपर्युक्त पाठ ही मान्य हुआ है।

६-२

द्रग लाज भरे **सुझपारे**

पुमु० में **झपकारे** पाठ भी ठीक है, किन्तु इसका अर्थ होगा नींद से बन्द होते (नेत्र)। झपारे का अर्थ है लज्जा से बन्द होते (नेत्र), अतः क्यों० का सुझपारे पाठ प्रसंगानुकूल सार्थक है। सा० उ० का **कजरारे** भी स्वीकृत नहीं।

६-५

इस दोहे में **निसा** और **प्रेम** के स्थान पर पुमु० में क्रमशः **रैनि** और **प्रीति** हैं, जबकि का० काअ० सा० आदि प्रतियों में क्यों० वाला ही पाठ है। उ० में अवश्य रैनि है।

६.९

सात घरी निसि पहर पर

क्यों० उ० तथा लगभग सभी अन्य प्रतियों में यही पाठ है, केवल गं० एवं का० प्रति में संख्या का उल्लेख है। अधिकांश प्रतियों के छन्द १३ में भी संख्या का उल्लेख नहीं है। पुमु० में संख्या का उल्लेख कर दिया गया है। लगता है स्वयं कवि ने संख्या नहीं दी है, अतः मैंने क्यों० का पाठ दोनों स्थलों पर यथावत् रखा।

६-१२

अँसुवा भरि नैन **जियौ** भरिकै

जियौ के स्थान पर पुमु० का **लियो** ग्राह्य नहीं, क्योंकि नयन भरने के लिए दो क्रियाएँ हो जाती हैं। अन्य अनेक प्रतियों में भी जियो है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६-१४

या जी की बहाऊ बानि देव **कहा** पाई **री**

पुमु० का **कहाँ** ग्राह्य नहीं। कहा का अर्थ 'क्या' है। यह मुहाविरेदार प्रयोग है।

७-४

स्वेदजल झलकत **ललकत मुलकत**

पुलकत बिपुल **बिपल** द्रगगति है

पुमु० का पाठ—

स्वेदजल झलकत **पलपल ललकत**

पुलकत बिपुल **बिपुल** द्रगगति है

उ० का पाठ पुमु० से मिलता है, किन्तु इसमें भी क्यों० के समान बिपुल के पश्चात् बिपल (पलकहीन) है, यही होना चाहिए।

७-१२

झपकि झपकि **झकि झकि** उठि बैठत हैं

झूमि झूमि झुकि झुकि परत परसपर

पुमु० में ऊपर की पंक्ति में **झुकि-झुकि** क्यों किया गया ? नीचे की पंक्ति में तो झुकि-झुकि है ही। झकना का अर्थ बकना है।

८-२

वा सुख सौं सनि सोइ गई जब

क्यों० के इस पाठ के स्थान पर पुमु० का पाठ है—सोइ गई सनि वा सुख सौं जब। कुछ अन्य प्रतियों में भी ऐसा ही पाठ है। शब्दों के क्रम को छोड़कर और कोई अन्तर नहीं था, इसलिए मैंने क्यों० का पाठ ज्यों का त्यों रखा।

८-१०

अंचरि उछरि छरि

उ० का० काअ० ना० गं० में भी अंचर है। अंचरि का प्रयोग सानुप्रासिक है, यही ग्राह्य। भामु० सा० पुमु० का अम्बर ग्राह्य नहीं हुआ।

अन्य प्रतियों का स्वीकृत पाठ

३-७

क्यों० का **पैठि भौन** विकृत पाठ भामु० पुमु० के अनुसार **पच्छि भौन** किया गया।

४-४

लंक में **लचनि** परै **कचन** के भार के

क्यों० में 'चलनि' और 'कंचन' तो विकृत थे ही, इसमें दो वर्णों की कमी भी थी। सा० में भी कंचन शब्द था, किन्तु चलनि के स्थान पर 'लचनि' ही था। लचनि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ के साथ कचन का भार स्वीकार करना अधिक सार्थक था। उ० भामु० पुमु० के आधार पर उपर्युक्त पाठ स्वीकृत हुआ। हि० के अनुसार 'कुचन' भी स्वीकार किया जा सकता था, किन्तु कचन (केशों) के भार से नायिका की सुन्दरता और सुकुमारता की वृद्धि होती है। ग्वाल कवि (१८५१ सं०) देव के बहुत बाद हुए थे, उन्होंने भी लिखा है—

लंक जात लचकि उचकि कचभारन तें—११२

६-४

डीठि बचाइ **लचाइ** कै लोचन भौंहैं नचाइ

क्यों० और हि० का **नचाइ** पाठ इसलिए स्वीकृत नहीं हुआ कि आगे भौंहैं भी नचायी गयी हैं। उ० के अनुसार नचाइ के स्थान पर लचाइ अधिक सार्थक है।

६-११

छ घरी निसि दूजै पहर **जानि** मानिनी बाल

क्यो० में जानि के स्थान पर **जामिनि** था, किन्तु प्रथम चरण में निसि शब्द होने से यह निरर्थक था। का० सा० प्रतियो में भी यही पाठ था। पुमु० के अनुसार जानि स्वीकृत पाठ।

७-१

प्रीति करत **मनभाइ**

मनभाइ के स्थान पर क्यो० में **सुखु पाइ** पाठ था, दोहा की ऊपरी पंक्ति में भी यही पाठ था। क्यों० और का० के लिपिकारों से भ्रमवश भूल हुई। उ० भामु० सा० और पुमु० के अनुसार उपर्युक्त पाठ किया गया।

७-६

अंकन भरत **तऊ** हौसन **मरत** देव

क्यों० के तऊ के स्थान पर अन्य प्रतियों का **दोऊ** मान्य नहीं हुआ। किन्तु क्यों० प्रति में दो बार भरत सही नहीं लगा। उ० पुमु० में मरत, उक० में मरन है। 'हौंसन मरना' इटावा के आस-पास मुहावरे के रूप में प्रयुक्त होता है। पंक्ति का अर्थ हुआ—अंक में भरते हैं तथापि हवस से मरे जा रहे हैं, अर्थात् तृप्ति नहीं मिलती, हवस नहीं बुझती।

७-१४

कवित्त के दूसरे और **चौथे** चरण में **भोइ गए** और **मोइ गए** शब्दों की उलटफेर कई प्रतियों में थी। क्यों० में दोनों स्थानों पर 'भोइ गए' था। दूसरा 'मोइ गए' कर दिया गया, भाषा की सानुप्रासिक स्थिति की भी यही माँग थी।

८-८

आपु पूछि प्यारी कौ **जताइ कै जिताइ** जात

क्यों० और का० में था—जिताइ कै जताइ जात। यह पाठ संगत नहीं था। उ० पुमु० के अनुसार 'जताइ कै जिताइ' स्वीकृत हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छन्द-अनुक्रमणिका

कवित्त (सवैया आदि)				याम-छन्द
अंबर अतर चोवा	...	...	...	४—८
अज्यौं लगि होतु	...	...	...	१ - ६
आँखिन मैं पुतरी ह्वै	...	...	...	३—१६
आई हुती अन्हवावन	...	...	...	२—२
आतुर उताल अति	...	...	...	८—८
आपुस मैं रस मैं	...	...	...	३—१०
उर सौं लगाई बधू	...	...	...	८—४
ओट ददै पहरी अंगिया	...	...	...	६—४
कहत कहानी हियं	...	...	...	७ – ६
कुंजगली ह्वै अली	...	...	...	२—१४
कै वहको कुकुरा	...	...	...	८—१४
गुन रूप अनूप है	...	...	...	६—८
गूजरी बजावै रव	...	...	...	५ – १६
चंदन की बर चौकी	...	...	...	२—४
चढ्यो नभ चंदु	...	...	...	५—१०
चित्र विचित्र बिलोकन	...	...	...	३—६
चोवा सौ चुपरि	...	...	...	४ – ६
जाको मुखु देखत	...	...	...	६—१४
जोबन के मद उनमद	...	...	...	७—१२
तोरि तनी अपने कर	...	...	...	५—१४
दंपति केलि करी बिपरीत	...	...	...	८—१२
दासी सखी कमला सी	...	...	...	५—२
दीन्हीं बिदा मुसक्याइ सखीन	...	...	...	५ —८
दोऊ अंक भरे परजंक	...	...	...	६ — ६
दोऊ अनुराग भरे आए	...	...	...	२ — १२
दौरि आई दासी कलाघर की	...	...	..	२ — १०
निपट उताहिल सौं	...	...	...	४—४
नैननि की जोरी सी	...	...	...	३— १२
पंकज से पाइन	...	...	...	४—१०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पगी पिय प्रेम जगी	...	...	...	१—८
परिहासु कियो हरि	...	...	...	६—१०
परे परजंक पर	...	...	...	८ – ६
पाग दये हंसि प्यारी को	...	...	...	५—४
पैंज करि पौढ़े	...	...	...	७—८
प्यारे तिहारे के मोहिबे	...	...	...	३—१४
प्रान पियारे तिहारे	...	...	...	८—२
प्रेम के प्रसंग संग	...	...	...	७ – ४
फूल की सी माल	...	...	...	६ – १६
बांहन बिधाए बांह	...	...	...	८—१०
बितौत बनै नहिं रंग	...	...	...	५—६
बैठी बहू गुरुलोगन	...	...	...	४ – २
भारी रस भीजै	...	...	...	७—१४
भोजनु कै भामिनि	...	...	...	२—८
मांग गुही मोतिन	...	...	...	४ – १६
मोसों छबीली छिपाउ	...	...	...	१—१८
रंगराति उठी अंगरात	...	...	...	१ – ४
राजकुल रूपमद जोबन	...	...	...	७—१०
रूसने बिसरि गए	...	...	...	७—२
लखि सासुहि हांसु छिपाइ	...	...	...	१—१४
लीनी उसास भलीनी भई	...	...	...	५—१२
वा चकई को	...	...	...	८ – १६
संग सोवत ही पिय के	...	...	...	७—१६
सब अंग अगौंछि	...	...	...	१—१०
सरस सुजाति अति	...	...	...	४—१४
सराहैं सुरासुर सिद्ध	...	...	...	१—१
सीतल महल महा	...	...	...	३—२
सुख सेज के मंदिर तें	...	...	...	१—१२
सुचि सौं सुचिर	...	...	...	२ – ६
सूरजमुखी सो चंद्रमुखी	...	...	...	२—१२
सेज तें उतरि बैठे	...	...	...	३ – ४
सोनो से सुरंग सब	...	...	...	४—१२
सोहै सलौनी सुहाग भरी	...	...	...	१—१६
हसत हंसत चले	...	...	...	३—८
हंसि पीछे तें देव	...	...	...	६—१२
हौस बुझाइ करी	...	...	...	६—२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्दार्थ-कोश

अंबर	१. वस्त्र, एक विशेष प्रकार की साड़ी २. अम्बार—ढेर	...	२—४
अरंग	सुगंध	...	४—१६
अलिक	ललाट	...	४—१४
आँकौ	अंक	...	७—१०
ईबी सीबी	रतिकाल में स्त्री का सीत्कार	...	५—१६
उखिली	फैली (मिश्रबन्धु)	...	८—४
उद्दित	उद्यत, तैयार	...	४—१३
उतंग	उत्तुंग, ऊँचा	...	४—१६
उताल	उतावला	...	८—८
उताहिल	उतावली	...	४—४
उनमद	उन्मत्त	...	७—१२
ओक	घर	...	१—१
ओघ	राशि, अविच्छिन्नता	...	१—८
अँगौछना	गीले गमछे से शरीर पोंछना	...	१—१०
कचोर	कटोरा	...	२—१०
कारिका	कलरव, श्लोकबद्ध व्याख्या	...	३—८
कौंल	कमल	...	६—१६
कोद	दिशा	...	८—३
कौलगि	कब तक	...	५—६
खया	भुजमूल	...	५—१२
खोज	चिह्न	...	१—८
खोना	नष्ट करना, दूर करना	...	१—८
गहर	विलम्ब	...	२—५
गुनगौरि	गौरी जैसी सौभाग्यवती	...	२—३
छहरना	बिखरना	...	१—४
छुरना	दूर हटना	...	८—६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छरहरा	हल्का, चुस्त	...	८—६
जलजंत्र	फव्वारा	...	३—२
जीवनमूरि	संजीवनी बूटी, अतिप्रिय वस्तु	...	३—१६
झकना	बकना	...	७—१२
झपारे	लज्जा से बन्द होते	...	६—२
डहकना	वंचना करना	...	५—१६
तनी	बंद, बंधन	...	५—१४
तिमिरारी	अँधेरा	...	२—१२
तिलौंछना	चिकना करना	...	४—६
दिन	सदा	...	१—१
दौन	दोनों	...	४—१६
नई	झुकी	...	१—६
निकाई	सुन्दरता	...	४—१२
पछिपाली	पक्षी-भवन	...	३—८
पटीर	चन्दन	...	३—२
परतिछ	प्रत्यक्ष	...	१—१८
परतीकु	प्रत्यक्ष	...	८—२
फुंदो	फुंदना, झब्बा	...	५—१२
फुफुंदी	नीबी, नाड़ा	...	५—१२
फेरु	सियार	...	८—१४
बकुचना	संकुचित होना	...	३—६
बरंबर	श्रेष्ठ वस्त्र	...	२—४
बिथुरना	बिखरना	...	१—४
		...	८—६
वादु	संभाषण	...	३—१०
बिधुर	व्याकुल	...	८—४
भोना	रँगना, अनुरक्त होना	...	७—१४
मजेज	गर्व	...	२—८
मसूसना	दबाना	...	८—१२
महताब	चन्द्रमा	...	४—६
मुचना	मुक्त होना, छूटना	...	८—१०
मुलकना	मुस्कराना (झाँकना ?)	...	७—४
मोना	चिकना करना, भिगोना	...	७—१४
रंगामेज	चित्रित, नक्काशीदार	...	२—८
रसना	करधनी	...	८—१०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहसना	आनन्दित होना	...	३—१०
लगलगी	लग्गी, पतला लम्बा बाँस, जिसके सिरे पर	...	५—१६
	हँसिया बँधा रहता है, इससे पत्ते या फल	...	
	काटकर गिराये जाते हैं।	...	
लहकना	आगे बढ़ना, झोंका खाना	...	५—१६
लुनाई	सुन्दरता, सलोनापन	...	१—१
विराव	शब्द, कलरव	...	८—४
संचल	कम्पित, हिलता हुआ	...	५—१०
सतराना	क्रोध करना, अकड़ना	...	३—६
ससाम	कोमलता से (डॉ० पुष्पाजी)	..	८—५
	रात झुकते ही, शाम होते ही	...	
	(डॉ० आनन्दप्रकाश)	...	
सहलु	नरम, आसान	...	२—१६
सिवा	श्रगाली	...	८—१४
सेही	साही, खरगोश के आकार का जानवर,	...	
	जिसकी पीठ पर काँटे होते हैं	...	८—१४
हमेल	सोने या चाँदी के सिक्कों को कुंडे से	...	
	जोड़कर बनायी गयी माला	...	६—६
हरे	धीरे	...	७—४
हौस	हवस, इच्छा	...	६—२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहायक ग्रन्थ-सूची

कृष्ण बिहारी मिश्र	देव और बिहारी
ग्वाल कवि	ग्वाल रत्नावली—सं० कवि किंकर, इलाहाबाद, १९४५
जगदीश सिंह गहलौत	ऐतिहासिक तिथिपत्रक, जोधपुर, १९६२
दीनदयाल गुप्त	अष्ट छाप ··(द्वि० सं०), प्रयाग, १९७०
देव कवि	अष्टयाम—सं० रामचन्द्र वर्मा, काशी, १८९२
	सुखसागर तरंग —सं० बालदत्त मिश्र, लखनऊ, १८९८
	शिवाष्टक सं० जगन्नाथ दास रत्नाकर, कुसमरा, १९५५
धर्म नारायण ओझा	सूर-साहित्य में पुष्टिमर्गीय सेवाभावना, प्रयाग, १९७३
नगेन्द्र	देव और उनकी कविता (तृ० सं०), दिल्ली, १९६०
	हिन्दी साहित्य का इतिहास, दिल्ली, १९७३
पुष्पा रानी जायसवाल	देव-ग्रन्थावली, प्रयाग, १९७४
भगवती प्रसाद सिंह	रामभक्ति में रसिक-सम्प्रदाय, बलरामपुर, २०१४ वि०
भोलानाथ तिवारी	महाकवि देव, प्रयाग, १९५२
मिश्रबन्धु	देवसुधा (तृ० सं०), लखनऊ, २००५ वि०
रमानाथ त्रिपाठी	कृत्तिवासी बँगला-रामायण और मानस, अलीगढ़, १९६३
राजकुमारी मित्तल	कृष्णभक्ति-काव्य में रीतिकाव्य-परम्परा, आगरा, १९६७
रूप नारायण	ब्रजभाषा के कृष्ण-काव्य में माधुर्य भक्ति, दिल्ली, १९६२
लक्ष्मीधर मालवीय	देव-ग्रन्थावली (१) दिल्ली, १९६७
वासुदेव शरण अग्रवाल	हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन, पटना, १९५३
विजयेन्द्र स्नातक	राधावल्लभ सिद्धान्त और साहित्य (द्वि० सं), दिल्ली, १९६८
शरण बिहारी गोस्वामी	कृष्णभक्ति-काव्य में सखीभाव, वाराणसी, १९६६
हरदयालुसिंह	देवदर्शन, प्रयाग, १९४१

पत्र-पत्रिकाएँ

ग्राम-सुधार—देव-अंक, ११-१२-५३

कादम्बिनी—अप्रेल, १९६९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

जसराज सवाई का पन्द्रह-तिथि-विरह-वर्णन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जसराज सवाई का पन्द्रह-तिथि-विरह-वर्णन

हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज करते समय मुझे कई ग्रन्थों के साथ एक चौपतिया के आकार की छोटा पुस्तिका प्राप्त हुई। इसमें कबीर, लाल एवं जसराज सवाई आदि कवियों की कविताओं का संग्रह है। एक स्थान पर लिखा है -"सं० १७३२ वर्ष आसाढ़ सुदि २ दिने। पं० सभाचंद लि० ॥" इससे पता चलता है कि लिपिकार पं० सभाचंद हैं। ये सम्भवतः कवि भी रहे होंगे, क्योंकि कुछ छन्दों के नीचे ही इस प्रकार की पुष्पिका दी है।

जसराज सवाई के नाम से ही जान पड़ता है कि ये राजस्थान की ओर के कवि होंगे। इनके सवैयों की भाषा से भी ऐसा ही ज्ञात होता है - 'मिले दोउ कामिण कंत हसंत सरीर तिया अपणौ सिणगार्‌यो।' कवि शाक्त जान पड़ते हैं, उन्होने भवानी की पूजा का पूरे एक सवैये में वर्णन किया गया है।

हिन्दी में बारहमासा एवं षट्ऋतु वर्णन की प्रथा है। सम्भवतः पन्द्रह-तिथि-विरह-वर्णन केवल जसराज ने ही किया है। उन्होंने प्रारम्भ में ही लिखा है—'अथ पनरह तिथि सवैया लिख्यते।' ये पन्द्रह तिथियाँ किसी एक ही मास की नहीं हैं। तिथियों का क्रमशः वर्णन अवश्य है। सावन की तीज, सम्भवतः भादों की चौथ, क्वाँर की दशमी, कार्तिक की देवोत्थान एकादशी एवं वसन्त की नवमी आदि का वर्णन है। सभी तिथियाँ शुक्ल पक्ष की हैं, एवं प्रत्येक तिथि के लिए एक सवैया लिखा गया है।

पन्द्रह सवैयों में काव्य-परम्परानुमोदित संक्षिप्त विरह-वर्णन है। विशेषता यही है कि संक्षेप में विरह से सम्बन्धित अनेक बातों का समावेश है। एक विरहिणी के उद्‌गारों का सहज अकृत्रिम वर्णन है।

इस पुस्तिका की लिपि कहीं-कहीं नागरी लिपि से भिन्नता रखती है। कई बार पढ़ने पर इसके सवैये स्पष्ट हुए। ज, झ, टु, भ, स, कु, रु, च्छ, आदि विचित्र ढंग से लिखे गये हैं। सवैया में फिट करने के लिए कुछ शब्दों को भी तोडा-मरोड़ा गया है— क रक्क लगन्न (कर्कलग्न), कथन्न (कथन), सयन्न (शयन), वयन्न (बैन-वचन) सुपन्न (स्वप्न) रयन्न (रैन-रजनी), परब्ब (पर्व)।

वर्णन का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है - पड़वा के दिन पत्नी ने मना किया कि कंत विदेश न जाओ, तुम्हारे बिना यह बेल सूख जाएगी। किन्तु वे नहीं माने, चले गये। दूज के दिन हिन्दू और मुसलमान बाजे-गाजे और धूमधाम से पर्व मनाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रियतम ने तो बिसार दिया है किन्तु स्त्री का मन तो उसमें ही रमता है। तीज के दिन सखियाँ काजल और तिलक का श्रृंगार करती हैं, किन्तु विरहिणी के लिए सावन की तीज व्यर्थ आती है। चौथ के दिन काम अधिक सताने लगा। प्रियतम के आने के लिए वह व्रत करती है। विरहिणी ने ताम्बूल और चन्दन को त्याग दिया। कन्त पंचमी के बीत जाने पर भी नहीं आये। छठ के दिन वह पथिक के द्वारा सन्देश भेजती है। सप्तमी के स्वप्न में वह प्रियतम के साथ केलि करती है, किन्तु जागते ही दुःख के कारण अचेत हो जाती है। अष्टमी के दिन वह प्रेमोन्मत्त हो जाती है। सोलह श्रृंगार कर हास-विलास करती है, किन्तु हृदय में धुवाँ घुट रहा है। वसन्त की नवमी के दिन व्याकुल हो मन्दिर के बाहर खड़ी होकर सखियों को खेलती देखकर वह दुःख पाती है। दशमी के दिन तो सीता का वियोग भी मिट गया था। दशहरे के दिन नाथ का विदेश रहना बहुत दुःखदायी हो गया। एकदशी के दिन लोग सुख-सम्पत्ति के लिए व्रत करते हैं, परदेश से लोग घर की ओर चल पड़ते हैं। अब विरहिणी को विरह-दुःख असह्य हो गया है। वह कहती है, मैं मर जाऊँगी, अब यह दुःख मेरी बला सहे। द्वादशी के दिन ब्राह्मण से प्रिय के आने के विषय में पूछा, तो उन्होंने कर्क लग्न में मिलन बताया। तेरस आगयी, छह मास तक दिन और नक्षत्र गिनती रही। उजियाली चौदस के दिन नर-नारी मन्दिर में जाकर वाद्य और सुगन्धित वस्तुओं से भवानी की पूजा करते हैं विरहिणी क्यों किसी का ध्यान करे, उसके हृदय में तो उसके श्याम बसते हैं। पूर्णिमा के दिन दोनों का मिलन हुआ। कामिनी ने अपने शरीर का श्रृंगार किया, हृदय की आशाएँ फलित हुईं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अथ पनरह तिथि सवैया लिख्यते।

आज चले मन्मोहन कंत विदेस हठी मोहि छोरि इकेली।
कह्यौ समझाइ चलौ परिवा मत सूकैगी स्यांम बिना तनु बेली ॥
तौही न मान्यौ कथन्न सयन्न वयन्नउ थापि चल्यौ री सहेली।
कैहै जसराज रटै निसिवासर प्रेम परव्व सनेह गहेली ॥१॥
दूज कै द्यौस महोछव कीजत देषि निसापति संझ समै।
घन घोर नीसांण घुरै पुर मंगल हींदू तुरक्क पछिम्म नमै ॥
परदेस संदेस न पाऊं जसा पिय देषि दिसा दृग पांनग भै।
मत मोहि विसार तजौ विण दूषण चित्त तुम्हारै समीपि रमै ॥२॥
केई सझै सिणगार अपार अणाइ दरप्पण वेस बणाई।
काजर नैंन अनोपम सारत भाल तिलक्क की सोभ सवाई ॥
केई सहेली कै साथ विनोद सौं गावत गीत रु नाचत काई।
मोहि जसा विण प्रीतम सावण मास की तीज अक्यारथ आई ॥३॥
चौथि वितीत भई तौही प्रीतम कागद हा तिणि भेज न दीनौ।
मोहि संतावत मैंन अहो निसि बांन लगावत काम उगीनौ ॥
नैन झरै जल पाउस काल ज्यु घांउ कलेजै कीयौ जीउ लीनौ।
चौथि करूं जसराज महाव्रत जौ घरि आवत नाह नगीनौ ॥४॥
जा दिन थैं आली प्रांन धनी मोहि छोरि इकेली विदेस सिधायौ।
ता दिन थैं न तंबोल भष्यौ न सरीर विषै घसि चंदन लायौ ॥
रा मति षेल विनोद तजे सब नाहन भूषण वेस वणायौ।
कौन जसा उपचार करूँ अब पांचिम आई पै कंत न आयौ ॥५॥
वीर बटाऊ संदेस कहूँ तोहि पाइ परूं फुनि लेत सिधावौ।
लालची छाइ रह्यौ परदेस तहाँ जाइ कागद ले दिषलावौ ॥
भो मुष तै मुष तेरै संदेस जसा जाइ प्रीतम कुं समझावौ।
छठि कौ दीह अनीठ भयौ मोहि आइ मिलौ अब क्यौं ललचावौ ॥६॥
जांण्यौ मैं नाथ पधारे गृहंगण बांटत हूँ पुर मांहि बधाई।
प्रेम विज्योग मिट्यौ तन अंतर प्रीतम सौं मिलि केल मचाई ॥
सातम सेज इकेली मैं सूती सुपन्न रयन्न कै आइ जगाई।
जागत ही जसराज निरास अचेत भई मानुं वासिग खाई ॥७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आठिम आज भई जसराज विराजत कामनि क्रीड़ा कवाई
हास विलास करै निसवासर सोल सिंगार वणावै लुगाई ।।
मोहि न मानत चित्त कछू हिरदा विचि धूम अगन्नि धुषाई ।
नाह कठिन्न भयौ नही आवत कौण सौं कूक पुकारौं री माई ।।८।।
मैं तेरै कारण मंदिर बार षरी नित की पिउ काग उडाऊँ ।
नौम वसंत सषी मिलि खेलत हूँ न धनी बिनु षेलन जाऊँ ।।
झूरत ही दृग जोति घटी पल लोहू घट्यौ सुष चैन न पाऊँ ।
नैंनन जौ जसराज परै पिउ देहि त सीष भलैं समझाऊं ।।९।।
आज बडौ दिन है दसरा हौ रुघप्पति जैत दसुं दिन पाई ।
सीत विजोग मिट्यो दसमी दिन रावण कूं हरि लीक लगाई ।।
वड़े बड़े राज महोछव गोठि करै दसमी जसराज सवाई ।
हूँ किणसुं गुण गोठ करूँ आली नांह विदेस भयो सुषदाई ।।१०।।
दिन आयौ इग्यारसि कौ हरि पौढ़त वासग सेज पताल महैं ।
व्रत लोक करै सुष-सपति कारण वैण गुणी जसराज कहैं ।।
परदेसन तैं घर कुं उमहै दिन रैण वटाऊ सु पंथ वहैं ।
निसनेही न आवत तौही सषी मरिहूँ मेरी दुष्य बलाइ सहै ।।११।।
वारसि बांभण बूझ्यौ सहेली री मोहि कह्यौ कब लालन आवै ।
जोतिष राउ बड़े जसराज सु तौ पिउ आगम साच बतावै ।।
करक्क लगन्न कह्यौ चिर सुंदर रांम करै तो सही सुष पावै ।
च्यार दिवस्स मैं नाह मिलै विरहानल की झल आइ बुझावै ।।१२।।
आज सषी षट मास बरावरि तेरसि वासर नीठ गमायौ ।
सनम्मुष राति अवाज भई दृग देषत ही जिय मैं झर आयौ ।।
नक्षत्र गिणंत निसा निष्वौरी निसाकर आतम ताप लगायौ ।
जसा पतियां लिषि दीनी सनेही कुं आकौ कवै मोहि कागद नायौ ।।१३।।
उजुआरी चउद्दिसि देवी कौ वासर देउ लसंत मिले हरसै ।
सजि ताल कंसाल पषाउज लेन दुई मिलि नाचत रंभ तिसै ।।
घनसार अपार सुकेसर चंदन पूजन कुं नर नारि घसै ।
जसराज भवांनी कुं ध्यावत नागर मो मन मैं मेरौ स्यांम बसै ।।१४।।
पूनिम दीय बधाई सषीरी तेरै घरि प्रीतम तोहि पधार्‌यौ ।
पुसी भई ऊठि सनम्मुष जाइ वदन्न विलोकित दुक्ख विसार्‌यौ ।।
मिले दोऊ कामिण कंत हसंत सरीर तिया अपणौ सिणगार्‌यौ ।
फली उर की सब आस विलास भलैं जसराज सनेह वधार्‌यौ ।।१५।।

(इति पनरहतिथि सवैया समाप्ता)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारे प्रकाशन

1. हिन्दी-काव्य शास्त्र —प्रकृति और संदर्भ 20/-
डा० रामदास नादार

2. हिन्दी-काव्य में युद्ध-वर्णन वैशिष्ट्य 35/-
डा० मदन लाल वर्मा

3. देवकवि : अष्टयाम 15/-
डा० रमानाथ त्रिपाठी

4. नाटककार मोहन राकेश 30/-
डा० सुन्दर लाल कथूरिया

5. धर्मवीर भारती 30/-
डा० लक्ष्मण दत्त गौतम

6. राहें अनजानी (लघु उपन्यास) डा० रजनी कान्त लहरी
पेपर बैक 3/-
सजिल्द 4/-

7. व्यूह से जूझता अभिमन्यु 8/-
डा. सुन्दर लाल कथूरिया

कुमार प्रकाशन
20/30, **मोती नगर, नई दिल्ली**-15
दूरभाष : 582289